● वर्ष-3
● अंक-62
रायपुर, शुक्रवार
20 अक्टूबर 2023
● पृष्ठ-8
● मूल्य-3 रु.
samacharpacheesa@gmail.com

।। संगच्छध्वम् संवदध्वम् ।।

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-6›› नवरात्रि को कहा जाता है नौ शक्तियों

कांग्रेस आई तो फिर आपके पैसे लूटेगी:अमित शाह

` बस्तर जिले के तीनों भाजपा प्रत्याशियों किरणसिंह देव, विनायक गोहिल और मनीराम कश्यप ने किया नामांकन दाखिल

■ छत्तीसगढ़ में 3 बार दिवाली मनेगी एक दिवाली के दिन दूसरी 3 दिसंबर को कमल खिलने पर तीसरी जनवरी में श्री राम मंदिर बनने पर:अमित शाह

रायपुर/जगदलपुर। भारतीय जनता पार्टी की जगदलपुर में आयोजित परिवर्तन महासंकल्प सभा में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने गर्जना करते हुए फिर कहा है कि छत्तीसगढ़ के बाई-बहन एक बार फिर से भारतीय जनता पार्टी की सरकार लाएंगे, तो आदिवासी भाइयों के हजारों करोड़ों रुपए घोटाले में जो खा गए हैं, उनको उल्टा लटकाकर सीधा करने का काम भाजपा की सरकार करेगी। कांग्रेस आयेगी तो फिर आपका पैसा लूट लेगी।

केंद्रीय गृह मंत्री श्री शाह ने बस्तर जिले के तीनों भाजपा प्रत्याशियों किरणसिंह देव, विनायक गोहिल और मनीराम कश्यप के नामांकन दाखिले के मौके पर जगदलपुर पहुँचने पर एक विराट जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि आदिवासी समाज के लोगो से मिलकर बहुत खुशी होती है। बस्तर की भूमि पर आकर सबसे पहले माँ दंतेश्वरी, किरोला मंदिर, बत्तीसा मंदिर, छत्तीसा मंदिर

को शीश झुकाकर नमन करने के बाद श्री शाह ने शहीद प्रवीरचंद्र भंजदेव, शहीद वीर नारायण सिंह और शहीद गुंडाधुर का स्मरण किया। श्री शाह ने कहा कि इस बार देशभर में एक दीवाली मनेगी लेकिन छत्तीसगढ़ में तीन दिवाली मनानी है, पहली दीवाली तो दीवाली के त्यौहार की मनेगी, दूसरी दिवाली 3 दिसंबर को जब कमल फूल की सरकार बनेगी तब मनेगी और तीसरी दीवाली जब रामजन्मभूमि पर अयोध्या में जनवरी में प्रभु श्री राम का मंदिर लोकार्पित होगा तब भी श्री राम के ननिहाल में दीवाली मनेगी। श्री शाह ने कहा कि आज मैं यहां हमारे तीनों प्रत्याशियों को जिताने का निवेदन करने आपके बीच आया हूं। जगदलपुर के प्रत्याशी किरणसिंह देव, चित्रकोट के प्रत्याशी विनायक गोयल और बस्तर के प्रत्याशी मनीराम कश्यप का परिचय कराते हुए श्री शाह ने कहा कि मनीराम कश्यप कबड्डी के अच्छे खिलाड़ी हैं और इस बार चुनाव की कबड्डी में मुख्यमंत्री भूपेश बघेल को चित करने का काम करने वाले हैं।किरण देव जी वर्षो से जनसेवा में सक्रिय है जब जब आपको जरूरत पड़ी है विनायक गोयल आपके पास पहुंच जाते है।

मोदी जी के आदिवासी समाज के लिए हुए कार्य ऐतिहासिक

केंद्रीय गृह मंत्री श्री शाह ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली केंद्र की सरकार पूरे देशभर के आदिवासियों के सम्मान के लिए, जल-जंगल-जमीन की रक्षा के साथ-साथ ही आदिवासी भाइयों की सुरक्षा और समावेशी विकास के लिए भी ढेर सारे कार्य कर रही है। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल बताएँ कि जब केंद्र में कांग्रेस-यूपीए की सरकार थी, तब जनजातीय मंत्रालय को कितना रुपया देते थे? आदिवासियों के कल्याण के लिए कुल मिलाकर 29 हजार करोड़ रुपए कांग्रेस ने दिया। देशभर के करोड़ों आदिवासियों के लिए सिर्फ 29 हजार करोड़ रुपए होता था और जब आदिवासियों ने श्री मोदी को प्रधानमंत्री बनाया तो यह राशि बढ़कर 1,32,000 करोड़ रुपया आदिवासियों के लिए खर्च किया। इससे देशभर के आदिवासी क्षेत्रों में बिजला, मोबाइल टॉवर, सुगम सड़कें, एकलव्य विद्यालय पहुंचे। कांग्रेस के जमाने में 90 एकलव्य विद्यालय थे जो आज बढ़कर 740 तक हो गए हैं। अब इन विद्यालयों के लिए 40 हजार शिक्षकों की भर्ती भी श्री मोदी की सरकार कर रही है।

श्री शाह ने कहा कि आदिवासी क्षेत्र की धरती को खनन करके जो खनिज निकाला जाता है, उस खनन का पैसा जो पहले आदिवासियों के विकास-विस्तार और भले के लिए खर्च नहीं होता था, प्रधानमंत्री श्री मोदी ने अब डिस्ट्रिक्ट मिनरल फण्ड की रचना कर नौ साल में 75 हजार करोड़ रूपया जिलों के विकास के लिए दिया। इससे पेयजल, प्राथमिक शिक्षा, गौशाला का विकास, घर-घर में बिजली पहुँचाना आदि कार्य एक साथ मोदी सरकार ने शुरू किए हैं। सन 2047 तक भारत में एक भी आदिवासी भाई-बहन सिकलसेल एनीमिया से पीड़ित न हो, इस प्रकार का मिशन अनेक विदेशी डॉक्टर के साथ मिलकर प्रधानमंत्री श्री मोदी ने शुरू किया है। आदिवासी तहसीलों में विकास का काम प्रधानमंत्री श्री मोदी शुरू किया है।

नक्सलवाद भाजपा ही खत्म कर सकती है

केंद्रीय गृह मंत्री श्री शाह ने कहा कि बस्तर क्षेत्र किसी जमाने में घनघोर नक्सली क्षेत्र माना जाता था। आज भी छत्तीसगढ़ में नक्सलियों के कारण कुछ समस्याएँ हैं। छत्तीसगढ़ में एक बार फिर से कमल फूल की सरकार बना दो, पूरे छत्तीसगढ़ से नक्सलवाद का सफाया कर देंगे, इस प्रदेश को नक्सलवाद से पूरी तरह मुक्त कर देंगे। श्री शाह ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार के कार्यकाल में नागरिकों की मृत्यु में 68त्न की कमी आई, मौतों में 70 प्रतिशत की कमी आई और जो जिले व पुलिस थाने प्रभावित थे, उसमें 62 प्रतिशत की कमी आई है। बस्तर क्षेत्र ऐसा है कि यहाँ नक्सली हिंसा होती है तो यहाँ का आदिवासी ही मरता है। पुलिस मरती है तो भी हमारा आदिवासी भाई मरता है, और नागरिक मरता हौ तो भी आदिवासी भाई ही मरता है। हमें उनको बचाना है। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने 9 साल में रोड बनाई. रास्ते सुगम बनाए, गरीबों के घर में गैस के सिलेंडर दिए, शौचालय बनाए, एकलव्य स्कूल बनाए, इसके साथ-साथ 5 किलो चावल मुफ्त देने का काम भी किया।

भारतीय जनता पार्टी ने स्टार प्रचारकों की सूची

रायपुर। प्रथम चरण में होने वाले विधानसभा चुनाव के लिए नामांकन दाखिले का शनिवार को अंतिम दिन है और ठीक एक दिन पहले भारतीय जनता पार्टी ने 40 स्टार प्रचारकों की सूची आज जारी कर दी। जिसमें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृहमंत्री अमित शाह, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, असम के सीएम हेमंत बिस्वा सरमा के साथ आठ केंद्रीय मंत्री के अलावा छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री डा. रमन सिंह, सांसद सरोज पांडेय के साथ ही गुरु बालदास साहेब का नाम भी स्टार प्रचारकों की सूची में शामिल किया गया। जारी सूची के अनुसार 1 नरेन्द्र मोदी जी 2 श्री जगत प्रकाश नड्डा जी 3 श्री अमित शाह जी 4 श्री राजनाथ सिंह जी 5 श्री नितिन गडकरी जी 6 श्री मनसुख मांडविया जी 7 श्री योगी आदित्यनाथ जी 8 श्री हिमंता बिस्वा शर्मा जी 9 श्री प्रमोद सावंत जी 10 श्री ओमप्रकाश माथुर जी 11 श्री अर्जुन मुंडा जी 12 श्री अनुराग सिंह ठाकुर जी 13 श्रीमती स्मृति ईरानी जी 14 श्री धर्मेन्द्र प्रधान जी 15 श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया जी 16 श्री रामेश्वर तेली जी 17 श्री देवेन्द्र फडणवीस जी 18 श्री बाबूलाल मरांडी जी 19 श्री रविशंकर प्रसाद जी 20 श्री रघुवर दास जी 21 श्री अरुण साव जी 22 श्री बिरेन्द्र सिंह जी 23 डॉ. रमन सिंह जी 24 सुश्री सरोज पांडे जी 25 श्री अजय जम्वाल जी 26 श्री नितिन नवीन जी 27 श्री पवन साय जी 28 श्री नारायण चंदेल जी 29 श्री संतोष पांडेय जी 30 श्री गुहाराम अजगल्ले जी 31 गुरु बालदास साहेब जी 32 श्री मनोज तिवारी जी 33 श्री नित्यानंद राय जी 35 श्री रविकिशन जी 34 श्री बृजमोहन अवाल जी 36 श्री केशव प्रसाद मौर्य जी 37 श्री रामसेवक पैकरा जी 38 सुश्री लता उसेंडी 39. श्री चंदूलाल साहू जी 40 श्री सतपाल महाराज जी

जीत का चौका, विराट कोहली ने जड़ा शतक

नईदिल्ली। भारत ने वर्ल्ड कप 2023 में जीत का चौका लगाया। पुणे में खेले गए 17वें मुकाबले में भारत ने बांग्लादेश को 7 विकेट से रौंदा। पहले बैटिंग करते हुए बांग्लादेश ने 8 विकेट के नुकसान पर 256 रन बनाए थे। भारत ने 41.3 ओवर में तीन विकेट खोकर 261 रन बनाकर लक्ष्य को हासिल कर लिया। विराट कोहली ने शानदार नाबाद 103 रन की पारी खेली।

शाकिब अल हसन की गैरमौजूदगी में नजमुल हसन शांतो ने टॉस जीतकर पहले बैटिंग करने का फैसला किया। बांग्लादेश ने बेहतरीन शुरुआत की। तंजीद हसन और लिटन दास ने पहले विकेट के लिए 93 रन की साझेदारी। तंजीद 51 रन बनाकर कुलदीप यादव का शिकार बने। वहीं,

लिटन दास ने 66 रन की पारी खेली। दो विकेट गिरने के बाद भारतीय गेंदबाजों ने वापसी।

गेंदबाजों ने कराई भारत की वापसी

मुश्फिकुर रहीम और महमदुल्लाह ने मिलकर एक बार फिर बांग्लादेश की पारी को संभाला। मुश्फिकुर रहीम ने 38 रन महमदुल्लाह ने 46 रन बनाए। भारत की तरफ से बुमराह, सिराज और जडेजा को दो-दो विकेट मिले। वहीं, कुलदीप और शार्दुल ठाकुर को 1-1 विकेट मिला।

रोहित-गिल ने दी तूफानी शुरुआत

लक्ष्य का पीछा करते हुए रोहित और शुभमन गिल ने ताबड़तोड़ बल्लेबाजी की। दोनों पहले विकेट के लिए 88 रन जोड़े। रोहित 48 रन बनाकर आउट हुए। वहीं, शुभमन गिल ने वर्ल्ड कप में अपना पहला अर्धशतक पूरा किया। वह 53 रन बनाकर आउट हुए। श्रेयस अय्यर बड़ी पारी खेल पाने में असफल रहे। वह 19 रन बनाकर आउट हुए। हालांकि कोहली ने संभलकर खेलते हुए एक छोर संभाले रखा।

अंत में दिखा द कोहली शो

विराट कोहली ने केएल राहुल के साथ नाबाद अर्धशतकीय साझेदारी की। विराट ने विनिंग सिक्स लगाकर टीम को जीत दिलाई। इसके अलावा करियर का 48वां शतक भी पूरा किया। कोहली ने नाबाद 103 रन की पारी के दौरान 6 चौके और 4 छक्के जड़े। वहीं, राहुल ने नाबाद 34 रन बनाए।

प्रो कबड्डी लीग का 10वां सीजन 2 दिसंबर से 21 फरवरी 2024 तक खेला जाएगा। वहीं पीकेएल अपने पुराने फॉर्मेट में लौट आया है। इसका मतलब है कि, प्रो कबड्डी लीग का आयोजन देश के 12 शहरों में होगा। इस ब्लॉकबस्टर लीग के शुरुआती मैच में गुजरात जायंट्स का सामना तेलुगु टाइटंस से होगा।

प्रमुख समाचार

ज्ञानवापी मस्जिद के सर्वे की याचिका पर फैसला सुरक्षित

नईदिल्ली। वाराणसी की एक अदालत ने ज्ञानवापी मस्जिद के वजूखाने को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) के सर्वेक्षण में शामिल करने की याचिका पर अपना आदेश बृहस्पतिवार को 21 अक्टूबर के लिए सुरक्षित रख लिया। जिला

शासकीय अधिवक्ता राजेश मिश्रा ने कहा, जिला न्यायाधीश ए के विश्वेश की अदालत में एक याचिका दायर की गई थी जिसमें ज्ञानवापी परिसर में सील किए गए वजूखाने के सर्वेक्षण की मांग की गई थी। याचिका पर आज सुनवाई पूरी करते हुए अदालत ने अपना आदेश 21 अक्टूबर तक के लिए सुरक्षित रख लिया है। यह याचिका वाराणसी के ज्ञानवापी-श्रृंगार गौरी मामले की याचिकाकर्ताओं में से एक राखी सिंह ने दायर की थी। हिंदू पक्ष के वकील मदन मोहन यादव ने बताया कि इस मामले की सुनवाई के दौरान कहा गया कि फिलहाल वजूखाने को छोड़कर पूरे ज्ञानवापी परिसर का सर्वे किया जा रहा है लेकिन वजूखाने के सर्वेक्षण के बिना ज्ञानवापी परिसर का सच सामने नहीं आ सकता। मस्जिद पक्ष ने इस पर अपनी आपत्ति करते हुए अदालत के समक्ष कहा कि वजूखाने का इलाका उच्चतम न्यायालय के आदेश पर सील किया गया है।

राहुल गांधी का 'अहंकार' अमेठी में हार का कारण बना : स्मृति

नईदिल्ली। केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी ने बृहस्पतिवार को कांग्रेस नेता राहुल गांधी पर कटाक्ष करते हुए कहा कि वह अपनी पार्टी के ''राजनीतिक गुरु'' हैं और इसी ''अहंकार'' के कारण अमेठी में उनकी हार हुई। केंद्रीय महिला एवं बाल विकास

मंत्री ईरानी ने कहा कि आज राष्ट्रीय मोर्चे पर विपक्षी दलों का जो गठबंधन है, उसने 2019 में अमेठी में चुनाव लड़ा था और तब भी उन्होंने राहुल गांधी को हराया था। मंत्री यहां मलयालम मनोरमा समूह द्वारा आयोजित 'मनोरमा न्यूज कॉन्क्लेव, 2023' के दौरान दर्शकों के एक सवाल का जवाब दे रही थीं। ईरानी से पूछा गया था कि भाजपा केरल में एक भी सीट क्यों नहीं जीत पाई और क्या वह इसकी भरपाई करने के लिए गांधी के खिलाफ मुकाबला करेंगी। ईरानी ने कहा, ''राहुल गांधी कांग्रेस पार्टी के राजनीतिक गुरु हैं और मैं भाजपा की राजनीतिक कार्यकर्ता हूं। राजनीतिक गुरु और कार्यकर्ता होने के बीच बहुत बड़ा राजनीतिक अंतर है।'' उन्होंने दावा किया, ''मुझे लगता है कि यह वही अहंकार है, जिसके चलते कांग्रेस पार्टी, यहां तक कि अमेठी लोकसभा क्षेत्र के पांच विधानसभा क्षेत्रों में से चार में जमानत भी नहीं बचा पाई।''

परिवारों को दिया जाएगा जमीन का हक : आदित्यनाथ

नईदिल्ली। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बृहस्पतिवार को कहा कि इस साल दिसंबर तक राज्य के 1.25 करोड़ परिवारों को पीएम स्वामित्व योजना के तहत पट्टे की जमीन का

मालिकाना हक दिया जाएगा। मुख्यमंत्री अलीगढ़ के नुमाइश मैदान में आयोजित अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। इस मौके पर उन्होंने 497 करोड़ रुपये की लागत से तैयार होने वाली 208 विकास परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास भी किया। उन्होंने कहा, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में देश ने पिछले साढ़े नौ वर्षों में परिवर्तन और विकास की एक उल्लेखनीय यात्रा शुरू की है। उन्होंने कहा, इस दौरान हमने एक नए भारत का उदय देखा है, जहां समाज के हर वर्ग को जाति, पंथ, धर्म, क्षेत्र या के बंधनों से मुक्त होकर सम्मान के साथ प्रगति करने का अवसर दिया गया है। मुख्यमंत्री ने कहा, प्रदेश में 75 लाख परिवारों को उनकी जमीन पर कब्जा दिया गया है। दिसंबर 2023 तक उत्तर प्रदेश के एक करोड़ 25 लाख परिवारों को पीएम स्वामित्व योजना के तहत पट्टे की जमीन का मालिकाना हक दिया जाएगा।

पाकिस्तानी कलाकारों पर प्रतिबंध लगाने वाली याचिका खारिज

नईदिल्ली। बंबई उच्च न्यायालय ने पाकिस्तान के कलाकारों के भारत में काम करने पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने के अनुरोध वाली याचिका बृहस्पतिवार को खारिज कर दी। उच्च न्यायालय ने कहा कि देशभक्त होने के लिए किसी व्यक्ति को विदेश से, विशेषकर पड़ोसी देश से, शत्रुतापूर्ण व्यवहार करने की आवश्यकता नहीं है। अदालत ने अपनी टिप्पणी में कहा कि एक व्यक्ति जो दिल से अच्छा है वह अपने देश में किसी भी ऐसी गतिविधि का स्वागत करेगा जो देश के भीतर और सीमा पार शांति और सद्भाव को बढ़ावा देती है। न्यायमूर्ति सुनील शुक्रे और न्यायमूर्ति फिरदोश पूनीवाला की खंडपीठ ने फैज अनवर कुरैशी द्वारा दायर याचिका को 17 अक्टूबर को खारिज कर दिया। फैज अनवर कुरैशी ने दावा किया है कि वह एक कलाकार हैं।याचिका में अदालत से केंद्र सरकार को यह निर्देश देने की मांग की गई थी कि वह भारतीय नागरिकों, कंपनियों, फर्मों और एसोसिएशनों पर किसी भी पाकिस्तानी कलाकार को काम पर रखने या उसकी पेशकश करने, उसकी किसी भी सेवा को लेने या किसी भी एसोसिएशन में प्रवेश कराने आदि पर पूर्ण प्रतिबंध लगाए। इनमें फिल्म कलाकार, गायक, संगीतकार, गीतकार और तकनीशियन शामिल हैं।

मराठा आरक्षण की मांग करने वाले एक कार्यकर्ता ने जान दी

नईदिल्ली। मुंबई के बांद्रा इलाके में एक 45 वर्षीय मराठा आरक्षण कार्यकर्ता ने बृहस्पतिवार तड़के कथित तौर पर अपनी जान दे दी और अपने सुसाइड नोट में समुदाय के लोगों से इस मुद्दे के लिए संघर्ष जारी रखने का आह्वान किया। एक पुलिस अधिकारी ने यह जानकारी दी। अपने सुसाइड नोट में, सुनील कावले ने समुदाय के लोगों से 24 अक्टूबर को मुंबई में इकट्ठा होने का आह्वान किया और कहा कि अब ''एकमात्र मिशन, पहले मराठा आरक्षण और उसके बाद चुनाव'' है। उन्होंने सुसाइड नोट में कहा, ''मराठा समुदाय को 24 अक्टूबर को आरक्षण मिलेगा। हमें इकट्ठा होना चाहिए और केवल मराठा आरक्षण पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।'' जालना जिले के अंबड़ तहसील के निवासी सुनील कावले का शव महानगर के पश्चिमी हिस्से में बांद्रा और बांद्रा कुर्ला परिसर के बीच एक फ्लाईओवर के खंभा संख्या-चार पर फंदे से लटका हुआ मिला। अधिकारी ने बताया कि कावले ने पहले फ्लाईओवर पर बिजली के खंभे से खुद को बांधकर फंदा लगाया और फिर नीचे छलांग लगा दी। एक परिजन ने 'पीटीआई-भाषा' को बताया कि कावले ने अपनी जीवन लीला समाप्त करने से कुछ समय पहले लगभग 12:45 बजे उन्हें फोन किया था।

यह लोकसभा का सेमीफाइनल नहीं,

छत्तीसगढ़ में विधानसभा में कांग्रेस और भाजपा के बीच मुख्य मुकाबला है

अंकित सिंह

छत्तीसगढ़ में विधानसभा के चुनाव दो चरण में है। कांग्रेस और भाजपा के बीच मुख्य मुकाबला है और दोनों दलों की ओर से लोगों को साधने के लिए रणनीति बनाई जा रही है। दिलचस्प बात यह भी है कि दोनों दल की ओर से अब तक घोषणा पत्र जारी नहीं किया गया है। कांग्रेस बीजेपी के घोषणा पत्र के इंतजार में है तो वहीं भाजपा कांग्रेस के इंतजार में। कांग्रेस 2018 के वादों को पूरा करती हुई बता रही है। तो वहीं भाजपा राज्य की भूपेश बघेल सरकार पर वादाखिलाफी का आरोप लगा रही है। भाजपा रमन सिंह के 15 वर्षों के कामकाज को भी बता रही है।

भाजपा के लिए अहम मुद्दा

वर्तमान में देखे तो तमाम ओपिनियन पोल में छत्तीसगढ़ में भाजपा थोड़ी कमजोर नजर आ रही है। हालांकि, चुनावी ताकत अपनी पूरी दिख रही है।

भाजपा को नरेंद्र मोदी और केंद्र सरकार द्वारा किए जा रहे काम पर भरोसा है। इसके अलावा भाजपा राज्य की भूपेश बघेल सरकार पर भ्रष्टाचार के जबरदस्त आरोप भी लग रही है। भाजपा की ओर से केंद्र की पीएम आवास, उज्ज्वला योजना, किसान मानधन जैसे योजनाओं को प्रमुखता से उठाया जा रहा है। भाजपा 2021 में कवर्धा में सांप्रदायिक हिंसा के साथ-साथ बस्तर में कथित धर्मांतरण के मुद्दे

उठा रही है। पार्टी नेताओं ने नारायणपुर और कोंडागांव में बढ़त का दावा किया है, जहां आदिवासी ईसाइयों को निशाना बनाए जाने की घटनाएं सामने आई हैं। भाजपा बघेल सरकार पर माओवादी मुद्दे के साथ-साथ बुनियादी ढांचे के विकास पर धीमी गति से चलने का आरोप लगा रही है। सुरक्षाकर्मियों की मौत को भी भाजपा ने मुद्दा बनाया है।

कांग्रेस का दाव

कांग्रेस ने जिन वादों को पूरा किया गया उसको बता रही है। साथ ही हिंदुत्व के एजेंडे को भी साधने की कोशिश में है। भूपेश बघेल किसाने और ग्रामीण क्षेत्रों को पूरी तरीके से आकर्षित करने में जुटे हुए हैं और सरकार के कामकाज को बता रहे हैं। कांग्रेस अपनी किसान योजनाओं, बेरोजगारी भत्ते और पुरानी पेंशन योजना के पुनरुद्धार और एमएसपी पर 20 क्विंटल चावल खरीदने जैसे वादों पर भरोसा कर रही है। बघेल को उम्मीद है कि उनका क्षेत्रीय और नरम-हिंदुत्व कार्ड भाजपा के राष्ट्रवाद के दांव पर भारी पड़ेगा। कांग्रेस नेता आदिवासियों के साथ-साथ ग्रामीणों के लिए अन्य लाभों की बात करते हैं, जैसे हाट बाजार बस क्लीनिक, धान की अधिक कीमत, पेसा अधिनियम का कार्यान्वयन, फर्जी माओवादी मामलों में गिरफ्तार आदिवासियों की रिहाई, और सरकार द्वारा संचालित अंग्रेजी स्कूल। कांग्रेस के लिए चिंता की बात यह भी है कि चुनावों से पहले छोटे दलों का प्रसार हो रहा है, जिससे भाजपा विरोधी वोट बंट सकते हैं।

चुनावी स्थिति

7 नवंबर को पहले चरण में जिन 20 सीटों पर मतदान होगा, उनमें से आठ दुर्ग संभाग में और 12 सीटें बस्तर में आती हैं। पूर्व सीएम रमन सिंह की राजनांदगांव सीट को छोड़कर बाकी सभी सीटों पर कांग्रेस का कब्जा है। 2013 में भी कांग्रेस ने इन 20 सीटों पर बीजेपी से बेहतर प्रदर्शन किया था और बीजेपी की 8 सीटों के मुकाबले 12 सीटें जीती थीं। दूसरे चरण में सरगुजा, बिलासपुर, दुर्ग और रायपुर संभाग में चुनाव होने हैं। 17 नवंबर को 70 सीटों पर वोटिंग होगी। 2018 में, कांग्रेस ने इन 70 सीटों में से 52 सीटें जीतीं, जिससे भाजपा 15 पर सिमट गई। यह 2013 से एक बदलाव था, जब भाजपा ने 41 सीटें और कांग्रेस ने 27 सीटें जीती थीं।चुनावी बिगुल बजने के बाद राजनेताओं के पास वादों का बौछार करने के अलावा कोई विकल्प नहीं होता। जनता भी नेताओं और राजनीतिक दलों के कामों को देखते हुए ही अपना फैसला लेती है। यही तो प्रजातंत्र है।

गले में नींबू-मिर्ची का हार पहनकर नामांकन दाखिल करने पहुंचा प्रत्याशी, कई बार लड़ चुका चुनाव

कबीरधाम। कवर्धा विधानसभा क्षेत्र में एक प्रत्याशी अजीबो-गरोबी तरीके से नामांकन जमा करने पहुंचा। प्रत्याशी अजय पाली (बाबा भाई) ने अपने गले में नींबू-मिर्च का हार पहनकर रखा था। अजय पाली ने बताया कि वह शिव भक्त हैं और शहर के सिटी कोतवाली के पास समोसे की दुकान लगाते हैं। विधानसभा चुनाव के दौरान किसी की नजर न लगे इस कारण उन्होंने अपने गले में नींबू-मिर्च का हार पहना है।

प्रत्याशी अजय पाली ने बताया कि वे अब तक कई बार चुनाव लड़ चुके हैं। जिसमें राजनांदगांव लोकसभा सीट से दो बार, कवर्धा विधानसभा से भी दो बार और कवर्धा नगर पालिका में अध्यक्ष से लेकर पार्षद तक का चुनाव लड़ चुके हैं। हालांकि, सभी चुनाव में उन्हें हार का सामना करना पड़ा है। इस बार फिर से कवर्धा विधानसभा से चुनाव लड़ने जा रहे हैं। कवर्धा विधानसभा से उसके सामने वर्तमान के विधायक व मंत्री मोहम्मद अकबर, भाजपा से विजय शर्मा जैसे अन्य प्रत्याशी हैं।

अजय पाली (बाबा भाई) कवर्धा के रहने वाले हैं। यह कवर्धा शहर में सबसे कम दाम में समोसा बेचते हैं। इसी काम से ही परिवार का भरण-पोषण होता है। अजय पाली ने बताया कि वह समोसा बेचने का काम बीते 15 साल से कर रहे हैं। पूरे कवर्धा में एक रुपये में समोसा बेचने का काम किया। वर्तमान में दो से पांच रुपये प्रति समोसा बेचते हैं। अजय पाली ने बताया कि विधायक बनने के बाद वह सभी परिवार को 50 किलो चावल, 10

किलो गेहूं समेत अन्य खाद्य सामग्री निशुल्क दिलाने का काम करेंगे। साथ ही सभी परिवार के एक व्यक्ति को सरकारी नौकरी भी दिलवाएंगा।

पंडरिया से विभिन्न प्रत्याशियों ने नामांकन जमा किया

कबीरधाम जिले के पंडरिया विधानसभा क्षेत्र क्रमांक 71 से इंडियन नेशनल कांग्रेस की तरफ से नीलकंठ चंद्रवंशी, भारतीय जनता पार्टी की तरफ से भावना बोहरा, भारतीय शक्ति चेतना पार्टी की तरफ से रमेश राजपूत ने गुरुवार को विधानसभा सदस्य के लिए नाम निर्देशन, पंडरिया विधानसभा क्षेत्र के रिटर्निंग आफिसर संदीप ठाकुर के समक्ष प्रस्तुत किया। इन सभी ने संविधान की शपथ भी ली। इस अवसर पर इन सभी के चार प्रस्थापक उपस्थित थे।

कांग्रेस ने जताया भरोसा, बेमेतरा से चुनाव लड़ेंगे आशीष छाबड़ा

बेमेतरा। छत्तीसगढ़ के बेमेतरा विधानसभा क्षेत्र के लिए कांग्रेस ने अपने प्रत्याशी घोषित कर दिए है। बीते बुधवार को कांग्रेस ने प्रत्याशियों की दूसरी लिस्ट जारी की थी। वर्तमान के कांग्रेस विधायक आशीष छाबड़ा फिर से इसी सीट से चुनाव लड़ेंगे। छात्र राजनीति से अपने करियर की शुरूआत करने वाले आशीष छाबड़ा पूर्व में बेमेतरा नगर पालिका के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। बीते 2018 के चुनाव ने उन्होंने भाजपा के विधायक रहे अवधेश चंदेल को 25 हजार 131 वोटों से हराया था। अभी तक बेमेतरा विधानसभा सीट के लिए भाजपा ने अपने उम्मीदवार की घोषणा नहीं की है। अब कांग्रेस की ओर से बेमेतरा जिला अंतर्गत साजा विधानसभा से वर्तमान के विधायक औक मंत्री रविन्द्र चौबे, नवागढ़ विधानसभा क्षेत्र के लिए वर्तमान विधायक गुरूदयाल सिंह बंजारे को हटाकर दुर्ग जिले के अहिवारा विधानसभा क्षेत्र के वर्तमान विधायक व मंत्री गुरु रुद्र कुमार को उम्मीदवार बनाया।

रामानुजगंज की हाईप्रोफाइल सीट का सियासी समीकरण

बलरामपुर। छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव 2023 की सरगर्मियां तेज हो गई है। कांग्रेस ने रामानुजगंज से मौजूदा विधायक बृहस्पति सिंह का टिकट काटा है और अंबिकापुर नगर निगम महापौर डॉ अजय तिर्की को अपना उम्मीदवार बनाया है। रामानुजगंज विधानसभा सीट पर अब कांग्रेस और बीजेपी के बीच सीधा मुकाबला देखा जा रहा है।

डॉ. अजय तिर्की ने टिकट मिलने पर टीएस सिंहदेव, मुख्यमंत्री, पार्टी अध्यक्ष और शीर्ष नेतृत्व को धन्यवाद दिया है। उनका कहना है कि पार्टी ने विश्वास किया है और उस भरोसे पर खता उतरने की वे पूरी कोशिश करेंगे।सीटिंग रूका टिकट कटने पर प्रतिक्रियाः डॉ। अजय तिर्की का कहना है कि पिछले दो बार से टिकट की मांग की थी। लगातार पार्टी के लिए काम किया। अब टिकट मिला है। पिछले 20-30 सालों से आम जनता ने प्यार और सम्मान दिया है। कांग्रेस प्रत्याशी ने दावा किया कि वह जनता की उम्मीदों को पूरा करने की पूरी कोशिश करेंगे।

डॉ अजय तिर्की साल 2014 से अंबिकापुर नगर निगम के महापौर हैं। वे लंबे समय से इस क्षेत्र में सक्रिय हैं। वह लगातार विधानसभा क्षेत्र के सभी ग्राम पंचायतों का दौरा करते रहे हैं। साल 2013 और साल 2018 के विधानसभा चुनाव में भी रामानुजगंज सीट से कांग्रेस पार्टी के तरफ से डॉ अजय तिर्की ने टिकट की दावेदारी पेश की थी। लेकिन पार्टी ने उन्हें टिकट नहीं दिया था। हालांकि अब कांग्रेस ने डॉ। अजय तिर्की पर भरोसा जताते हुए सीटिंग विधायक का टिकट काटा है और उन्हें टिकट दिया है।

कांग्रेस नेता सागर सिंह ने पार्टी से दिया इस्तीफा

मुंगेली। छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव को लेकर कांग्रेस पार्टी ने बुधवार की शाम की अपनी दूसरी सूची जारी की। कांग्रेस ने लोरमी विधानसभा से थानेश्वर साहू को मैदान में उतारा है। कांग्रेस ने अपनी सूची में कई नए चेहरों को भी जगह दी है, जिसकी वजह से कई पुराने चेहरे नाराज हैं। नए चेहरों को जगह मिलने से वर्षों से पार्टी के साथ और उम्मीदवार की दावेदारी कर रहे कार्यकर्ताओं ने इसको लेकर काफी देखने को मिल रही है। मुंगेली जिला कांग्रेस अध्यक्ष सागर सिंह बैस ने लोरमी विधानसभा से टिकट की दावेदारी की थी, लेकिन पार्टी ने थानेश्वर साहू को टिकट दिया। जानकारी मिली है कि इसके बाद जिला अध्यक्ष सागर सिंह ने पार्टी के प्रति नाराजगी जाहिर करते हुए पार्टी से इस्तीफा दे दिया। सूची आने के बाद से इस्तीफे वाला लेटर वायरल भी हो रहा है। वहीं, सागर सिंह के पार्टी से बगावत कर निर्दलीय चुनाव लड़ने की भी खबरें सामने आ रही हैं।

साजा विधानसभा से भाजपा प्रत्याशी ईश्वर साहू का कांग्रेस पर तंज

■ **कहा- शेर को पकड़ने बांधा जाता है बकरा**

बेमेतरा। प्रदेश की हाई प्रोफाइल सीट साजा से भाजपा ने बिरनपुर में हुए सांप्रदायिक हमले में मारे गए भुनेश्वर साहू के पिता ईश्वर साहू को अपना प्रत्याशी बनाया है। और जब से भाजपा ने ईश्वर साहू के नाम की घोषणा की है तब से यह सीट पूरे प्रदेश में चर्चा का केंद्र बना हुआ है कांग्रेस पार्टी यहां परंपरागत रूप से चौबे परिवार को टिकट देते आ रही है वर्तमान में यहां से प्रदेश के शिक्षा मंत्री रविन्द्र चौबे विधायक है।

साजा विधानसभा के ओड़िया में जनसंपर्क करने पहुंचे भाजपा प्रत्याशी ईश्वर साहू ने मीडिया से खास बातचीत की। उन्होंने कहा कि खुद को न्याय दिलाने, हिंदू धर्म को लेकर वे जनता के पास जा रहे हैं। जनता का उन्हें समर्थन भी मिल रहा है।

साजा के भाजपा प्रत्याशी ईश्वर साहू ने कहा कि छत्तीसगढ़ सरकार हिन्दू धर्म को दबाना चाहती है। सनातन धर्म को कुचलना चाह रही है। मेरे और मेरे परिवार को अब तक न्याय नहीं मिला है।

इसी न्याय के लिए हम जनता के पास जा रहे हैं।

ईश्वर साहू ने कहा कि साजा से कांग्रेस प्रत्याशी रविंद्र चौबे से कड़ी चुनौती को लेकर ईश्वर साहू ने कहा कि उनके साथ मैं नहीं लड़ रहा हूं। हमारे क्षेत्र की जनता उनके साथ चुनाव लड़ रही हूं। यहां की जनता उन्हें चुनाव में सबक सिखाएगी।

भाजपा प्रत्याशी ने कहा की, कहां राजा भोज कहां गंगू तेली की एक कहावत भी है, वही हालात साजा में है। उन्होंने कांग्रेस कार्यकर्ताओं पर तंज कसते हुए कहा कि कांग्रेसी बोलते हैं कि हम तो सोए-सोए चुनाव जीत रहे हैं, बैठे बैठे चुनाव जीत रहे हैं। उन्होंने कहा कि भाजपा पूरा देश चला रही हैं। भाजपा ने कुछ सोच समझकर ही उन्हें टिकट दिया होगा। भाजपा प्रत्याशी ईश्वर साहू ने कहा बकरा को बांध के शेर को फंसाया जाता है। शेर को पता हीं नहीं होता कि बकरा के पास जाने से उन्हें पकड़ लिया जाएगा।

साजा विधानसभा क्षेत्र में ओबीसी वर्ग के सबसे ज्यादा मतदाता है। जिसमें लोधी और साहू मतदाताओं की अधिकता है। अब तक ऐसा देखा गया है कि यह दोनों समाज कांग्रेस को सबसे ज्यादा मतदान करते आए हैं। इस बार बिरनपुर में हुए हिन्दू मुस्लिम के सांप्रदायिक हिंसा के बाद से हालातों में परिवर्तन देखने को मिल रहा है। जहां भाजपा ने सहानुभूति और ओबीसी कार्ड खेलते हुए ईश्वर साहू को टिकट दिया है। बिरनपुर हिंसा के बाद एक ओर जहां भाजपा के वरिष्ठ नेता हिंसा में मारे गए भुवनेश्वर साहू के घर पहुंचे वही कांग्रेस के स्थानीय नेता वहां नहीं गए जिसे लेकर मामला गर्म है। ईश्वर साहू ने जनसंपर्क अभियान शुरू कर दिया है। अब देखना होगा कि बिरनपुर की सुलगती आग विधानसभा चुनाव के दौरान कहां तक पहुंचती है।

राजिम सीट से अमितेश शुक्ला और बिंद्रानवागढ़ से जनक ध्रुव को टिकट

गरियाबंद। काफी इंतजार के बाद आखिरकार कांग्रेस की दूसरी सूची बुधवार को जारी कर दी गई। जिसमें गरियाबंद जिले की दोनों विधानसभा सीटों से प्रत्याशियों के नाम की घोषणा पार्टी ने कर दी है। जैसा की अनुमान था कि राजिम विधानसभा सीट से अमितेश शुक्ला को फिर से मौका मिला है।

कांग्रेस ने छठवीं बार प्रत्याशी बनाया है। जिसमें अमितेश शुक्ला को 2003 और 2013 में दो बार हार मिली थी। इसी तरह बिंद्रानवागढ़ सीट से जनक लाल ध्रुव को कांग्रेस प्रत्याशी बनाया गया है। यह उनका दूसरा चुनाव है।

इससे पहले 2013 में उन्हें हार का सामना करना पड़ा था। वैसे इस सीट से संजय नेम का नाम अंतिम समय तक चला रहा था। उनके समर्थकों में भी खासा उत्साह था। लेकिन आलाकमान जनक लाल ध्रुव का नाम तय किया। अब राजिम विधानसभा सीट से कांग्रेस के अमितेश शुक्ल का मुकाबला भाजपा प्रत्याशी रोहित साहू से होगा। वहीं बिंद्रानवागढ़ सीट से कांग्रेस के प्रत्याशी जनक लाल ध्रुव का मुकाबला भाजपा के गोवर्धन मांझी से होगा।

मरवाही का महासंग्राम, कांग्रेस को ध्रुव पर भरोसा

गौरेला पेंड्रा मरवाही। छत्तीसगढ़ में विधानसभा चुनाव को लेकर कांग्रेस ने अपनी प्रत्याशियों की दूसरी लिस्ट जारी की है। कांग्रेस ने मरवाही से डॉ केके ध्रुव पर फिर से विश्वास जताया है। 2020 में तत्कालीन मरवाही विधायक अजीत जोगी के निधन के बाद मरवाही उपचुनाव में कांग्रेस ने डॉ केके ध्रुव को प्रत्याशी बनाया था। कांग्रेस ने 2020 का मरवाही उपचुनाव जीत लिया था।

डॉक्टरी पेशे से राजनीति में आए डॉक्टर के के ध्रुव एक बार फिर मरवाही से कांग्रेस के प्रत्याशी बनाए गए हैं। मरवाही में हुए उपचुनाव में कांग्रेस ने डॉक्टर के के ध्रुव को अपना प्रत्याशी बनाया था, जिसके बाद उन्होंने भारी मतों से जीत दर्ज की थी। अब आम चुनाव में डॉक्टर के के ध्रुव एक बार फिर कांग्रेस प्रत्याशी बनाए गए हैं।कांग्रेस की सूची आने के बाद से कांग्रेस कार्यकर्ता उत्साहित हैं। कार्यकर्ताओं ने पटाखे जलाकर मिठाइयां बांटकर खुशी जताई। हालांकि टिकट वितरण से पहले कई वरिष्ठ कांग्रेसियों ने ध्रुव को टिकट देने पर कांग्रेस से इस्तीफा देने तक की बात कही थी। लेकिन कांग्रेस ने एक बार फिर डॉक्टर के के ध्रुव पर ही विश्वास जताया है।

विधायक का कहना है कि हम अपनी नीतियों और कांग्रेस सरकार द्वारा किए गए कामों को लेकर जनता के बीच जाएंगे। के के ध्रुव ने दावा किया कि जनता एक बार फिर भारी मतों से विजयी बनाएगी। हालांकि उपचुनाव में जनता कांग्रेस की ओर से कोई भी प्रत्याशी न होना और आम चुनाव में पार्टी की ओर से कोई प्रत्याशी आने पर पड़ने वाले प्रभाव की बात वे टाल गए।

छत्तीसगढ़ प्रमुख समाचार

दशहरा उत्सव का आयोजन कृषि उपज मंडी प्रांगण में होगा

बेमेतरा। विधानसभा सामान्य निर्वाचन 2023 को ध्यान में रखते हुए इस दशहरा उत्सव का आयोजन संक्षिप्त रूप से सुव्यवस्थित एवं शांतिपूर्ण के साथ मनाया जाएगा। उत्सव कृषि उपज मंडी प्रांगण में होगा। कार्यक्रम आगामी 24 अक्टूबर 2023 को शाम 6 बजे से 7 बजे (एक घंटा) का होगा। कलेक्टर श्री पी.एस.एल्मा ने विभिन्न विभागों दायित्व सौंपे है। इसकी तैयारी बेमेतरा नगर पालिका के द्वारा प्रारंभ कर दी गई है। नगरपालिका अधिकारी श्री भूपेन्द्र उपाध्याय ने बताया कि दशहरा पर्व के अवसर पर भव्य आतिशबाजी का कार्यक्रम आयोजित होगा। इस दौरान राम रावण संवाद तथा लीला का कार्यक्रम संक्षिप्त होगा। निर्वाचन आयोग की विधानसभा सामान्य निर्वाचन 2023 की घोषणा के साथ जिले में आदर्श आचार संहिता लागू है। 9 अक्टूबर से शुरू हुई आदर्श आचार लागू है । कलेक्टर एवं दंडाधिकारी श्री पी एस. एल्मा ने आदर्श आचार संहिता के आदेशों में रात 10.00 बजे से सुबह 6.00 बजे तक लाउडस्पीकर के उपयोग पर प्रतिबंध लगा दिया है।

बालोद में जमीन की खुदाई के दौरान मिले 12 शिवलिंग

बालोद। बालोद जिले के गुंडरदेही नगर में खुदाई के दौरान 12 नग शिवलिंग निकलने से क्षेत्र में यह आस्था का प्रमुख केंद्र बन गया। गुंडरदेही नगर के संजय चौक में सतनाम भवन का निर्माण किया जाना है, जिसके लिए गड्ढे की खुदाई की जा रही थी। इसी दौरान 12 नग शिवलिंग निकले, जिसमें से एक शिवलिंग खंडित हो गया है। 11 नग शिवलिंग को स्थापित किया गया है। शिवलिंग स्थापित होने के बाद वहां पूजा-अर्चना और लोगों का आना शुरू हो गया है। स्थानीय पंडितों को बुलाकर इसे स्थापित किया जा रहा है। सैंकड़ों की संख्या में भक्त अब दर्शन करने के लिए पहुंच रहे हैं। खुदाई के दौरान शिवलिंग मिलने के बाद से शहर के आसपास दर्जन भर गांवों के लोगों की भीड़ उस जगह पर पहुंचने लगी है। लोग नारियल, अगरबत्ती, पूजा सामग्री लेकर वहां पर पहुंच रहे हैं। वहां पर अभी से ही मंदिर निर्माण की बातें शुरू हो गई हैं। आसपास के ग्रामीणों ने बताया कि यदि इस जगह पर शिवलिंग निकला है, तो यह जरूर कोई चमत्कार है। इस जगह पर मंदिर निर्माण करने के लिए हम पहल जरूर करेंगे।

बिलासपुर में महिला टीचर से लाखों की ठगी

बिलासपुर। बिलासपुर में ज्यादा कमाने के लालच में शिक्षिका ने करीब डेढ़ लाख रुपए गवा दिए। टास्क कमाने का लालच देकर ऑनलाइन ठगी कर ली गई।पुलिस मामला दर्ज कर जांच में जुट गई है। दरअसल, सरकंडा थाना क्षेत्र के अशोकनगर में रहने वाली शिक्षिका जया गौतम पति सिद्धांत गौतम के मोबाइल पर होटल मैनेजमेंट का स्टार रेटिंग देने के लिए दो दिन पहले एक मैसेज आया। जिसके एवाज में उन्हें रुपये मिलने का लालच दिया गया। कुछ दिन बाद फिर उन्हे टेलीग्राम ग्रुप में ऐड कर दिया फिर टास्क पूरा करने पर 400 रुपये भी दिए। फिर बाद में अलग-अलग टास्क दिए गए और रुपये की मांग की गई। पहले कुछ रकम मिलने के लालच में शिक्षिका ने उनके बताए बैंक खाते में करीब डेढ़ लाख रुपये जमा कर दिए। जिसके बाद फिर उन्हें अलग-अलग और टास्क दिया गया। मुनाफा नहीं होने पर महिला ने बात की। तब टास्क पूरा नहीं करने के कारण पैसा फंस जाने की बात कहते हुए ठग ने उसे गोलमोल जवाब देने लगा। इस पर महिला को ऑनलाइन ठगी का अहसास हुआ।

स्वीप क्रिकेट मैच में कलेक्टर व एसपी ने की अच्छी बल्लेबाजी

बालोद। जिले के डौण्डीलोहारा विकासखण्ड के वनांचल के ग्राम भंवरमरा के शासकीय हाईस्कूल मैदान में बुधवार 18 अक्टूबर को आयोजित स्वीप क्रिकेट मैच में कलेक्टर श्री कुलदीप शर्मा एवं पुलिस अधीक्षक श्री जितेन्द्र यादव ने बेहतरीन बल्लेबाजी की। उल्लेखनीय है कि मतदाता जागरूकता अभियान के अंतर्गत मतदाताओं एवं आम जनता को प्रोत्साहित करने हेतु बुधवार 18 अक्टूबर को ग्राम भंवरमरा के शासकीय हाईस्कूल मैदान में अधिकारियों एवं ग्रामीणों के मध्य क्रिकेट मैच का आयोजन किया गया। इस दौरान कलेक्टर श्री कुलदीप शर्मा एवं पुलिस अधीक्षक श्री जितेन्द्र यादव ने बेहतरीन बल्लेबाजी करते हुए दर्शकों का खूब मनोरंजन किया। मैच के दौरान ओपनर बल्लेबाज कलेक्टर श्री शर्मा ने आकर्षक शॉट लगाकर खूब तालियाँ बटोरी। इसी तरह पुलिस अधीक्षक श्री जितेन्द्र यादव ने भी बेहतरीन बल्लेबाजी की। इस अवसर पर जिला पंचायत की मुख्य कार्यपालन अधिकारी डॉ.रेणुका श्रीवास्तव, एसडीएम श्रीमती प्रतिमा ठाकरे झा आदि उपस्थित थे।

पंडरिया विधानसभा चुनाव के लिए पुलिस प्रशासन अलर्ट

कवर्धा। छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव 2023 के लिए नामांकन प्रक्रिया चल रही है। पंडरिया विधानसभा क्षेत्र में भी चुनावी हलचल तेज हो गई है। लिहाजा पुलिस प्रशासन भी सुरक्षा को लेकर मुस्तैद है। पंडरिया विधानसभा सीट के संवेदनशील इलाकों पर पैनी नजर रखी जा रही है। बुधवार को कुंडा गांव में मिलिट्री फोर्स के साथ पुलिस ने फ्लैग मार्च निकाला। आपराधिक गतिविधियों, गुंडों और चोरों पर भी कार्रवाई की जा रही है। पुलिस थाना कुंडा निरीक्षक कार्तिकेश्वर जांगड़े ने बताया, चुनाव को लेकर गाइडलाइन दी गई है। थाना क्षेत्र के संवेदनशील गांवों और बूथों पर सुरक्षा बढ़ा दी गई है। अपराधी, शरारती तत्वों को हिदायत दी गई है। वाहनों की चेकिंग कर कार्रवाई कर रहे हैं। कार्तिकेश्वर जांगड़े ने कहा प्रशासन ने जिले के सरहदी इलाकों पर वाहनों की चेकिंग सख्त कर दी है। आए दिन कैश और नशे का सामान जब्त हो रहा है। सभी जगहों पर नजर रखी गई है। लोगों को फ्लैग मार्च निकालकर जागरूक किया जा रहा है।

8 लाख की इनामी प्लाटून डिप्टी कमाण्डर ने किया समर्पण

सुकमा। पुलिस एवं सीआरपीएफ अधिकारियों के समक्ष 8 लाख की इनामी महिला नक्सलियों ने आत्म समर्पण किया। आत्मसमर्पित महिला नक्सली संगठन में सक्रिय थी। आत्मसमर्पित नक्सली करतम जोगी जिले की कुकानार थाना क्षेत्र की निवासी है। जिला सुकमा एवं दन्तेवाड़ा सीमावर्ती क्षेत्र में हुई बड़ी नक्सली घटनाओ में शामिल थी।

एसपी किरण चव्हाण ने बताया कि महिला नक्सली, नक्सल संगठन में मिलिट्री प्लाटून में सक्रिय थी। आने वाले दिनों में नक्सलियों के खिलाफ चलाया जा रहे नक्सल ऑपरेशन में इसका फायदा फोर्स को मिलेगा। उन्होंने अपील करते हुए कहा कि नक्सली संगठन का रास्ता छोडकर समाज के मुख्य धारा में लौट आए, शासन की आत्मसमर्पण व पुनर्वास नीति लाभ लेते हुए पुलिस के समक्ष आत्मसमर्पण कर सामान्य

रूप जीवन-यापन कर सकते हैं।

नक्सलियों ने मनेगांव में विधानसभा चुनाव बहिष्कार के लगाये बैनर-पर्चे

कांकेर। अंतागढ़ विधानभा क्षेत्र अंर्तगत कोयलीबेड़ा इलाके के मनेगांव में नक्सलियों ने विधानसभा चुनाव बहिष्कार को लेकर बैनर लगाकर पर्चे भी फेंके हैं। नक्सलियों द्वारा जारी बैनर-पर्चे में भाजपा को देश और जनता के लिए खतरा बताया है, वहीं साम्राज्यवादी वैश्वीकरण पर अमल कर रही जन विरोधी कांग्रेस का विरोध करने का जिक्र किया गया है। जारी बैनर-पर्चे में नक्सलियों ने छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव का बहिष्कार करने, जनताना सरकारों को बचाओ व मजबूत करने की अपील किया है।

चांदामेटा मतदान केंद्र में नक्सली रह चुके मतदाता भी करेंगे मतदान

जगदलपुर। बस्तर जिले के दरभा ब्लॉक में घने जंगलों के बीच स्थित नक्सल प्रभावित ग्राम चांदामेटा में इससे पहले मतदान केंद्र और चुनावी प्रक्रिया में ग्रामीणों की भागीदारी पहली बार होने जा रही है। नवनिर्मित स्कूल भवन में मतदान केंद्र बनाया गया है। यह देश के सबसे दूरस्थ और चुनौतीपूर्ण क्षेत्रों में लोकतंत्र के महत्व को रेखांकित करता है। इस गांव में 700 परिवार है, जिसमें वयस्क 328 मतदाता हैं। प्रत्येक घर से नक्सली सजायाफ्ता होने के कारण हर परिवार में एक नक्सली हुआ करता था। अब आत्मसमर्पित नक्सली मतदान में हिस्सा लेंगे इस अभूतपूर्व चुनाव में सुरक्षा के मद्देनजर 05 हजार पुलिस कर्मी पूरे क्षेत्र में तैनात रहेंगे।

उल्लेखनिय है कि ग्राम चांदामेटा लंबे समय से नक्सली प्रभाव में था, इस गांव में आज भी प्रत्येक घर से नक्सली मामलों की सजा पा चुका एक व्यक्ति जरूर मिलता है। तुलसी डांगरी के नाम से मशहूर पहाड़ी को पहले नक्सलियों का गढ़ माना जाता था। गांव में नक्सली उपस्थिति का इतिहास था, और यह माना जाता था कि प्रत्येक घर का कम से कम एक सदस्य इस नक्सलियों से जुड़ा हुआ था। नक्सली समस्या से निपटने और सुरक्षा बढ़ाने के लिए, पुलिस प्रशासन ने गांव में कैंप स्थापित किए, जिससे क्षेत्र में नक्सलियों की पकड़ कम होती गई। प्रशासन ने ग्रामीणों की बात सुनी और पहली बार गांव में मतदान केंद्र शुरू करने का ऐतिहासिक कदम उठाया गया।

मरवाही में एमपी से वापस आए उत्पाती हाथी, फसलों को पहुंचाया नुकसान

गौरेला पेंड्रा मरवाही। मरवाही वन मंडल में हाथियों का आतंक रुकने का नाम नहीं ले रहा है। पिछले दो दिनों से एमपी की सीमा से दाखिल हुए दो हाथी उत्पात मचा रहा है।हाथी का दल पहले एमपी की सीमा में वापस चला गया था।लेकिन वापस मरवाही वन मंडल के रास्ते छत्तीसगढ़ में दाखिल हो गया है। ये दो हाथी मरवाही के ग्रामीण इलाकों में उत्पात मचाए हुए हैं।कई किसानों की फसल दोनों हाथियों ने बर्बाद कर दी है।

बुधवार देररात दो हाथी मरवाही के रिहायशी इलाके में दाखिल हुए। इसके बाद हाथियों ने वन परिक्षेत्र कार्यालय परिसर में उत्पात मचाया। आपको बता दें कि पिछले एक माह से अधिक समय से छत्तीसगढ़ के मरवाही वन मंडल और मध्यप्रदेश के अनूपपुर जिले में 5 हाथियों का दल लगातार उत्पात मचा रहा था। जिसके बाद ये 5 जंगली हाथी मध्यप्रदेश की सीमा में दाखिल हो गए थे। लेकिन 5 हाथियों का दल दो समूहों में बंट गया। जिसके बाद तीन हाथियों का दल लंबे समय से मध्यप्रदेश में ही मौजूद है। वहीं दो हाथी एमपी और छत्तीसगढ़ की सीमा में उत्पात मचा रहे हैं।

दो दिन पहले रात के समय झुंड से भटके दो हाथी मरवाही वन परिक्षेत्र के गुजरनाला होते हुए मध्यप्रदेश के अनूपपुर जिले में दाखिल हो गए थे। लेकिन गुरुवार को फिर छत्तीसगढ़ की सीमा में दाखिल होकर दिन में ग्रामीणों की कई एकड़ फसल को चौपट कर दिया।मरवाही के पास के जंगल मे आराम करने के बाद ये 2 हाथी रात में मरवाही के रिहायशी इलाके में दाखिल हुए।फिर जमकर उत्पात मचाते हुए मरवाही वन परिक्षेत्र के कार्यालय पहुंचे।

संक्षिप्त समाचार

मरकाम व संतराम आज दाखिल करेंगे नामांकन, बघेल व शैलजा रहेंगी उपस्थित

कोंडागांव। कांग्रेस पार्टी के अधिकृत प्रत्याशी कोंडागांव विधानसभा क्षेत्र क्रमांक 83 से मोहन मरकाम एवं केशकाल विधानसभा क्षेत्र क्रमांक 82 से संतराम नेताम 20 अक्टूबर को जिला निर्वाचन कार्यालय जाकर अपना नामांकन पत्र दाखिल करेंगे। इस दौरान मुख्यमंत्री भूपेश बघेल, प्रदेश प्रभारी कुमारी शैलजा, कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष दीपक बैज उनके साथ मौजूद रहेंगे। जिला कांग्रेस कमेटी कोंडागांव ने जिले के सभी कार्यकर्ताओं को चौपाटी मैदान आदिवासी विश्राम भवन के पास एकत्रित होने संबंधी सूचना जारी की है, जहाँ पर सभी कार्यकर्ताओं को सभा के माध्यम से मुख्यमंत्री भूपेश बघेल, कांग्रेस प्रभारी कुमारी, पीसीसी अध्यक्ष दीपक बैज सम्बोधित करेंगे। सभा के बाद रैली की शक्ल में जिला निर्वाचन कार्यालय जाकर मोहन मरकाम और संतराम नेताम अपना नामांकन दाखिल करेंगे।

पंडरिया में योगेश व कवर्धा में सियाराम होंगे भाजपा चुनाव संचालक

रायपुर। भारतीय जनता पार्टी छत्तीसगढ़ के प्रदेश अध्यक्ष अरुण साव ने विधानसभा चुनाव 2023 के प्रथम चरण के चुनाव के लिए चुनाव संचालको की नियुक्ति की है जिसमें पंडरिया में योगेश (योगी) अग्रवाल व कवर्धा में डॉ. सियाराम साहू चुनाव संचालक व संतोष पटेल व श्री कैलाश चंद्रवंशी सहसंचालक होंगे। उक्त जानकारी प्रदेश महामंत्री एवं मुख्यालय केदार कश्यप ने दिए।

नक्सल प्रभावित 10 सीटों पर सुबह 7 से 3 बजे तक होगा मतदान

रायपुर। भारत निर्वाचन आयोग ने छत्तीसगढ़ में 7 नवम्बर को होने वाले मतदान के लिए समय निर्धारित कर दिया है। जिसके तहत बस्तर, जगदलपुर, चित्रकोट, पंडरिया, कवर्धा, खैरागढ़, डोंगरगढ़, राजनांदगांव, डोंगरगांव, खुज्जी में सुबह 8 से 5 बजे तक। नक्सल प्रभावित क्षेत्र मोहला मानपुर, अंतागढ़, भानुप्रतापपुर, कांकेर, केशकाल, कोंडागांव, नारायणपुर, दंतेवाड़ा, बीजापुर, कोंटा में सुबह 7 से 3 बजे तक मतदान होगा।

रवींद्र कुमार छग हाईकोर्ट के अतिरिक्त जज होंगे

बिलासपुर। बिलासपुर उच्च न्यायालय को एक और अतिरिक्त जज मिल गया है, केंद्र सरकार ने अधिवक्ता रवींद्र कुमार अग्रवाल को छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय का अतिरिक्त जज बनाए जाने की अधिसूचना गुरुवार को जारी कर दी। उल्लेखनीय हैं कि छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय ने अधिवक्ता रवींद्र कुमार अग्रवाल को जज बनाने का प्रस्ताव इसी वर्ष फरवरी में सुप्रीम कोर्ट कॉलेजियम के पास में भेजा था। इस प्रस्ताव पर सुप्रीम कोर्ट ने अपनी मुहर लगाते हुए केंद्र सरकार के पास सिफारिश कर दी थी।

दो सराफा कारोबारियों के यहां पहुंची आयकर की टीम

रायपुर। आयकर विभाग की टीम ने गुरुवार की सुबह सराफा कारोबार से जुड़े दो बड़े व्यापारियों के यहां उनके व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के अलावा घरों में भी दबिश दी है। आयकर विभाग की यह छापेमारी में भी कर अपवंचन के बारे में कोई पुख्ता जानकारी विभाग की ओर से नहीं दी गई है। लेकिन दीवाली से ठीक पहले सराफा में इस कार्रवाई से हलचल देखी गई। बताया जाता है कि आयकर विभाग की टीम ने सदर बाजार, एमजी रोड और बुढ़ापारा स्थित ज्वेलर्स तथा अन्य दुकानों में छापा मारा है। सदर बाजार में अरिहंत ज्वेलर्स की दुकान तथा संचालक उत्तम गोलछा के शैलेंद्र नगर स्थित घर, सदर बाजार में ही सुनील पारख के एएम ज्वेलर्स और बुढ़ापारा में संजय पारख के राजधानी ज्वेलर्स की दुकानों और घरों में छापा मारा गया है। बताया जा रहा है कि राजधानी ज्वेलर्स के वालफोर्ट सिटी स्थित घर में छापे के दौरान महत्वपूर्ण दस्तावेज आयकर विभाग की टीम को मिले हैं। इसके अलावा जगदलपुर में भी आयकर विभाग की टीम ने छापा मारा है। विभग की ओर से अधिकृत तौर पर छापे की कार्यवाही के संदर्भ में जानकारी नहीं दी गई है। यहां बताना जरूरी होगा कि गोलछा चेंबर आफ कामर्स के पदाधिकारी भी हैं।

उत्तर में भी इस बार फिजां बदलने की तैयारी : पुरंदर

रायपुर। छत्तीसगढ़ में चुनावी तारीखों के ऐलान के बाद सभी पार्टियों ने अपनी-अपनी तैयारियां तेज कर दी हैं। मुख्य विपक्षी पार्टी भाजपा इस बार कांग्रेस को हर हाल में राज्य की सत्ता से बेदखल करना चाहती है। विपक्षी दल को मात देने के लिए भाजपा कार्यकर्ताओं ने कमर कस ली है। इसी बीच रायपुर उत्तर विधानसभा क्षेत्र में भी भाजपा प्रत्याशी पुरंदर मिश्रा को विजयश्री दिलाकर फिजां बदलने की तैयारी जोर-शोर से चल रही है।

बताते चलें कि बीजेपी ने रायपुर उत्तर विधानसभा से पार्टी के वरिष्ठ नेता व समाजसेवी पुरंदर मिश्रा को अपना उम्मीदवार बनाया है। यही वजह है कि, उत्तर विधानसभा क्षेत्र के हर वर्ग में उत्साह का महौल नजर आ रहा है। पुरंदर मिश्रा के जनसम्पर्कअभियान का कारवां बुधवार को शंकर नगर पहुंचा। यहां मंडल के कार्यकर्ताओं की बैठक स्वदेशी भवन में हुई। इस अवसर पर पुरंदर मिश्रा ने कहा कि जनसेवा और क्षेत्र का विकास ही उनकी सबसे पहली प्राथमिकता है। इसी दिशा में आगे बढ़ते हुए उत्तर विधानसभा क्षेत्र की तस्वीर बदलने का प्रयास किया जाएगा। लेकिन सपने को पूरा करने के लिए वर्तमान में चुनाव जीतना बेहद जरूरी है। यह चुनाव कार्यकर्ताओं की मेहनत और जनता के आशीर्वाद से ही जीता जा सकता

है। उन्होंने आगे कहा, चुनाव धन बल से नहीं, कार्यकर्ताओं के मनोबल के सहारे लड़ा जाता है। बीजेपी का एक कार्यकर्ता होने के नाते कार्यकर्ताओं का जोश व जुनून का वे सम्मान करते हैं।

श्री मिश्रा ने कहा कि कार्यकर्ताओं की मेहनत व ईमानदारी की बदौलत बीजेपी इस बार प्रचंड बहुमत से जीतेगी और राज्य में सरकार बनाएगी। श्री मिश्रा ने आगे कहा, उत्तर विधानसभा क्षेत्र राजधानी का हृदय स्थल है लेकिन कांग्रेस सरकार की भ्रष्ट नीतियों के कारण विकास के मामले में यह क्षेत्र अभी भी काफी पिछड़ा हुआ है। उत्तर विधानसभा में रेलवे स्टेशन, मेडिकल कॉलेज, जेल, कोर्ट व कलेक्ट्रेट सहित तेलीबांधा तालाब के अलावा अफसरों, मंत्री व मुख्यमंत्री का निवास होने के बाद भी क्षेत्र बदहाल है।

सांसद सुनील सोनी ने कांग्रेस सरकार पर जमकर निशाना साधा और आरोप लगाया कि वह केवल राज्य को लूटने का काम कर रही है। राजधानी में अपराधी बेखौफ घूम रहे हैं। शहर में मंत्री बंगले के सामने बलात्कार की घटना घट रही है। मुख्यमंत्री अपने कार्यक्रमों से शहर के प्रथम नागरिक महापौर एजाज ढेबर से दूरी बनाकर रखते हैं। महापौर पूरी तरह से भ्रष्टाचार में डूबे हुए हैं। शहर की हालत आज बद से बदतर हो गई है। मुख्य मार्गों से लेकर प्रमुख चौंक चौराहों में हर तरफ सड़क पर धूल ही धूल का साम्राज्य है। भाजपा प्रवक्ता संजय श्रीवास्तव ने कहा कि इन दिनों नवरात्र का माहौल है। कार्यकर्ताओं को लोकतंत्र के सबसे बड़ेत्योहार चुनाव में बढ़-चढ़ कर भागेदारी निभानी है। जो कि पांच साल में एक बार आता है। कार्यकर्ताओं को सोशल मीडिया में होने वाले अफवाहों से सावधान रहना है। एकजुट होकर आपसी मनमुटाव को भुलाकर भाजपा का कमल खिलाना है। बैठक में मुख्य रुप से पूर्व मंत्री पूनम चंद्राकर, प्रदेश मंत्री किशोर महानंद, संयोजक नलनेश ठोकने, मंडल अध्यक्ष अनुप खेलकर, मंडल महामंत्री प्रीतम महानंद, टिकेंद्र वर्मा, विपिन पटेल, गोरेलाल नायक, संतोष साहू व संजय कश्यप सहित कार्यकर्तागण शामिल रहें।

उत्तर अभी बाकी है : एजाज ढेबर

रायपुर। रायपुर दक्षिण विधानसभा से महंत रामसुंदर दास को टिकट मिलने पर पत्रकारों से चर्चा करते हुए महापौर एजाज ढेबर ने महंत को टिकट मिलने से खुश है, वे और उनके कार्यकर्ता घर-घर जाकर प्रचार-प्रसार करेंगे और वोट मांगेंगे। कांग्रेस ने राजधानी रायपुर में तीन सीटों के लिए प्रत्याशियों की घोषणा कर दी है और अभी रायपुर उत्तर विधानसभा क्षेत्र में टिकट वितरण नहीं हुआ है, उन्हें उम्मीद है कि यहां वे जरुर उन्हें टिकट मिलेगी, यहां से भी उन्होंने टिकट की मांग की है। इस बीच उनके एक समर्थक ने सुभाष स्टेडियम के अंदर मिट्टी तेल डालकर आग लगाकर आत्महत्या की कोशिश की।

रायपुर दक्षिण विधानसभा से महापौर ढेबर को टिकट नहीं मिलने से नाराज हजारों समर्थक गुरुवार को सुभाष स्टेडियम स्थित उनके निवास स्थान पहुंचे और ढेबर को टिकट देने की मांग करते हुए जमकर नारेबाजी की। इस दौरान ढेबर ने समर्थकों को जैसे-तैसे शांत करवाया और कांग्रेस प्रत्याशी महंत रामसुंदर दास के पक्ष में काम करने कहा। इस बीच ढेबर के एक समर्थक ने अपने ऊपर मिट्टी तेल डालकर आग लगाकर विरोध जताया, वहां मौजूद लोगों ने जैसे तैसे उस युवक को बचाया और इलाज के लिए अस्पताल लेकर गए जहां उनकी हालत फिलहाल खतरे से बाहर बताई जा रही है।

टिकट न मिलने से नाराज समर्थकों को महापौर ढेबर ने अपने निवास के बाहर भरपेट भोजन करवाकर रवाना किया और उनके साथ बैठक खुद भोजन किया। भोजन ग्रहण करने के बाद पत्रकारों से चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि महंत को टिकट मिलने से बृजमोहन अग्रवाल डर गए और उन्हें पता था कि महंत को टिकट मिल रहा है इसलिए 6 महीने पहले से प्रचार-प्रसार शुरु कर दिए थे लेकिन इस बार रायपुर दक्षिण की जनता ने ठान लिया है कि बदलाव करना है। उन्हें उम्मीद है कि रायपुर के चारों विधानसभा की सीटें वे जीतेंगे और इस बार इतिहास भी रचेंगे।

हिमंत बिस्वा सरमा विधायक खरीदने में माहिर, सीधा बैंक हैं : मुख्यमंत्री

रायपुर। असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा के बयान पर छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने पलटवार किया है। उन्होंने आरोप लगाते हुए कहा कि हिमंत बिस्वा सरमा वही व्यक्ति है, जिसके खिलाफ ये लोग (भाजपा) पानी पीकर जांच करते थे। जब से वह भाजपा में शामिल हुए हैं, उनके खिलाफ जांच रुक गई है। ये लोग हमें तो बहुत झूरू कहते हैं। सीएम ने आरोप लगाते हुए कहा कि असम के मुख्यमंत्री जो विधायक खरीदने में माहिर हैं , वो तो सीधा-सीधा बैंक हैं, जो विधायकों की खरीद-फरोख्त करते हैं।

भूपेश बघेल ने कहा कि दूसरा सवाल है कि किसान संपदा योजना के तहत क्या नावगांव जिला में उनकी पत्नी के नाम से जो कंपनी है, उसको 10 करोड रुपए दिया गया है। उन्होंने कहा कि क्या उनकी धर्मपत्नी ने अप्लाई किया है कि भारत सरकार ने अपने आप दे दिया है। इससे 50 एकड़ जमीन खरीदा है। हम लोगों को बहुत एटीएम कहते हैं, एनी टाइम मनी। यह बात तो सही है कि हर 15 दिन में जो गोधन न्याय योजना का पैसा है, उनको मिल जाता है।

बघेल ने कहा कि हर महीने में बेरोजगारी भत्ता मिल जाता है। हर 3 महीने में किसानों को पैसा मिल जाता है। छत्तीसगढ़ सरकार ने 1 लाख 75 हजार करोड़ रुपय वितरित किए हैं, लेकिन यह जो आ रहे हैं असम के मुख्यमंत्री जो विधायक खरीदने में माहिर हैं। सीएम ने तंज कसते हुए कहा कि यह क्या बैंक आया हुआ है। उसको लाया इसलिए गया है क्योंकि वो अमित शाह के खासम-खास है, वह तो सीधा-सीधा बैंक है, जो विधायक खरीद फरोख्त करते हैं।

कार्यकर्ताओं के विरोध के बावजूद, दक्षिण सीट से महंत रामसुंदर दास को मिला टिकट

रायपुर। छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव में रायपुर दक्षिण प्रत्याशियों को लेकर कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने बीते बुधवार को राजीव भवन में विरोध प्रदर्शन कर रहे थे। वहीं शाम तक कांग्रेस ने दूसरी लिस्ट जारी कर दी है। इसमें पैरासूट प्रत्याशी को मैदान के उतारा गया है। कार्यकर्ता इसी का विरोध करने के लिए पहुंचे थे। कार्यकर्ता दक्षिण विधान सभा के लिए प्रत्याशी के रूप में कन्हैया अग्रवाल का समर्थन करने राजीव भवन पहुंचे थे। इसके अलावा कांग्रेस ने मंहत रामसुंदर दास को टिकट दिया गया है।

कांग्रेस की दूसरी लिस्ट जारी हो इससे पहले ही रायपुर दक्षिण कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने पैरासूट प्रत्याशी को लेकर जमकर विरोध प्रदर्शन कर रहे थे। कार्यकर्ताओं कहना है कि हमें पैरासूट प्रत्याशी नहीं चाहिए। दक्षिण का लाल कन्हैया अग्रवाल को टिकट मिलना चाहिए। वहीं कांग्रेस की दूसरी सूची में पैरासूट प्रत्याशी मंहत रामसुंदर दास को टिकट दिया गया है।

रायपुर दक्षिण विधानसभा कांग्रेस कार्यकर्ता सैकड़ों की संख्या में प्रदेश

कांग्रेस कार्यालय राजीव भवन पहुंचकर विरोध कर रहे थे। वहीं कार्यकर्ताओं का कहना है कि दक्षिण विधानसभा के लिए कन्हैया अग्रवाल को प्रत्याशी बनाकर मैदान में उतारा जाए। उन्होंने कहा कि पिछले पांच सालों से काम करते आ रहे हैं। कार्यकर्ताओं का कहना है कि जो सुख-दुख में साथ दें उसे प्रत्याशी के रूप में देखना चाहते हैं, लेकिन इसका उल्टा हो गया।

इस दौरान कार्यकर्ताओं ने जमकर नारेबाजी की थी। सभी कार्यकर्ता पोस्टर पकड़कर कांग्रेस कार्यालय में नारे बाजी करते रहे। इसके साथ ही जिसने %बृजमोहन को हाफ किया वही उसे साफ करेगा% पोस्टर पर लिखा था। ऐसे ही कई नारों के साथ कार्यकर्ता अपने प्रत्याशी का समर्थन करने के लिए कांग्रेस भवन पहुंचे हुए थे।

वहीं कार्यकर्ताओं ने कांग्रेस के मीडिया प्रभारी सुशील आनंद शुक्ला से बात-चीत की है। कार्यकर्ताओं ने उनसे मांग की है कि रायपुर दक्षिण विधानसभा के लिए कन्हैया अग्रवाल को मौका दिया जाए। इस बात पर सुशील आनंद शुक्ला ने आश्वासन देते हुए कहा कि इस संबध में सीएम से बात करता हूं। वहीं मामला अब उल्टा हो गया है। दूसरी लिस्ट में मंहत रामसुंदर दास के नाम पर मुहर लग गया है।

टिकट कटने पर बोले बघेल जीतने वालों दी हैं टिकट

दो दिवसीय बस्तर प्रवास पर रवाना होने से पहले पुलिस लाइन हैलीपेड पर पत्रकारों से चर्चा करते हुए प्रदेश के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने 18 विधायकों के टिकट काटने पर कहा कि कांग्रेस ने जीतने वालों को टिकट दिया है। जितने लोगों को टिकट मिला वे सभी जीतने वाले प्रत्याशी है और 75 + का आंकड़ा वे जरुर पार करेंगे। बचे सात नामों की घोषणा भी जल्दी कर दी जाएगी।

भटगांव सीट पर पारसनाथ और लक्ष्मी का होगा चुनावी मुकाबला

सूरजपुर। छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की दूसरी सूची लंबे अंतराल के बाद बुधवार की देर शाम जारी की गई। जिसमें भटगांव विधानसभा से पारसनाथ राजवाड़े व प्रेमनगर विधानसभा से खेलसाय सिंह दोनों ही सीटिंग विधायक को दोबारा उम्मीदवार घोषित किया गया। सूरजपुर जिले के दोनों ही अनारक्षित सीट पर कांग्रेस व भाजपा पार्टियों ने पिछड़ा वर्ग व अनुसूचित जनजाति समुदाय से उम्मीदवार चुनावी मैदान में उतारा है। भटगांव विधानसभा से वर्ष 2013 में पहली बार पारसनाथ राजवाड़े अपने प्रतिद्वंद्वी भाजपा की रजनी रविशंकर त्रिपाठी को मात देकर विधायक बनकर सदन पहुंचे थे।

रजनी रविशंकर त्रिपाठी को हराने के बाद से पारसनाथ रजवाड़े की क्षेत्र में सक्रियता एवं कार्यकर्ताओं के बीच अच्छी पकड़ बनी। जिसका फायदा उन्होंने बकायदा वर्ष 2018 के चुनाव में बखूबी उठाया। ये दोबारा अपने प्रतिद्वंद्वी भाजपा उम्मीदवार रजनी रविशंकर त्रिपाठी को पराजित कर विधायक बने। इसके बाद लगातार दूसरी पारी में विधायक निर्वाचित होने पर उन्हें प्रदेश सरकार में संसदीय सचिव बनाया गया। इसके बाद उनकी क्षेत्र में सक्रियता और भी बढ़ गई। पारसनाथ रजवाड़े ने

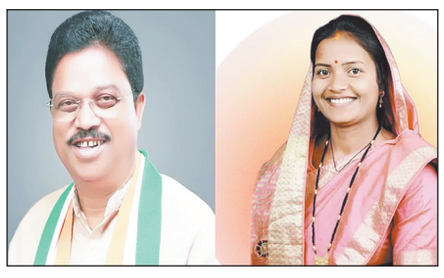

प्रदेश में अपनी सरकार होने का फायदा उठाते हुए अपने विधानसभा की तस्वीर बदलने की कोई कसर नहीं छोड़ी। क्षेत्र में उनकी सक्रियता एवं क्षेत्र के विकास के परिणाम स्वरूप तीसरी बार उनके ऊपर भरोसा कर कांग्रेस पार्टी ने उन्हें यहां से उम्मीदवार बनाया है।

वहीं, भाजपा ने कांग्रेस की गढ़ से लक्ष्मी राजवाड़े जिला पंचायत सदस्य एवं जिला महिला मोर्चा अध्यक्ष के ऊपर महिला व जाति का कार्ड खेल सेंध लगाने के लिए अपना उम्मीदवार बनाया है। वहीं, बात करें प्रेमनगर विधानसभा की तो यहां कांग्रेस ने आविभाजित सरगुजा के चार बार के विधायक व तीन बार के सांसद एवं वरिष्ठ कांग्रेसी नेता खेलसाय सिंह को अपना उम्मीदवार घोषित किया है। खेलसाय सिंह का सरगुजा में सरल, सहज व मिलनसार व्यक्तित्व के कारण इनका अपना ही नाम है। वर्ष 2013 में भाजपा की तेज तर्रार व कद्दावर आदिवासी महिला नेता रेणुका सिंह को मात देने के लिए पहली बार खेलसाय सिंह को कांग्रेस का उम्मीदवार प्रेमनगर विधानसभा सीट से बनाया गया। इसमें खेलसाय सिंह ने अपने प्रतिद्वंदी भाजपा की सीटिंग विधायक एवं उम्मीदवार को कड़ी टक्कर देकर पराजित कर तीसरी बार विधायक बनकर सदन पहुंचे।

वर्ष 2018 के चुनाव में प्रदेश में सत्ता विरोधी लहर में दोबारा कांग्रेस के उम्मीदवार खेलसाय सिंह बतौर विधायक निर्वाचित होकर सदन पहुंचे। इसके बाद राज्य सरकार के द्वारा उन्हें सरगुजा आदिवासी प्राधिकरण का अध्यक्ष बनाया गया। उनके लगातार क्षेत्र में सक्रिय होने के कारण पार्टी ने उन्हें दोबारा प्रेमनगर विधानसभा से उम्मीदवार बनाया है। वहीं, भाजपा ने प्रेमनगर विधानसभा सीट से भूलन सिंह मरावी पूर्व जिला पंचायत सदस्य गोड़ समुदाय का कार्ड खेली है। इस विधानसभा में गोड़ समुदाय की बाहुल्यता बहुतया मात्रा में पाई जाती है। जिसके कारण दोनों ही पार्टियों ने गोड़ समुदाय के उम्मीदवार पर भरोसा किया है।

दक्षिण से नहीं टूटा आखिर कांग्रेस का मिथक, हारे प्रत्याशी को दोबारा टिकट नहीं

रायपुर। रायपुर के दक्षिण विधानसभा सीट के साथ कांग्रेस का एक अजीब वाकया जुड़ा हुआ है। जैसे कि लोग इस बार भी कहते रहे। जो पिछला चुनाव हार गया उसे इस सीट पर दोबारा टिकट मिलना नामुमिकन है। कन्हैया अग्रवाल के लाख जोर आजमाइश के बाद टिकट न देकर आखिर कांग्रेस ने यह मिथक साबित कर भी दिया। हर बार भाजपा के बृजमोहन अग्रवाल ही प्रत्याशी रहे हैं और इस बार भी हैं। कन्हैया पिछला चुनाव भले ही हार गए थे लेकिन उनके साथ एक अच्छी बात ये रही कि उन्होने पांच साल अपना क्षेत्र नहीं छोड़ा इस उम्मीद में शायद कांग्रेस उनकी सक्रियता को देखते हुए टिकट दे देवे। लेकिन यह काम नहीं आया। निराशा की घड़ी में सुबह कन्हैया ने एक पोस्ट किया है जिसकी आज शहर में चर्चा होते रही।

बताना जरूरी होगा कि कन्हैया से पहले किरणमयी नायक, योगेश तिवारी ,गजराज पगारिया, पारस चोपड़ा, राजकमल सिंघानिया व स्वरूपचंद जैन चुनाव हार चुके हैं। लेकिन सभी हारने के बाद मैदान छोड़ गए थे। लेकिन कन्हैया अपने को छाया विधायक के रूप में पेश करते हुए सक्रिय रहे। हालांकि इनमें से किसी को भी दोबारा टिकट नहीं मिली। राजकमल सिंघानिया कसडोल से जरूर चुनाव जीते थे। कन्हैया की टिकट कटने के बाद समर्थकों में मायूसी है जिनका हौसला बढ़ाने के लिए कन्हैया ने एक संभावना भरी पोस्ट किया है। अगला कदम क्या होगा,इसके भी कयास लगाये जा रहे हैं क्योकि पांच साल खोने के बाद क्या अगला पांच साल भी वे खोना चाहेंगे? कुछ लोग यह गाशिप भी उड़ा रहे हैं कि कन्हैया आप पार्टी से चुनाव लड़ सकते हैं।

कांग्रेस ने मुकेश चंद्राकर को वैशाली नगर सीट से मैदान में उतारा

दुर्ग। छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव 2023 के लिए कांग्रेस ने दूसरी लिस्ट जारी कर दी है। कांग्रेस ने वैशाली नगर विधानसभा सीट से मुकेश चंद्राकर को प्रत्याशी बनाया है। मुकेश चंद्राकर वर्तमान में कांग्रेस के जिला अध्यक्ष भी हैं।

दुर्ग कांग्रेस जिला अध्यक्ष मुकेश चंद्राकर को पार्टी ने बीजेपी प्रत्याशी रिकेश सेन के खिलाफ चुनावी मैदान में उतारा है। मुकेश चंद्राकर का दिवंगत वासुदेव चंद्राकर के परिवार से भी संबंध है। वासुदेव चंद्राकर मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के राजनीतिक गुरु भी माने जाते रहे हैं। हालांकि दुर्ग की वैशाली नगर विधानसभा सीट संघ की सीट मानी जाती है। अब देखना होगा कि क्षेत्र की जनता कांग्रेस के मुकेश चंद्राकर पर भरोसा जताती है या नहीं।मुकेश चंद्राकर जिला अध्यक्ष रहते हुए लगातार सक्रिय रहे हैं। मुकेश चंद्राकर चंदूलाल चंद्राकार मेडिकल कॉलेज के डायरेक्टर का पद भी संभाल चुके हैं। वैशाली नगर विधानसभा चुनाव में चंद्राकर और साहू वोटर पर पार्टी की नजर है।

वैशाली नगर विधानसभा चुनाव 2018 में बीजेपी प्रत्याशी विद्या रतन भसीन ने कांग्रेस उम्मीदवार बदरुद्दीन कुरेशी को हराया था। साल 2013 में भी बीजेपी प्रत्याशी विद्या रतन भसीन ने चुनाव जीता था। 2013 में विद्या रतन भसीन ने कांग्रेस उम्मीदवार भजन सिंह निरंकारी को चुनाव हराया था। साल 2008 में इस सीट से बीजेपी प्रत्याशी सरोज पांडे ने चुनाव जीता था। यानी इस सीट पर बीजेपी का दबदबा रहा है।छत्तीसगढ़ में दो चरण में विधानसभा चुनाव हो रहे हैं। पहले चरण में बस्तर की 12 सीट और दुर्ग संभाग की 8 सीट पर । नवंबर को वोटिंग है। बीजेपी और कांग्रेस ने ज्यादातर सीटों पर अपने प्रत्याशियों के नामों का ऐलान कर दिया है। लिहाजा अब चुनाव प्रचार ने भी जोर पकड़ लिया है।

बिलासपुर सीट पर अमर अग्रवाल और शैलेष पांडेय की होगी टक्कर

बिलासपुर। बिलासपुर जिले के सभी छह प्रत्याशियों की सूची जारी हो गई है। जारी सूची में पहले से ही कुछ सीटों पर अनुमान लगाए गए थे। कोटा से अटल श्रीवास्तव, बिलासपुर से कांग्रेस के मौजूदा विधायक शैलेष पांडेय का नाम पक्के तौर पर लिया जा रहा था। इस बार बेलतरा विजय केशरवानी और कोटा से अटल श्रीवास्तव को पहली बार चुनाव लड़ाया जा रहा है। वहीं, बिल्हा से सियाराम कौशिक, मस्तूरी से दिलीप लहरिया और तखतपुर से रश्मि सिंह पहले भी चुनाव लड़ चुकी हैं। एमएलए शैलेष पांडेय और रश्मि सिंह पर दोबारा भरोसा जताया गया है।

अब बात बिलासपुर सीट की करें तो इस बार पिछले बार के मुकाबले कांटे की टक्कर दिख रही है। कांग्रेस प्रत्याशी शैलेष पांडेय और बीजेपी प्रत्याशी अमर अग्रवाल दोनों ही दमदार प्रत्याशी माने जा रहे हैं। अमर अग्रवाल बिलासपुर से कई बार के

विधायक रह चुके हैं और पिछली बार उन्हें शैलेष पांडेय ने शिकस्त दी थी। शैलेष पांडेय ने भाजपा के कद्दावर नेता अमर अग्रवाल को 11221 मतों से पराजित कर पहली बार विधायक बने। चुनाव में शैलेष पांडेय ने 67,896 मत हासिल किए थे। वहीं, भाजपा के अमर अग्रवाल को 56,675 मत मिले थे।

अमर अग्रवाल का जन्म अविभाजित मध्यप्रदेश के रायगढ़ जिले में 22 सितंबर सन् 1963 को खरसिया में हुआ था। प्रारंभिक शिक्षा खरसिया के स्थानीय स्कूल से पूरी करने के बाद उन्होनें रायपुर के दुर्गा कॉलेज से वाणिज्य संकाय में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। इस दौरान वे भारतीय जनता पार्टी युवा मोर्चा बिलासपुर के जिला अध्यक्ष, भाजपा राष्ट्रीय परिषद एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सक्रिय सदस्य रहे। 16 फ़रवरी 1985 को उन्होंने वैवाहिक जीवन में प्रवेश किया। शशि अग्रवाल उनकी धर्मपत्नी हैं। वो एक पुत्र व दो पुत्रियों के पिता हैं।

मंत्रीमंडल में भी रह चुके हैं अमर

भारतीय जनत पार्टी ने सन् 1998 में विधानसभा चुनाव के लिए बिलासपुर क्षेत्र से उन्हें अपना उम्मीदवार बनाया। इस चुनाव में अमर अग्रवालने भारी मतों के अंतर से जीत हासिल की छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण के बाद हुए पहले 2003 विधानसभा चुनाव में भी उन्होनें प्रचंड बहुमत से जीत हासिल की। अमर अग्रवाल डॉ? रमन सिंह के मंत्रीमंडल में वित्त, योजना, आर्थिक सांख्यिकी, वाणिज्य कर तथा नगरीय प्रशासन मंत्रालय का दायित्व निभाया। वो 2008 से 2018 तक चार बार के विधायक रहे। 2018 में भी उन्हें बिलासपुर से टिकट मिला और वो कांग्रेस के शैलेष पांडेय से हार गए।

कांग्रेस ने दोबारा शैलेष को दिया मौका

शैलेष पांडेय को कांग्रेस पार्टी ने इस बार भी मौका दिया है। शैलेष पांडेय पिछले चुनाव में अपनी ही पार्टी से काफी अंतर्विरोध के शिकार हुए थे। उन दिनों शिक्षाविद शैलेष पांडेय कांग्रेस पार्टी के नवोदित सदस्य थे और उन्हें पार्टी में आने के कुछ दिन बाद ही एक बड़ी जिम्मेदारी दे दी गई। वो पार्टी के विश्वास पर खरा उतरे और चार बार के विधायक अमर अग्रवाल को उन्होंने पटखनी दे दी।

वसुंधरा राजे युग से आगे बढ़ी भाजपा

विनोद पाठक

राजस्थान में भारतीय जनता पार्टी की पहली लिस्ट आ चुकी है। 41 उम्मीदवारों की घोषणा भी हो चुकी है, जिनमें लोकसभा के 6 सांसदों को टिकट दिया गया है और राज्यसभा से एक सांसद को मैदान में उतारा गया है। इन 41 सीटों में से केवल एक सीट विद्याधर नगर पर वर्ष 2018 के चुनाव में भारतीय जनता पार्टी जीती थी। विद्याधर नगर सीट पर भी पार्टी ने मौजूदा विधायक का टिकट काट राजसमंद से सांसद दीया कुमारी को मैदान में उतार दिया है। पिछले कुछ महीनो से पार्टी इसी कवायद में लगी है कि किस तरह नए चेहरों को मौका मिले और पार्टी संदेश दे कि वो सत्ता में वापसी के लिए गंभीर है। वर्ष 2018 में राजस्थान में एक नारा जोर-शोर से चला था कि मोदी तुझसे बैर नहीं, वसुंधरा तेरी खैर नहीं... तो पार्टी की यही कोशिश है कि किसी भी तरह वो यह संदेश भी दे कि वसुंधरा राजे को इस बार पार्टी नेतृत्व नहीं देने जा रही है। शायद यही कारण है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बार-बार राजस्थान आ रहे हैं व खुद की गारंटी दे रहे हैं और उन्हीं के चेहरे पर राजस्थान में चुनाव भी लड़ा जा रहा है। फिर भी कई ऐसे दिग्गज नेता हैं, जिनको भावी मुख्यमंत्री की दौड़ में माना जा रहा है, यानी साफ है कि राजस्थान में इस बार यदि भारतीय जनता पार्टी सत्ता में आती है तो एक नए चेहरे को नेतृत्व दिया जाएगा। वसुंधरा राजे वर्तमान में भारतीय जनता पार्टी की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष हैं। प्रदेश की दो बार मुख्यमंत्री रह चुकी हैं। उनकी फैन फॉलोइंग राजस्थान में जबरदस्त है। पूर्व राजघराने से आने वाली वसुंधरा के नेतृत्व में दो बार भारतीय जनता पार्टी सत्ता से कुछ दूर रह चुकी है। वर्ष 2008 और 2018, दोनों बार पार्टी वसुंधरा राजे के मुख्यमंत्री रहते हुए चुनाव हारी थी। इस बार ऐसा प्रतीत हो रहा है कि पार्टी वसुंधरा की छाया से दूर जा चुकी है। जो 41 उम्मीदवारों की पहली लिस्ट आई है, उसमें वसुंधरा राजे के खास लोगों का भी टिकट काट दिया गया है। पहली लिस्ट के बाद कुछ जगहों पर विरोध-प्रदर्शन हो रहा है, लेकिन पार्टी इसे भी एक सुखद संदेश के रूप में ले रही है, क्योंकि जितना विरोध होगा, उतना पार्टी के प्रति जनता का आकर्षण बढ़ेगा। यह संदेश जाएगा कि पार्टी के प्रति रुझान बढ़ रहा है, इसलिए टिकटों के लिए मारामारी है। जहां तक मुख्यमंत्री के चेहरे की बात है तो दौड़ में जोधपुर सांसद व केंद्रीय जलशक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत, केंद्रीय रेल मंत्री व जोधपुर से ही आने वाले अश्विनी वैष्णव का नाम प्रमुखता से लिया जा रहा है। विद्याधर नगर से जब दीया कुमारी को टिकट दिया गया तो समर्थक उनका नाम भी मुख्यमंत्री की रेस में चलाने लगे हैं। अलवर सांसद बाबा बालकनाथ को तिजारा से टिकट दिया गया है और मुख्यमंत्री की रेस में उनका नाम भी चल रहा है। बाबा बालकनाथ उसी नाथ संप्रदाय से आते हैं, जिससे उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ आते हैं। केंद्रीय कानून मंत्री अर्जुनराम मेघवाल, नेता प्रतिपक्ष राजेंद्र राठौड़ और उप नेता प्रतिपक्ष सतीश पूनिया के नाम भी मुख्यमंत्री की रेस में चर्चाओं में हैं। वहीं, जैसा भारतीय जनता पार्टी में एक सरप्राइज देने का फैक्टर है तो अभी कोई भी इस बात को लेकर 100 प्रतिशत आश्वस्त नहीं है कि पार्टी सत्ता में लौटी तो सेहरा किसके सिर बंधेगा? अधिकांश जानकारी यही मान रहे हैं कि जिस तरह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी चौंकाने वाले निर्णय लेते हैं तो यह भी संभव है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के बैकग्राउंड से आने वाले किसी अनजान चेहरे को सत्ता की चाबी सौंप दी जाए, जैसे गुजरात में नरेंद्र मोदी को सत्ता दी गई थी। फिलहाल राजस्थान में सभी को भारतीय जनता पार्टी की दूसरी लिस्ट का बेसब्री से इंतजार है। यह भी कयास लगाए जा रहे हैं कि चार-पांच और सांसदों को मैदान में उतारा जा सकता है। इस बात को भी कहा जा रहा है कि दूसरी लिस्ट भी पहली लिस्ट की तरह बेहद चौंकाने वाली होगी। एक तरह से भारतीय जनता पार्टी ने पहले उम्मीदवारों के नामों का एलान कर कांग्रेस से कुछ माइलेज तो ले ही लिया है।

प्रश्नों के घेरे में फंसी महुआ मोइत्रा

आशीष कुमार अंशु

भाजपा के लोकसभा सांसद निशिकांत दूबे ने 15 अक्टूबर, 2023 को तृणमूल कॉन्ग्रेस (टीएमसी) से सांसद महुआ मोइत्रा पर रिश्वत लेकर संसद में सवाल पूछने का आरोप लगाया है। संसद में पहले भी इस तरह के आरोप लगे हैं और सांसदों का निष्कासन भी हुआ है। दूबे ने लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला को पत्र लिख कर इस मामले में कार्रवाई की मांग की है।

उनके सभी आरोप सर्वोच्च न्यायालय में अधिवक्ता जय अनंत देहाद्राई द्वारा दी गई सूचनाओं पर आधारित है। देहाद्राई की लिखित शिकायत केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) के पास भी दर्ज है। अधिवक्ता देहाद्राई के अनुसार कारोबारी दर्शन हीरानंदानी से कैश और तोहफे लेकर महुआ मोइत्रा ने संसद में सवाल पूछे, इस बात के उनके पास अकाट्य सबूत हैं। आरोप यह भी लगाया गया है कि मोइत्रा ने हीरानंदानी को अपने ऑनलाइन लोकसभा अकाउंट का लॉग इन एक्सेस दे दिया था, जिसका दुरुपयोग अपनी पसंद के संसदीय प्रश्न पोस्ट करने के लिए किया गया।

अधिवक्ता देहाद्राई महुआ मोइत्रा पर जिस दर्शन हीरानंदानी के फेवर की शिकायत कर रहे हैं, वो भारत के निर्माण क्षेत्र की बड़ी कंपनी हीरानंदानी ग्रुप के 42 वर्षीय सीईओ हैं। दर्शन ने न्यूयॉर्क स्थित रोशेस्टर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी से एमबीए किया है। वे हीरानंदानी ग्रुप के संस्थापक निरंजन हीरानंदानी के बेटे हैं। उनकी कंपनी टाउनशिप, आईटी पार्क सहित निर्माण से जुड़ी परियोजनाओं के लिए जानी जाती है। इसके अलावा दर्शन हीरानंदानी योट्टा डेटा सर्विसेज, ऑयल एंड गैस सेक्टर की कंपनी एच-एनर्जी, टार्क सेमीकंडक्टरर्स और कंज्यूमर सर्विसेज तेज प्लेटफॉर्म्स के भी चेयरमैन हैं। फ़ोर्ब्स के सबसे अमीर 100 भारतीयों की सूची में हीरानंदानी परिवार भी शामिल है।

देहाद्राई द्वारा सीबीआई में और निशिकांत द्वारा लोकसभा अध्यक्ष के पास शिकायत के बाद महुआ शिकायत करने वाले देहाद्राई को अपना करीबी दोस्त बता रही हैं। उन्होंने दूबे के आरोपों को अपने पूर्व प्रेमी के झूठ पर आधारित बताया है। अब दो और दो जोड़ने वाले कई लोग मान रहे हैं कि पूर्व प्रेमी और करीबी दोस्त दोनों जय अनंत ही हैं लेकिन यह मोइत्रा ने स्पष्ट नहीं किया है। जय अनंत की लिंक्डइन प्रोफाइल देखने से पता चलता है कि उन्होंने पुणे के आईएलएस लॉ कॉलेज से स्नातक किया है। इसके बाद पेन्सिलवेनिया विश्वविद्यालय के लॉ स्कूल से मास्टर की डिग्री प्राप्त की। उन्होंने भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश शरद ए बोबडे के साथ काम किया। वो टाइम्स ऑफ इंडिया ग्रुप के वाइस चेयरमैन समीर जैन के कानूनी सलाहकार के रूप में काम कर चुके हैं।

सीबीआई को भेजी गई अधिवक्ता जय अनंत देहाद्राई की शिकायत में उन सवालों का उल्लेख है जो महुआ ने अब तक संसद में पूछे हैं। शिकायत के अनुसार महुआ ने 61 में से 50 सवाल गौतम अडानी के व्यावसायिक प्रतिद्वन्दी दर्शन हीरानंदानी को फायदा पहुंचाने के लिए पूछे हैं। जय अनंत के अनुसार 08 जुलाई 2019 को पारादीप पोर्ट को लेकर पेट्रोलियम मंत्री से सवाल पूछे गये थे। शिकायत में बताया गया है कि इस पोर्ट पर अडानी समूह के सामने हीरानंदानी समूह सबसे बड़ा प्रतिद्वन्दी है। 18 नवंबर 2019 को महुआ द्वारा संसद में पूछा गया प्रश्न अडानी पर निशाना साधने के लिए ही पूछा गया था। जय अनंत की शिकायत में एक-एक कर कई सवालों का जिक्र है और उन सवालों से हीरानंदानी समूह को पहुंचने वाले लाभ का जिक्र इन दस्तावेजों में हैं।

महुआ के खिलाफ देहाद्राई ने जो शिकायत की है उसमें उन उपहारों का उल्लेख भी किया है जो कथित तौर पर दर्शन हीरानंदानी द्वारा उन्हें सवाल पूछने के बदले में दिया गया है। शिकायत में जिन उपहारों का जिक्र है, उनकी कीमतों का खुलासा एक वेबसाइट ने अपने अध्ययन में किया है। वेबसाइट के अनुसार एप्पल के आईफोन 14 प्रो की कीमत लगभग एक लाख चालीस हजार है। हेमीज के स्कार्फ का जिक्र है, जिसकी कीमत 510 डॉलर (42,449 रुपए) बताई गई है। हालांकि स्कार्फ की कुल संख्या का जिक्र देहाद्राई की शिकायत में नहीं है। लुई वुइटन के स्कार्फ का जिक्र भी शिकायत में है, जिसकी कीमत 50 हजार से लेकर 05 लाख रुपए तक है। सेलवेटो फेलगामो के 35 जोड़े जूते, जिनकी एक जोड़े की कीमत 70 हजार से लेकर एक लाख रुपए तक है। फ्रांस और इटली से वाइन मँगाई गई थी, जिनकी एक बोतल की कीमत पांच हजार से लेकर पचास हजार तक है। वेबसाइट के अनुसार गुच्ची के 02 लाख तक के बैग उपहार में मोइत्रा को मिले। उन्हें उपहार में मगरमच्छ के चमड़े वाला भी एक बैग मिला है, जिसकी कीमत 12 लाख रुपए तक हो सकती है।

मामला मीडिया में उछला तो महुआ मोइत्रा ने पूरे मामले को लोकसभा अध्यक्ष तक ले जाने वाले भाजपा सांसद निशिकांत दूबे, अधिवक्ता जय अनंत देहाद्राई समेत 15 मीडिया संस्थानों को लीगल नोटिस भेजा है। इसमें द टाइम्स ऑफ इंडिया, एनडीटीवी, इंडियन एक्सप्रेस, इंडिया टुडे, हिन्दुस्तान टाइम्स, फ्री प्रेस जर्नल, एएनआई, इकानॉमिक टाइम्स, डेक्कन हेराल्ड, द स्टेट्समैन, इंडिया टीवी, द वायर, लाइव मिन्ट, डीएनए इंडिया, द न्यू इंडिया शामिल है। इनके साथ साथ नोटिस की सूची में गूगल, यू ट्यूब और एक्स भी हैं।

तृणमूल सांसद महुआ मोइत्रा पर बीजेपी के आक्रामक तेवर के बावजूद ममता बनर्जी की खामोशी पर सवालिया निशान लग रहे हैं। कुछ लोगों को इससे आने वाले समय में महुआ की गिरफ्तारी का अंदेशा हो रहा है और एक वर्ग ऐसा भी है जिसे लगता है कि समय आने पर ममता बोलेंगी। 20 अक्टूबर को महुआ की अवमानना याचिका पर पहली सुनवाई होनी है। इस बीच इंडिया गठबंधन में शामिल राजद के नेता तेजस्वी यादव महुआ मामले को लोकतंत्र से हमले से जोड़ कर देख रहे हैं। उल्लेखनीय है कि तेजस्वी खुद जमीन के बदले नौकरी घोटाले में सीबीआई चार्जशीट में नामजद है।

संसद में सवाल पूछने पर महुआ मोइत्रा से किसी को आपत्ति नहीं है। संसद में प्रश्न पूछने के लिए ही जनता ने उनका चयन किया है लेकिन एक सांसद क्षेत्र की समस्या को भूल कर किसी उद्योगपति की प्रवक्ता बन जाए तो समस्या है। अभी मोइत्रा द्वारा संसद में पूछे गए सवालों की जांच होनी है। उसका निर्णय आने में देर लगेगी लेकिन उनके द्वारा पूछे गए सवालों की सूची में क्षेत्र की समस्या कहां है? यह तो जनता उनसे पूछ ही सकती है।

लेकिन शुरुआत से ही उनके सवाल अगर किसी एक व्यावसायिक घराने को निशाना बनायें तो शक पैदा होता है कि जनता का कोई प्रतिनिधि किसी कॉरपोरेट हाउस के खिलाफ इतना मुखर क्यों है? कहीं वह संसद को कॉरपोरेट वॉर का हिस्सा तो नहीं बना रहा है? संसद में पहली बार महुआ अपने भाषणों की वजह से चर्चा में आई थी। अब उन्हीं महुआ मोइत्रा के भाषणों की स्क्रूटनी संसद की एथिक्स कमेटी करेगी। उन्होंने संसदीय भाषणों में जिस अडानी का मुद्दा सबसे अधिक बार उठाया, उसी मामले में उनके संसदीय आचरण पर प्रश्न चिन्ह लग गया है।

बहरहाल, अब मोइत्रा की शिकायत लोकसभा अध्यक्ष और सीबीआई के पास है। मीडिया ट्रायल की जगह भारतीय समाज को जांच पर विश्वास करना चाहिए। मोइत्रा को भी मीडिया संस्थानों को लीगल नोटिस भेजने की जगह, जो आरोप लग रहे हैं उनका जवाब देना चाहिए। हाल में वे न्यूज क्लिक के मामले में प्रेस की आजादी का समर्थन कर चुकी हैं और उसके बाद खुद मीडिया संस्थानों को वे लीगल नोटिस भेजकर क्या संदेश देना चाह रही हैं?

भारतीय ज्ञान परंपरा....

महोपनिषद् (भाग-20)

गतांक से आगे...

मन का विनाश ही अविद्या का विनाश कहा गया है। मन द्वारा जो कुछ भी अनुभूति में आता हो, उस-उसमें आस्था कदापि न होने दो। आस्था का परित्याग करना ही निर्वाण है और आस्था के आश्रित रहना ही दु:ख है। जो प्रज्ञा से रहित है, उन्हीं में अविद्या प्रतिष्ठित रहती है। सम्यक् प्रज्ञासम्पन्न मनुष्य नाम मात्र के लिए भी कहीं अविद्या को स्वीकार नहीं करते। इस दु:खरूपी कंटक से ओत-प्रोत संसार रूपी भ्रमजाल में तभी तक अविद्या अपने साथ देहधारी को निरन्तर भ्रमाती है, जब तक इसको विनष्ट करने वाली मोहनाशिनी आत्मसाक्षात्कार की आकांक्षा स्वयं ही उत्पन्न नहीं होती। यह अविद्या जब परमात्मतत्त्व की ओर देखती है, तब इसका स्वयं ही नाश हो जाता है। सर्वात्मबोध के दर्शन होते ही अविद्या स्वयं ही लुप्त हो जाती है। केवल इच्छा मात्र ही अविद्या का स्वरूप है और इच्छा का पूरी तरह से नष्ट होना ही मोक्ष कहा गया है। हे मुने! किन्तु इच्छा तभी समाप्त होती है जब मंकन का पूर्णरु विनाश हो जाये, अन्यथा इच्छा का नाश असम्भव है। चित् रूपी सूर्य के हो जाता है।

जब चित्त विषय वासनाओं का त्याग कर देता है तथा सर्वत्र गमन करने वाला बन जाता है, तब उसकी ऐसी अनिर्वचनीय अवस्था ही आत्मा एवं परमात्मा के नाम से अभिहित होती है। अवश्य ही यह सभी कुछ ब्रह्म है। वह नित्य एवं चिद्घनस्वरूप है। वही अव्यय है। इसके अतिरिक्त जो अन्य मन नाम की कल्पना की जाती है, उसका कहीं पर भी अस्तित्व नहीं है। वह तो मात्र भ्रम ही है। इन तीनों लोकों में न तो किसी का जन्म होता है और न ही मृत्यु। ये जो भी भाव विकार दृष्टिगोचर होते हैं, ये सभी अस्तित्वहीन हैं। एकमात्र केवलाभासरूप, सर्वव्यापी, अव्यय तथा चित्त के विषयों का अनुगमन न करने वाले केवल चिन्मात्र की ही सत्ता यहाँ विद्यमान है। उस नित्य, सर्वत्रव्यापी, शुद्ध, चिन्मात्र, उपद्रव रहित, शान्तस्वरूप एवं शमरूप में स्थित विकाररहित चिदात्मा में स्वयंचित्त ही स्वभावानुसार संकल्पपूर्वक गमन करता है, चित्त की वही संकल्परूप अवस्था स्वयं निर्दोष होते हुए भी मनन करने के कारण मन कही जाती है।

इस कारण संकल्प के द्वारा सिद्ध मन संकल्प द्वारा ही विनष्ट हो जाता है मैं ब्रह्म नहीं हूँ ऐसा सुदृढ़ संकल्प हो जाने से मन बन्धन-ग्रस्त नहीं होता और %यह सभी कुछ ब्रह्म ही है, ऐसा दृढ़ निश्चयी संकल्प हो जाने पर मन मुक्ति को प्राप्त कर लेता है। मैं क्षीणकाय हूँ, दु:खों से ग्रस्त हूँ, मैं हाथ पैर से युक्त हूँ, इस प्रकार के भावानुकूल व्यवहार से प्राणी बन्धनग्रस्त हो जाता है। मैं दु:खी नहीं हूँ, मेरा शरीर नहीं, आत्मतत्त्व में प्रतिष्ठित मुझमें बन्धन कहाँ? इस प्रकार के व्यावहारिक जीवन से ओत-प्रोत मन मुक्ति को प्राप्त कर लेता है। मैं मांस नहीं हूँ, अस्थि नहीं हूँ, ऐसा दृढ़ निश्चय कर लेने पर जिसके अन्तस् से अविद्या नष्ट हो गयी है, वही मुक्ति को प्राप्त कर लेता है।

क्रमश: ...

विश्व सांख्यिकी दिवस

विकास

20 अक्टूबर को विश्व सांख्यिकी दिवस पूरे विश्व में मनाया जाता है। जबकि भारत का राष्ट्रीय सांख्यिकी दिवस 29 जून को मनाया जाता है। विश्व के सामाजिक-आर्थिक विकास में आकड़ों के योगदान का जश्न मनाने के दिन के तौर पर विश्व सांख्यिकी दिवस को संयुक्त राष्ट्र सांख्यिकी आयोग के मार्गदर्शन में मनाया जाता है। इसे हर पांच वर्ष में मनाया जाता है और पहली बार 20 अक्टूबर 2010 को मनाया गया था। इस बार के विश्व सांख्यिकी दिवस का विषय 'सतत विकास के लिए आकड़े' निर्धारित किया गया है। 'विश्व सांख्यिकी दिवस' सांख्यिकी विषय के साथ पढ़ाई कर रहे छात्र-छात्राओं एवं इस क्षेत्र में पहले से काम कर रहे प्रोफेशनल के लिए विशेष है।

संयुक्त राष्ट्र संघ की आयोग ने साल 2010 में 20 अक्टूबर को विश्व सांख्यिकी दिवस के रूप में मनाने का प्रस्ताव रखा था। महासभा ने जिसे 3 जून 2010 के संकल्प 64/267 को अपनाया था। जिसमें अधिकारिक तौर पर 20 अक्टूबर 2010 को अधिकारिक आंकड़ों की उपलब्धियों का जश्न मनाने के तहत पहली बार विश्व सांख्यिकी दिवस के रूप में नामित किया था। साल 2015 में संकल्प 96 / 282 के साथ महासभा ने 20 अक्टूबर 2015 को सामान्य विषय बेहतर डाटा बेहतर जीवन के तहत दूसरे विश्व सांख्यिकी दिवस के रूप में नामित करने के साथ-साथ 20 अक्टूबर को हर 5 साल में वर्ल्ड स्टैटिक्स डे मनाने का फैसला लिया था।

सांख्यिकी के क्षेत्र में महालनोबिस ने कुछ ऐसी तकनीकों का विकास किया, जो आगे चलकर सांख्यिकी का अभिन्न हिस्सा बन गईं। महालनोबिस की प्रसिद्धि का एक ओर कारण महालनोबिस दूरी भी है, जो उनके द्वारा सुझायी गई एक सांख्यिकीय माप है। प्रोफेसर महालनोबिस देश में आर्थिक नियोजन के निर्माता और व्यावहारिक सांख्यिकी के अगुआ रहने के साथ ही एक दूरदृष्टा भी थे। उन्होंने दुनिया को बताया कि कैसे सांख्यिकी का प्रयोग आम जनता की भलाई के लिए किया जा सकता है।

आर्थिक योजना और सांख्यिकी विकास के क्षेत्र में प्रशांत चन्द्र महालनोबिस के उल्लेखनीय योगदान के सम्मान में भारत सरकार द्वारा उनके जन्मदिन यानी 29 जून को हर वर्ष सांख्यिकी दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस दिन को मनाने का उद्देश्य सामाजिक-आर्थिक नियोजन और नीति निर्धारण में प्रोफेसर महालनोबिस के कार्यों से जनमानस को प्रेरित करना है। आर्थिक योजना व सांख्यिकी विकास के क्षेत्र में महालनोबिस का उल्लेखनीय योगदान रहा है। प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरु ने उन्हें स्वतंत्रता के बाद नवगठित केंद्रीय मंत्रिमंडल का सांख्यिकी सलाहकार भी नियुक्त किया था। सरकार ने महालनोबिस के विचारों का उपयोग करके कृषि और बाढ़ नियंत्रण के क्षेत्र में कई अभिनव प्रयोग किए। उनके द्वारा सुझाए गए बाढ़ नियंत्रण के उपायों पर अमल करते हुए सरकार को इस दिशा में अप्रत्याशित सफलता मिली। स्वतंत्र भारत में औद्योगिक उत्पादन की बढ़ोतरी तथा बेरोजगारी दूर करने के प्रयासों को सफल बनाने के लिए महालनोबिस ने ही योजना तैयार की थी। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में राष्ट्रीय आय का अनुमान लगाने के उद्देश्य के लिए वर्ष 1949 में महालनोबिस की अध्यक्षता में ही एक 'राष्ट्रीय आय समिति' का गठन किया गया था। जब आर्थिक विकास को गति देने के लिए योजना आयोग का गठन किया गया तो उन्हें इसका सदस्य बनाया गया। प्रोफेसर महालनोबिस चाहते थे कि सांख्यिकी का उपयोग देश हित में हो। महालनोबिस ने देश को आंकड़ा संग्रहण की जानकारी दी। पंचवर्षीय योजनाओं के निर्माण में उनका अहम योगदान रहा है।

वतन वापसी में नवाज शरीफ के सामने दोहरी चुनौती

बिक्रम उपाध्याय

नवाज शरीफ 21 अक्टूबर को वापस पाकिस्तान आ रहे हैं। उनकी यह वतन वापसी लगभग 4 वर्ष बाद हो रही है। नवंबर 2019 में कोर्ट के आदेश पर वह इलाज कराने लंदन गए थे। उसके पहले वह एवन फील्ड और अल अजिजिया मामले में दोषी करार दिए जाने के बाद सात साल की सजा भुगतने के लिए जेल में थे। लंदन जाने से पहले वह लगभग एक साल जेल में रहे, जहां उनकी हालत खराब बतायी गई और उसी के आधार पर उन्हें लंदन जाने दिया गया। अब सिर्फ एक सवाल लोगों के जेहन में है कि क्या उनकी वतन वापसी सत्ता में भी उनकी वापसी की गारंटी होगी या उन्हें फिर से जेल में डाल दिया जाएगा?

जेल में इसलिए कि अभी उनकी पहचान एक फरार मुजरिम की है। समय पर कोर्ट में ना पेश होने के कारण अदालत ने उन्हें फरार घोषित कर रखा है। पाकिस्तान में जो इस समय हालात हैं उसमें नहीं लगता कि उन्हें तत्काल जेल भेजा जाएगा, क्योंकि उनकी वापसी ही तभी कराई गई है, जब उनकी पार्टी नेताओं को यह यकीन हो गया कि उन्हें सुप्रीम कोर्ट से कोई ना कोई राहत मिल ही जाएगी। इसके लिए उनकी लीगल टीम तैयारी कर रही है। हालांकि नवाज की पार्टी को छोड़कर इन दिनों पाकिस्तान कीं हर पार्टी के नेता यह कह रहे हैं कि पूर्व प्रधानमंत्री एक डील के तहत आ रहे हैं। यहां तक कि हाल तक सत्ता में साथ रही पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी के नेता भी यही कह रहे हैं।

डील पर यकीन करने के पर्याप्त कारण भी हैं। पहला यह कि नवाज शरीफ की वतन वापसी के खिलाफ पाकिस्तान की फौज नहीं है। अलबत्ता

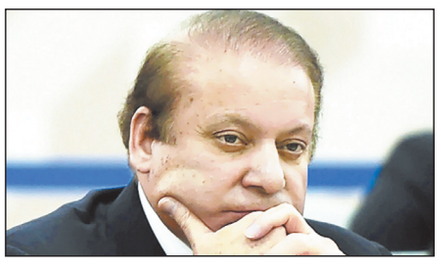

वापसी के पहले आर्मी चीफ ने यह संदेश जरूर उनके भाई शहबाज शरीफ के जरिए ही लंदन भिजवा दिया था कि नवाज शरीफ को सिर्फ उसी सूरत में तकलीफ हो सकती है, जब वह अपनी तकरीरों और बयानों में आर्मी को निशाना बनाएंगे, चाहे वह पूर्व आर्मी चीफ जनरल कमर जावेद बाजवा के खिलाफ ही क्यों ना हो। पाकिस्तान की आर्मी की एक खास बात है कि वह कभी वर्तमान या पूव सैन्य अधिकारियों के खिलाफ कोई आवाज नहीं सुन सकती। जिस किसी राजनीतिक नेता या पत्रकार ने आर्मी के खिलाफ आवाज उठाई या तो वह जान से गया या अपने परिवार से गया। पिछले दिनों कई पत्रकार और नेता इसका स्वाद चख चुके हैं।

नवाज शरीफ को यकीन है कि उनके खिलाफ कुछ नहीं होगा तभी वह आते ही लाहौर के मीनार ए पाकिस्तान में जलसे का आयोजन करा रहे हैं। मीनार ए पाकिस्तान लाहौर की वह जगह है, जहां 23 मार्च 1940 को ऑल इंडिया मुस्लिम लीग ने अलग मुस्लिम देश के लिए प्रस्ताव पास कराया था। उसे लाहौर डिक्लयेरेशन भी कहते हैं। बाद में 1960 से 68 के दौरान यहां एक 70 मीटर उंची मीनार खड़ी की गई और तब से इसका नाम मीनार ए पाकिस्तान पड़ गया। यहां बहुत बड़ा मैदान है जिसमें डेढ से दो लाख लोग जमा हो सकते हैं। पाकिस्तान का कोई भी राजनेता जब ऐतिहासिक रैली की बात करता है तो यहीं आता है। बेनजीर भुट्टो और इमरान खान भी यहां जलसा कर चुके हैं।

लेकिन नवाज शरीफ का यकीन अपनी जगह है, कानूनी पहलू अपनी जगह है। नवाज शरीफ को सुप्रीम कोर्ट ने ही 28 जुलाई 2017 को पनामा केस में कसूरवार मानते हुए आजीवन चुनाव लड़ने से अयोग्य ठहरा दिया था। तब इस फैसले को सुनाने वाली सुप्रीम कोर्ट की पांच सदस्यीय पीठ में जस्टिस उमर अता बांदियाल भी थे, जो पिछले 17 सितंबर को पाकिस्तान सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस पद से रिटायर हुए हैं। यह पाकिस्तान जैसे देश में ही संभव है कि सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस के रूप में बांदियाल अपने रिटायरमेंट से पहले चुनाव कराने का आदेश दे चुके थे, जिसे शहबाज शरीफ की सरकार बड़ी मुश्किल से टालने में सफल हुई थी। नवाज शरीफ की वतन वापसी में देरी और इसकी तिथि 21 अक्टूबर को करने के पीछे एक बड़ी वजह जस्टिस बांदियाल भी थे, क्योंकि पाकिस्तान मुस्लिम लीग उनके पद पर रहते नवाज को पाकिस्तान लाने का जोखिम लेने के लिए तैयार नहीं थी। खैर जस्टिस बांदियाल जाते जाते नैब के कानून में बदलाव के पाकिस्तान की नेशनल असेम्बली के प्रस्ताव को ही गैर कानूनी ठहरा गए, जिसके तहत सार्वजनिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले खास लोगों पर नैब के अधीन मुकदमा दायर करने से छूट मिल सकती थी।

नवाज शरीफ पर इस समय दो केसों में सजा और कम से कम चार चल रहे मुकदमों का बोझ है। वह इनसे निकलेंगे और चुनाव में अपनी पार्टी का नेतृत्व करेंगे, इसको लेकर तमाम दावे हैं। पीएमएलएन ने जो प्लान किया है उसके मुताबिक नवाज शरीफ दुबई से चार्टर प्लेन के जरिए इस्लामाबाद पहुंचेंगे। उसी दिन वह इस्लामाबाद हाई कोर्ट में पेश होकर नियमित जमानत हासिल करगें। इस बीच प्रोटेक्टिव बेल के लिए इस्लामाबाद हाईकोर्ट में उनकी लीगल टीम ने जमानत याचिका लगा दी है। फिर जीटी रोड से रैली निकाल कर लाहौर पहुंचेंगे। उसके बाद शाम को वह मीनार ए पाकिस्तान से आवाम को संबोधित करेंगे। बहरहाल नवाज शरीफ के लिए मामला बहुत आसान भी नहीं होगा। हालांकि मौजूदा चीफ जस्टिस काजी फैज ईसा के होने से उन्हें राहत मिलने की उम्मीद पूरी है। फिर भी उन्हें दो मोर्चों पर अभी संघर्ष करना पड़ सकता है। पहला यह कि क्या उन्हें तत्काल जमानत मिल जाएगी और वह राजनीतिक अभियान शुरू कर सकेंगे और दूसरा कि क्या उन पर लगे आजीवन प्रतिबंध की मियाद खत्म मानी जाएगी? दोनों मामलों में सुप्रीम कोर्ट को अपना फैसला देना है।

नवाज शरीफ पंजाब के मुख्यमंत्री के साथ साथ पाकिस्तान के तीन बार प्रधानमंत्री रह चुके हैं। वह 1990,1997 और 2013 में पाकिस्तान के प्रधानमंत्री बने। वर्ष 1998 में पाकिस्तान के न्यूक्लियर बम के टेस्ट का श्रेय उन्हीं को जाता है। पर इस समय पाकिस्तान महंगाई और गरीबी के न्यूक्लियर बम पर बैठा हुआ है। ऐसे में वतन वापसी के साथ नवाज शरीफ के लिए दोहरी चुनौती होगी। उनके वापस लौटने से पीएमएल (एन) की धाक तो बढेगी और हो सकता है चुनाव में उसे इसका फायदा भी मिले। लेकिन पीएम बनने से पहले नवाज शरीफ के सामने जितनी मुश्किलें हैं पीएम बनने के बाद वो और अधिक बढेंगी। अब देखना यह है कि एक तरफ कुआं और दूसरी तरफ खाईं वाली परिस्थिति में वो अपनी और पार्टी की नैय्या कैसे पार लगाते हैं।

हिन्द स्वराज्य

शिक्षा

प्रश्न- आपने इतना सारा कहा, परन्तु उसमें कहीं भी शिक्षा-तालीम की जरूरत तो बतायी ही नहीं। हम शिक्षा की कमी की हमेशा शिकायत करते रहते हैं। लाजिमी तालीम देने का आन्दोलन हम सारे देश में देखते हैं। महाराजा गायकवाड़ ने (अपने राज्य में) लाजिमी शिक्षा शुरू की है। उसकी ओर सबका ध्यान गया है। हम उन्हें धन्यवाद देते हैं। यह सारी कोशिश क्या बेकार ही समझनी चाहिए?

उत्तर- अगर हम अपनी सभ्यता को सबसे अच्छी मानते हैं, तब तो मुझे अफसोस के साथ कहना पड़ेगा कि वह कोशिश ज्यादातर बेकार ही है। महाराजा साहब और हमारे दूसरे धुरन्धर नेता सबको तालीम देने की जो कोशिश कर रहे हैं, उसमें उनका हेतु निर्मल है। इसलिए उन्हें धन्यवाद ही देना चाहिए। लेकिन उनके हेतु का जो नतीजा आने की संभावना है, उसे हम छिपा नहीं सकते। शिक्षा-तालीम का अर्थ क्या है? अगर उसका अर्थ सिर्फ अक्षर ज्ञान ही हो, तो वह तो एक साधन जैसी ही हुई। उसका अच्छा उपयोग भी हो सकता है और बुरा उपयोग भी हो सकता है। एक शस्त्र से चीर-फाड़ करके बीमार को अच्छा किया जा सकता है और वही शस्त्र किसी की जान लेने के लिए भी काम में लाया जा सकता है। अक्षर-ज्ञान का भी ऐसा ही है। बहुत से लोग उसका बुरा उपयोग करते हैं, यह तो हम देखते ही हैं। उसका अच्छा उपयोग प्रमाण में कम ही लोग करते हैं। यह बात अगर ठीक है तो इससे यह साबित होता है कि अक्षर ज्ञान से दुनिया को फायदे के बदले नुकसान ही हुआ है। शिक्षा का साधारण अर्थ अक्षर ज्ञान ही होता है। लोगों को लिखना, पढ़ना और हिसाब करना सिखाना बुनियादी या प्राथमिक-प्रायमरी शिक्षा कहलाती है। एक किसान ईमानदारी से खुद खेती करके रोटी कमाता है। उसे मामूली तौर पर दुनियावी ज्ञान है। अपने माँ-बाप के साथ कैसे बरतना, अपनी स्त्री के साथ कैसे बरतना, बच्चों से कैसे पेश आना, जिस देहात में वह बसा हुआ है वहाँ उसकी चाल-ढाल कैसी होनी चाहिए, इस सबका उसे काफी ज्ञान है। वह नीति के नियम समझता है और उनका पालन करता है। लेकिन वह अपने दस्तखत करना नहीं जानता। इस आदमी को आप अक्षर ज्ञान देकर क्या करना चाहते हैं? उसके सुख में आप कौन सी बढ़ती करेंगे?

क्रमश: ...

शिवपुरी की लड़ाई कपड़े फाड़ने तक क्यों आई ?

जयदेव सिंह

मध्य प्रदेश चुनाव के लिए कांग्रेस उम्मीदवारों की सूची जारी होने के बाद कई जगह बगावती सुर सुनाई दे रहे हैं। सबसे ज्यादा चर्चा शिवपुरी सीट को लेकर हो रही है। इस सीट पर पार्टी ने शिवपुरी जिले की ही पिछोर सीट से छह बार के विधायक केपी सिंह को टिकट दिया है। केपी सिंह को टिकट मिलने के बाद भाजपा से कांग्रेस में आए वीरेंद्र रघुवंशी नाराज हैं। उनके समर्थक नाराजगी जताने भोपाल तक पहुंच गए। यहां प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष के सामने हुई उनकी नोकझोंक के एक वीडियो ने सियासी पारा काफी बढ़ा दिया है। बात कपड़े फटने तक आ गई।

कांग्रेस ने नवरात्र के पहले दिन 144 प्रत्याशियों की पहली सूची जारी की। इसके बाद कई जगह विरोध और बगावत के मामले सामने आए। भाजपा से कांग्रेस में आए कोलारस विधायक वीरेंद्र रघुवंशी को टिकट नहीं मिलने पर उनके समर्थक मंगलवार को कमलनाथ के सामने विरोध प्रदर्शन करने पहुंचे। यहां पर कमलनाथ ने उनको दिग्विजय सिंह और जयवर्धन सिंह के कपड़े फाड़ने की बात कह दी। इसका वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया। भाजपा ने भी वीडियो को लेकर तंज कसा। इसके बाद पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने सोशल मीडिया पर लिखा, जब परिवार बड़ा होता है तो सामूहिक सुख और सामूहिक द्वंद्व दोनों होते हैं। समझदारी यही कहती है कि बड़े लोग धैर्यपूर्वक समाधान निकालें। ईश्वर भी उन्हीं का साथ देते हैं जो मन और मेहनत का मेल रखते हैं। कुछ देर बाद ही दोनों नेता वचन पत्र जारी करने एक मंच पर आए। वचन पत्र जारी करने से पहले कमलनाथ से कपड़े फाड़ने वाली बात को लेकर सवाल किया गया। कमलनाथ ने कहा, मैंने कहा था यदि आपकी बात वह नहीं मानें तो आप भी उनके कपड़े फाड़िए। इस पर दिग्विजय सिंह ने उनको टोकते हुए कहा, भैया, ए और बी फॉर्म पर दस्तखत किसके होते हैं? ये प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष के, तो कपड़े किसके फटने चाहिए? बताओ। दोनों के बीच इस संवाद को सुनकर लोगों ने भी ठहाके लगाए।

वीरेंद्र रघुवंशी तो कोलारस विधायक हैं फिर शिवपुरी सीट से दावेदारी क्यों?

2004 के लोकसभा चुनाव के बाद यशोधरा राजे

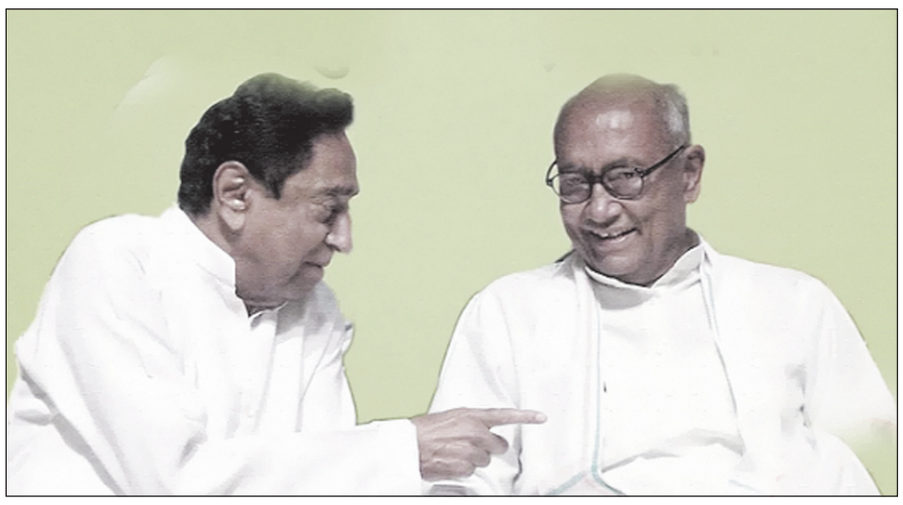

ने शिवपुरी सीट से इस्तीफा दे दिया। इसके बाद हुए उप-चुनाव में कांग्रेस के टिकट पर वीरेंद्र रघुवंशी ही उतरे थे। उन्होंने यहां से कांग्रेस को जीत दिलाई। 2008 के विधानसभा चुनाव में रघुवंशी फिर से मैदान में थे। हालांकि, उन्हें भाजपा के माखन लाल राठौड़ ने 1,751 वोट से हरा दिया।

2013 में एक बार फिर भाजपा ने यहां से यशोधरा राजे सिंधिया को टिकट दिया। वहीं, कांग्रेस के टिकट पर एक बार फिर वीरेंद्र रघुवंशी मैदान में थे। रघुवंशी को इस बार 11,145 वोट से हार मिली।

2018 के चुनाव में वीरेंद्र रघुवंशी पाला बदलकर भाजपा में आ गए। भाजपा ने उन्हें शिवपुरी जिले की ही कोलारस सीट से मैदान में उतारा। रघुवंशी ने यहां से कांग्रेस के महेंद्र यादव को महज 720 वोट के अंतर से मात दे दी। भाजपा के टिकट पर विधायक बने रघुवंशी ने 2023 के चुनाव से चंद महीने पहले ही कांग्रेस में वापसी कर ली। रघुवंशी इस बार फिर से शिवपुरी सीट से चुनाव लड़ने की तैयारी कर रहे थे, लेकिन उनकी जगह कांग्रेस ने केपी सिंह को टिकट दे दिया। इसके बाद से ही यह बगावत शुरू हुई है।

केपी सिंह को शिवपुरी सीट से टिकट क्यों?

कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और कमलनाथ सरकार में मंत्री रहे केपी सिंह शिवपुरी जिले की ही पिछोर विधानसभा सीट से विधायक हैं। केपी सिंह पिछोर से सीट से लगातार छह चुनाव जीत चुके हैं। उन्होंने 1993, 1998, 2003, 2008, 2013 और 2018 के विधानसभा चुनाव में पिछोर सीट पर कांग्रेस के टिकट पर जीत दर्ज की है। इस बार पार्टी ने उन्हें पिछोर की जगह शिवपुरी से चुनाव मैदान में उतारा है। पार्टी जिले के कद्दावर नेता के जरिए इस सीट पर अपनी हार का क्रम तोड़ने की उम्मीद कर रही है।

दूसरी ओर शिवपुरी सीट से विधायक यशोधरा राजे सिंधिया पहले ही चुनाव नहीं लड़ने का एलान कर चुकीं हैं। सियासी गलियारों में चर्चा है कि भाजपा यहां से केंद्रीय मंत्री और यशोधरा के भतीजे ज्योतिरादित्य सिंधिया को टिकट दे सकती है। सिंधिया और केपी सिंह की तकरार और दोस्ती दोनों इस क्षेत्र में चर्चा में रही है। सिंधिया के अलावा इस सीट से भाजपा की ओर से देवेंद्र जैन, धैर्यवर्धन शर्मा, रामजी व्यास, राजू बाथम जैसे नाम भी चर्चा में रहे हैं। ऐसे में इस सीट पर भाजपा किसे उम्मीदवार बनाएगी यह देखना भी दिलचस्प होगा।

शिवपुरी जिले का सियासी समीकरण

शिवपुरी जिले की बात करें तो जिले में कुल पांच विधानसभा सीटें करैरा, पोहरी, शिवपुरी, पिछोर और कोलारस हैं। 2018 के विधानसभा चुनाव में इनमें से करैरा, पोहरी और पिछोर सीट पर कांग्रेस को जीत मिली थी। वहीं, शिवपुरी और कोलारस से भाजपा के उम्मीदवार जीते थे। 2013 में भी जिले में नतीजा कांग्रेस के पक्ष में तीन-दो रहा था। तब कांग्रेस ने करैरा, पिछोर और कोलारस सीट पर जीत दर्ज की थी। वहीं, पोहरी और शिवपुरी सीट भाजपा के खाते में गईं थीं। वहीं, 2008 के विधानसभा चुनाव में पिछोर सीट को छोड़कर बाकी चार सीटें भाजपा के खाते में गईं थीं। पिछोर सीट पर कांग्रेस के केपी सिंह जीतने में सफल रहे थे। जिन्हें इस बार पार्टी ने शिवपुरी भेजा है।

शिवपुरी सीट का चुनावी इतिहास

मध्य प्रदेश राज्य का गठन होने के बाद में 1957 में यहां पहले चुनाव हुए। तब से अब तक इस सीट पर कुल 14 चुनाव हुए हैं। 1957 के चुनाव में यह सीट अनुसूचित जाति के लिए सुरक्षित थी। इसके बाद से यह सामान्य सीट हो गई। 1957 और 1962 में यहां से कांग्रेस को जीत मिली। 1967 और 1972 में इस सीट से भारतीय जनसंघ जीतने में सफल रहा। 1977 की जनता लहर में यहां से जनता पार्टी को जीत मिली।

1980 के विधानसभा चुनाव में एक बार फिर इस सीट पर कांग्रेस का उम्मीदवार जीतने में सफल रहा। 1985 में भी यहां कांग्रेस के गणेश राम गौतम लगातार दूसरी बार जीते। 1990 में शिवपुरी सीट से निर्दलीय सुशील बहादुर अस्थाना को जीत मिली। अस्थाना पहले यहां से भारतीय जनसंघ के टिकट पर जीत दर्ज कर चुके थे।

1993 में भाजपा ने यहां से देवेंद्र कुमार जैन को टिकट दिया। उन्होंने भाजपा को पहली बार इस सीट पर जीत दिलाई। अगले चुनाव में इस सीट से यशोधरा राजे सिंधिया को भाजपा ने मैदान में उतारा। सिंधिया तब से यह सीट यशोधरा का गढ़ रही है। यशोधरा यहां से 1998, 2003, 2013 और 2018 में चुनाव जीतने में सफल रहीं हैं। 2008 में भी यहां से भाजपा के माखन लाल राठौड़ जीते थे।

2004 के लोकसभा चुनाव में शिवपुरी विधायक यशोधरा को भाजपा ने ग्वालियर लोकसभा सीट से उम्मीदवार बना दिया। यशोधरा चुनाव जीतकर लोकसभा पहुंच गईं। इसके बाद हुए शिवपुरी विधानसभा सीट पर उप-चुनाव हुए। इस उपचुनाव में कांग्रेस ने जीत दर्ज की। यानी, 2006 के उप-चुनाव को छोड़कर इस सीट पर पिछले 30 साल से भाजपा का कब्जा है।

कितने अपनों को टिकट दिला पाएंगी वसुंधरा?

अमित शर्मा

वसुंधरा राजे सिंधिया और भाजपा के केंद्रीय नेतृत्व के बीच जारी अनबन को लेकर नया अपडेट सामने आया है। उम्मीद जताई जा रही है कि दोनों ने समझौतों की राह पर आगे बढ़ना शुरू कर दिया है। असम के राज्यपाल गुलाब चंद्र कटारिया से दो दिन पूर्व हुई वसुंधरा की मुलाकात के बाद ही इस बात की अटकलें लगाई जा रही थीं कि उन्होंने कटारिया के माध्यम से अपनी चिंताओं को केंद्र तक पहुंचा दिया है। केंद्र ने भी उनकी चिंताओं का उचित समाधान करने का आश्वासन दिया है। इसे देखते हुए कहा जा सकता है कि भाजपा की एक बड़ी परेशानी टलती दिखाई पड़ रही है। हालांकि, कहा यह भी जा रहा है कि इसके बावजूद वसुंधरा के कुछ करीबियों को टिकट के लिए इंतजार करना पड़ सकता है। इसकी वजह है कि भाजपा अभी भी कोई रिस्क लेने के मूड में नहीं है। राजस्थान में 25 नवंबर को मतदान होगा। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा बुधवार को राजस्थान के कोटा पहुंचे। यहां उनका स्वागत करने के लिए पार्टी के राजस्थान के सभी शीर्ष नेता उपस्थित थे। लेकिन इस टीम में वसुंधरा राजे सिंधिया का चेहरा शामिल नहीं था, लेकिन झालावाड़ से सांसद उनके बेटे दुष्यंत सिंह नड्डा का स्वागत करने वालों में शामिल थे। जब से भाजपा ने यात्राओं के जरिए राजस्थान में अपनी हवा बनाने की मुहिम शुरू की है, तब से यह क्रम लगातार बना हुआ है। यहां भी वही क्रम देखा गया। पार्टी सूत्रों के मुताबिक, पार्टी अध्यक्ष ने यहां पार्टी के शीर्ष नेताओं से मुलाकात कर उम्मीदवारों के नामों पर चर्चा की। भाजपा सूत्रों के अनुसार, इस बार पार्टी चुनाव को बेहद गंभीरता से ले रही है। इसलिए टिकट बांटते समय केवल जीत के फैक्टर पर ध्यान दिया जा रहा है। किसी नेता का करीबी होना जीत की गारंटी नहीं है। विपक्षी दल के उम्मीदवारों को ध्यान में रखते हुए उसी उम्मीदवार को टिकट दिया जाएगा, जो पार्टी के लिए जीत की गारंटी बन सके। केवल किसी नेता के दबाव में आकर किसी को टिकट नहीं मिल पाएगा। इसके लिए बीजेपी के आंतरिक सर्वे और आरएसएस से मिले फीडबैक को भी आधार बनाया गया है। चुनाव क्षेत्र का जातीय अंकगणित भी उम्मीदवारों का नाम तय करने में अहम भूमिका निभा रहा है। दरअसल, इसके पहले वसुंधरा राजे सिंधिया राज्य के अलग-अलग इलाकों में दौरे कर पार्टी के मुख्यमंत्री पद पर अपना दावा ठोंक रही थीं, लेकिन पार्टी ने इस बार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के चेहरे पर चुनाव में जाने का निर्णय किया। इसके बाद से ही वसुंधरा राजे सिंधिया नाराज बताई जा रही थीं। उनके करीबियों का यहां तक कहना है कि वसुंधरा ने अपने कुछ खास लोगों को चुनाव के लिए तैयार रहने का संदेश दिया था। यदि भाजपा से उनको टिकट नहीं मिलता तो वे स्वतंत्र उम्मीदवार के तौर पर चुनाव में उतर सकते थे।

क्या वेट एंड वॉच के चक्कर में उलझी कांग्रेस-भाजपा की अंतिम सूची

राहुल संपाल

मध्यप्रदेश में विधानसभा चुनाव के लिए प्रचार शुरू हो गया है। लेकिन सभी की निगाहें अब भाजपा और कांग्रेस की अंतिम सूची पर लगी हुई हैं। दोनों दलों ने उम्मीदवारों के नाम तय कर लिए हैं। लेकिन लिस्ट जारी करने के लिए तू पहले, तू पहले के इंतजार में है। भाजपा के 94 और कांग्रेस के 86 प्रत्याशियों के नाम तय होना बाकी हैं। कांग्रेस की चुनाव समिति की बैठक हो चुकी है। जबकि भाजपा की कोर ग्रुप की बैठक के बाद अब केंद्रीय चुनाव समिति का होना है। भाजपा की 5वीं सूची 20 या 21 अक्तूबर को आ सकती है। कांग्रेस की लिस्ट गुरुवार रात या फिर 20 अक्तूबर तक आने की उम्मीद है। भाजपा में बची हुई 94 सीटों को लेकर चर्चा पूरी हो गई है। केंद्रीय चुनाव समिति में अंतिम मुहर लगने के बाद पांचवी सूची जारी हो जाएगी। इसमें अधिकत्तर सीटों पर प्रत्याशियों का एलान कर दिया जाएगा। भाजपा सूत्रों ने बताया कि भाजपा की सूची में सिंधिया समर्थक विधायक महेंद्र सिसोदिया, सुरेश धाकड़, बृजेंद्र यादव के टिकट लगभग तय है। गौरीशंकर बिसेन की जगह उनकी बेटी को चुनाव लड़ाया जा सकता है। जबकि मंत्री ओपीएस भदौरिया का टिकट संकट में है। वहीं पार्टी ने 8 मंत्रियों के टिकट रोके थे, इनमें से ज्यादातर को हरी झंडी मिल गई है। मंत्री इंदर सिंह शुजालपुर और उषा ठाकुर महू से ही चुनाव लड़ेंगी। सूत्रों ने बताया कि भाजपा ने 10 से 15 विधायकों को छोड़कर बाकी विधायकों को हरी झंडी दे दी है। पवई सीट से मौजूदा विधायक प्रहलाद लोधी का नाम आगे है। उज्जैन उत्तर में वर्तमान विधायक पारस जैन दावेदारों में सबसे आगे हैं, लेकिन पार्टी ने अनिल जैन कालूहेड़ा का नाम संगठन को भेजा है। पारस जैन की पूर्व मंडी क्षेत्र में पकड़ है इसलिए निर्णय केंद्रीय संगठन ही लेगा। भोपाल दक्षिण-पश्चिम विधानसभा सीट पर पूर्व मंत्री उमाशंकर गुप्ता और स्थानीय नेताओं के नामों पर पेंच फंसा है। जबकि ग्वालियर पूर्व से पूर्व मंत्री माया सिंह, भिंड से नरेंद्र कुशवाहा, ग्वालियर दक्षिण से पूर्व मंत्री नारायण सिंह कुशवाह, इंदौर-5 से महेंद्र हार्डिया, टीकमगढ़ से राजेंद्र तिवारी, भोजपुर से सुरेंद्र पटवा, होशंगाबाद से सीताशरण शर्मा को फिर मौका मिल सकता है। मध्यप्रदेश के विधानसभा चुनाव को लेकर कांग्रेस की दूसरी सूची गुरुवार शाम तक आने की उम्मीद है। बुधवार को दिल्ली में कांग्रेस की सेंट्रल इलेक्शन कमेटी की बैठक हुई। कांग्रेस के सूत्रों ने बताया कि सभी 86 सीटों पर नाम फाइनल कर लिए गए है। लेकिन दूसरी सूची में 50 उम्मीदवारों के नाम की घोषणा हो सकती है। बची हुई 36 सीटों की घोषणा कुछ दिन बाद होगी। कांग्रेस सूत्रों ने बताया कि पार्टी ने दूसरी लिस्ट में सर्वे के आधार पर नए चेहरे पर दांव लगाया है। जिन विधायकों को चुनाव लड़ाया जाना है, उन्हें संगठन की ओर से संकेत भी दे दिए गए हैं। वहीं, जिन स्थानों पर दो या उससे अधिक दावेदार हैं, वहां जातिगत समीकरणों को देखते हुए उम्मीदवार तय किए गए हैं।

यूपी में सपा-कांग्रेस की लड़ाई असलियत को उजागर कर रही

अजय कुमार

हिंदी शासित राज्यों- मध्य प्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ में होने वाले विधानसभा चुनाव में सीटों के बंटवारे को लेकर सपा-कांग्रेस के बीच रार उनके नेताओं में दूरियां भी बढ़ा रही हैं। जिसके चलते विपक्षी गठबंधन आइएनडीआइए में दरार बढ़ रही है। उत्तर प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय के विवादित बयान इस मनमुटाव में आग में घी डालने का काम कर रहे हैं। वह लगातार अखिलेश यादव को नसीहत दे रहे हैं, जो सपा नेताओं को राज नहीं आ रहा है। इसी क्रम में अब उन्होंने मध्य प्रदेश में सीटों के बंटवारे पर सपा नेताओं का फिर बड़ा दिल दिखाने का सुझाव दिया है।

अजय राय का कहना है कि उत्तर प्रदेश से बाहर सपा को मध्य प्रदेश और अन्य राज्यों में अपना आधार भी देखना चाहिए। मध्य प्रदेश में पिछले विधानसभा चुनाव में सपा को केवल एक सीट मिली थी। इससे पार्टी को अपनी जमीनी स्थिति को भी समझना चाहिए। अजय राय ने कहा कि उत्तराखंड की बागेश्वर सीट पर हुए विधानसभा के उपचुनाव में भी सपा ने अपना प्रत्याशी उतारा था, जिसका नुकसान कांग्रेस प्रत्याशी को उठाना पड़ा था। इसके बाद भी कांग्रेस ने बड़ा दिल दिखाया था। प्रदेश में घोसी सीट पर विधानसभा उपचुनाव में कांग्रेस ने बढ़कर सपा प्रत्याशी को समर्थन दिया था और कांग्रेस नेताओं ने घोसी जाकर प्रचार किया था। पांच राज्यों में होने जा रहे विधानसभा चुनाव में सपा को सभी जगह पहले अपना आधार देखना चाहिए। हालांकि आने वाले लोकसभा चुनाव में उत्तर प्रदेश में सीटों के बंटवारे पर राय ने प्रतिक्रिया नहीं दी, लेकिन हकीकत यह भी है कि उत्तर प्रदेश में लोकसभा चुनाव में सपा व कांग्रेस के बीच सीटों के बंटवारे को लेकर भी खींचतान के संकेत मिलते रहे हैं।

कांग्रेस नेता सभी 80 सीटों पर चुनाव लड़ने का दावा

करते आए हैं। वहीं सपा कांग्रेस के पाले में 15 से 20 सीट ही जाने देना चाहती है। दोनों ही दलों के नेता सीटों के बंटवारे को लेकर एक-दूसरे पर दबाव भी बनाते नजर आए हैं। इसी कड़ी में संसद में भाजपा सांसद द्वारा बसपा सांसद दानिश अली पर की गई गंभीर टिप्पणी के बाद पहले राहुल गांधी और फिर अजय राय ने दिल्ली में दानिश अली से मुलाकात की थी।

पश्चिमी उत्तर प्रदेश में सक्रिय मुस्लिम नेता व पूर्व विधायक इमरान मसूद को भी कांग्रेस ने घर वापसी कराई। इसके बाद राष्ट्रीय लोक दल (रालोद) के कद्दावर नेता रहे नवाब कोकब हमीद के बेटे नवाब अहमद हमीद और सपा नेता व पूर्व मंत्री ओमवीर तोमर भी कांग्रेस में शामिल हुए। कांग्रेस मुस्लिम नेताओं में अपनी पैठ बढ़ाकर सपा पर दबाव बनाती दिख रही है। ऐसे में उत्तर प्रदेश में आने वाले दिनों में दोनों दलों के नेताओं के बीच खींचतान बढ़ने की संभावनाएं भी तेज होती जा रही हैं।

उत्तर प्रदेश में इंडिया गठबंधन कांग्रेस और समाजवादी पार्टी की जिद के कारण खतरे का निशान पार करता दिख रहा है। जो पार्टी जहां मजबूत है वह वहां दूसरे को नीचा दिखाने लगी है। मध्य प्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ में कांग्रेस गठबंधन सहयोगी समाजवादी पार्टी को भाव नहीं दे रही है तो उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी अपने नेतृत्व में चुनाव लड़े जाने की बात कर रही है। दोनों के बीच सीटों के बंटवारे पर बार-बार मनमुटाव उजागर हो रहा है। यूपी में कांग्रेस करीब दो दर्जन सीटों पर अपनी दावेदारी ठोक रही है तो वहीं समाजवादी पार्टी का कहना है कि वह दावेदारी ना ठोके यह बताए कि कितने सीटों पर चुनाव जीत सकते हैं।

पांच राज्यों में होने वाले विधानसभा चुनाव में जिस तरह की खटास सपा और कांग्रेस के बीच देखी जा रही है उसका असर अगले वर्ष होने वाले लोकसभा चुनाव में भी पड़ना तय नजर आ रहा है क्योंकि यूपी में समाजवादी पार्टी अपने को अपर हैंड मानती है और कांग्रेस को चार-पांच सीटों से ज्यादा देने को तैयार नहीं है। यह बात कांग्रेस को काफी खल रही है, जिस तरह से उत्तर प्रदेश कांग्रेस का नेतृत्व समाजवादी पार्टी के खिलाफ बयान बाजी कर रहा है उससे भी दोनों दलों के बीच की दूरियां बढ़ती जा रही हैं। ऐसे में उत्तर प्रदेश की 80 लोकसभा सीटों पर इंडिया गठबंधन का खेल खराब हो सकता है जिसका पूरा फायदा भारतीय जनता पार्टी उठाने की कोशिश करेगी।

राहुल के कटघरे में मोदी, अडानी के साथ मीडिया भी

अजय सेतिया

फाईनेंशियल टाईम्स की एक खबर के हवाले से राहुल गांधी ने एक बार फिर उद्योगपति गौतम अडानी और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर हमला बोला है। फाईनेंशियल टाईम्स में यह खबर 12 अक्टूबर को छपी थी, 18 अक्टूबर को सुबह एक विशेष प्रेस कांफ्रेंस करके राहुल गांधी ने आरोप लगाया कि अडानी ने 2019 से 2021 के बीच इंडोनेशिया से ज्यादा कीमतों के बिल दिखा कर कोयला आयात किया। उनका आरोप है कि आयातित कोयले को महंगा दिखा कर अडानी की कंपनी महंगी बिजली बेच रही है, जबकि सच यह है कि अडानी ने दिखाई गई कीमत पर कोयला आयात नहीं किया था।

अडानी ग्रुप के गुजरात, महाराष्ट्र, राजस्थान, कर्नाटक, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश और झारखंड राज्यों में 9 बिजली संयंत्र हैं। इन सात में से तीन कांग्रेस शासित राज्य हैं, एक कांग्रेस समर्थक राज्य है और जिस समय के आयात का हवाला इस रिपोर्ट में दिया गया है उस समय दो अन्य राज्य महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश भी कांग्रेस शासित राज्य थे। सिर्फ गुजरात ही एकमात्र ऐसा राज्य है, जो कांग्रेस शासित राज्य नहीं है।

राहुल गांधी ने फाईनेंशियल टाईम्स की रिपोर्ट को घरेलू बाजार में बिजली की कीमतों से जोड़ कर इसे राजनीतिक मुद्दा बनाया और अपनी प्रेस कांफ्रेंस में राजस्थान, मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ के मतदाताओं को संबोधित किया। अब सवाल पैदा होता है कि इन तीनों राज्यों में अडानी सीधे घरों में बिजली सप्लाई करते हैं, या वह राज्य सरकारों को बेचते हैं और राज्य सरकारें बिजली की कीमत तय करके सप्लाई करती हैं। राहुल गांधी ने कहा कि आम युवा या महिला जब बिजली का बटन दबाते हैं, तो उसका पैसा सीधे अडानी की जेब में चला जाता है।

राहुल गांधी का आरोप यह है कि अडानी ने कथित तौर पर आयातित कोयले की कीमत बढ़ा चढ़ा कर दिखाई और भारत में अडानी ग्रुप जहां जहां भी बिजली सप्लाई करता है, वहां बिजली की कीमतें बढ़ गईं। फाईनेंशियल टाईम्स ने अपनी रिपोर्ट में इस तरह के कई उदाहरण दिए हैं, जिनमें दिखाया गया है कि इंडोनेशिया से कोयला जहाज पर लादा गया तो रिकार्ड में उसकी कीमत क्या थी, और जब वह भारत पहुंचा तो उसकी कीमत क्या दिखाई गई थी।

दिए गए कई उदाहरणों में से एक उदाहरण जनवरी 2019 का है, पनामा के झंडे तले डीएल अकेशिया जहाज 74,820 टन थर्मल कोल लेकर इंडोनेशिया से भारत के लिए रवाना हुआ था। निर्यात रिकार्ड में इस कोयले की कीमत 1.9 मिलियन डॉलर थी, लेकिन जब यह जहाज अडानी संचालित गुजरात के मुंद्रा बन्दरगाह पर पहुंचा, तो इसकी कीमत 4.3 मिलियन डालर दिखाई गई थी।

फाईनेंशियल टाईम्स का दावा है कि उसने 2019 से लेकर 2021 के बीच ऐसे 30 मामलों की पड़ताल की और हर मामले में पाया गया कि इंडोनेशिया से जब जहाज चला तो कीमत कुछ और थी, लेकिन जब वह भारत पहुंचा तो कीमत कई गुना बढ़ रही थी। इन तीस जहाजों में 3.1 मिलियन टन कोयला आयात हुआ, जिसकी कुल कीमत 139 मिलियन डालर थी, इस की शिपमेंट और बीमा लागत 3.1 मिलियन डालर थी, लेकिन भारत में सीमा शुल्क अधिकारियों के सामने कीमत 215 मिलियन डालर बताई गई। जिससे साबित

होता है कि शिपमेंट के दौरान ही 73 मिलियन डालर का मुनाफ़ा हो गया।

अडानी ने इन सभी आरोपों को खारिज करते हुए कहा है कि फाईनेंशियल टाईम्स की सारी कहानी पुराने और निराधार आरोपों पर आधारित है। असल में इससे पहले भी सात साल पहले 2016 में भारतीय वित्त मंत्रालय की आर्थिक अपराध की जांच करने वाली राजस्व खुफिया निदेशालय की जांच रिपोर्ट में भी कोयले की आयातित लागत बढाने का आरोप लगाया गया था। उस समय जिन 40 कंपनियों पर आयातित कोयले की ज्यादा कीमत दिखाने का आरोप था, उनमें से पांच अडानी की कंपनियां थी। जिसमें कहा गया था कि विदेशों में पैसा निकालने और बिजली कंपनियों से ज्यादा वसूली के लिए इंडोनेशियाई कोयले की कीमत बढ़ाकर दिखाई गई है।

राजस्व खुफिया निदेशालय ने अपने नोटिस में 50 से लेकर 100 प्रतिशत कीमत बढा कर दिखाने का आरोप लगाया था। नोटिस में यह भी कहा गया था कि जब कोयला सीधे इंडोनेशिया से भारत आता है, तो बिलिंग के चालान किसी तीसरे देश की कंपनी के क्यों होते हैं। इसका मतलब साफ़ है कि बिचौलियों को बीच में डाल कर मनी लांड्रिंग के लिए कीमत बढ़ाई जाती है। इस रिपोर्ट के बाद गुजरात प्रदेश कांग्रेस ने 2018 से बिजली के लिए अधिक शुल्क लेने का आरोप लगाया था।

अडानी ग्रुप ने फाईनेंशियल टाईम्स को भेजे अपने जवाब में कहा है कि डीआरआई ने जिन 40 कंपनियों पर ओवर बिलिंग के आरोप लगाए थे, उनमें से एक मामले में डीआरआई ने खुद सुप्रीमकोर्ट में दायर अपील वापस ले ली। जिससे साबित हुआ कि डीआरआई का ओवर बिलिंग का आरोप सही नहीं था। डीआरआई ने ओवर बिलिंग का आरोप लगाते समय जिन दस्तावेजों का सहारा लिया था, सीमा शुक्ल प्राधिकरण ने उन दस्तावेजों की प्रामाणिकता ही नकार दी थी। फर्क यह है कि अडानी ग्रुप ने अपने जवाब में 2016 की घटना का जिक्र किया है, जिसमें डीआरआई के ओवर बिलिंग के आरोपों को प्राधिकरण ने ही गलत पाया था, लेकिन फाईनेंशियल टाईम्स की नई रिपोर्ट 2019 से 2021 के बीच के 30 आयातों पर आधारित है।

राहुल गांधी ने फाईनेंशियल टाईम्स की रिपोर्ट को उम्दा किस्म की पत्रकारिता करार देते हुए, भारतीय मीडिया को कटघरे में खड़ा किया है। उन्होंने सवाल किया है कि भारतीय समाचार पत्रों और न्यूज चैनलों पर ऐसी खोजी खबरें क्यों नहीं आती। लेकिन सवाल यह है कि क्या यह भी उसी तरह का मामला है जब 2016 में डीआरआई ने ओवर बिलिंग का केस बनाया था, लेकिन प्राधिकरण के फैसले के बाद खुद ही अपील कोर्ट से वापस ले ली थी। अगर यह भी उसी तरह का मामला निकला, तो यह किस तरह की उम्दा रिपोर्टिंग का उदाहरण होगा। राहुल गांधी भारतीय मीडिया पर लगातार हमला कर रहे हैं, कुछ दिन पहले उन्होंने अपनी प्रेस कांफ्रेंस में पत्रकारों की जाति पूछ ली थी, ठीक उसी तरह, जैसे एक जमाने में कांशीराम और मायावती पत्रकारों से उनकी जाति पूछ लिया करते थे।

फाईनेंशियल टाईम्स की रिपोर्ट को तब तक सही नहीं माना जा सकता, जब तक डीआईआर जांच के बाद उस पर अपनी राय न बनाए, हालांकि 2016 में डीआईआर की जांच भी प्राधिकरण ने गलत ठहरा दी थी। इसलिए फाईनेंशियल टाईम्स की किसी रिपोर्ट को अंतिम सत्य मान कर भारतीय मीडिया पर सवाल खड़े करना राहुल गांधी की राजनीतिक अपरिपक्वता का सबूत है। यह बात सही है कि फाईनेंशियल टाईम्स ने अपनी जांच को आगे बढ़ाने के लिए अडानी ग्रुप के जवाब को डीआरआई को उसकी टिप्पणी के लिए भेजा था, लेकिन फाईनेंशियल टाईम्स कहता है कि डीआरआई ने पूछे गए सवालों का कोई जवाब ही नहीं दिया। भारत के लोग अच्छी तरह जानते हैं कि सरकारी विभागों में जवाब कितनी तेजी से दिए जाते हैं। लेकिन डीआरआई के जवाब नहीं आने को फाईनेंशियल टाईम्स ने कहा कि इससे साबित होता है कि अडानी और प्रधानमंत्री के प्रशासन में कितनी मिलीभगत है। फाईनेंशियल टाईम्स की यह टिप्पणी दर्शाती है कि पूरी रिपोर्ट किस इरादे से लिखी गई है। यह वही आरोप है जो जार्ज सोरोस लगाते रहे हैं, जिसे बाद में राहुल गांधी दोहराते रहे हैं कि मोदी अडानी की दोस्ती के चलते प्रशासन पंगु हो गया है।हालांकि फाईनेंशियल टाईम्स की स्टोरी में कुछ भी नया नहीं है, नई बोतल में पुरानी शराब की तरह है, फर्क सिर्फ इतना है कि गुजरात की स्टोरी चल कर दिल्ली आ गई है।

नवरात्रि को कहा जाता है नौ शक्तियों के मिलन का पर्व

शारदीय नवरात्रि की शुरुआत इस वर्ष 15 अक्तूबर से हुई है, जिनका समापन 23 अक्तूबर को होगा। नवरात्र के पहले स्वरूप में मां दुर्गा पर्वतराज हिमालय की पुत्री पार्वती के रूप में विराजमान हैं। नंदी नामक वृषभ पर सवार शैलपुत्री के दाहिने हाथ में त्रिशूल और बाएं हाथ में कमल का पुष्प है।

नौ दिनों तक चलने वाले नवरात्रि पर्व की शुरूआत हो चुकी है। आदि शक्ति दुर्गा की पूजा के इस पावन पर्व का विशेष महत्व माना जाता है। नवरात्रि के ये नौ दिन देवी दुर्गा के विभिन्न नौ स्वरूपों की उपासना के लिए निर्धारित हैं और इसीलिए नवरात्रि को नौ शक्तियों के मिलन का पर्व भी कहा जाता है। प्रतिपदा से शुरू होकर नवमी तक चलने वाले नवरात्र नवशक्तियों से युक्त हैं और हर शक्ति का अपना-अपना अलग महत्व है। शारदीय नवरात्रि की शुरुआत इस वर्ष 15 अक्तूबर से हुई है, जिनका समापन 23 अक्तूबर को होगा। नवरात्र के पहले स्वरूप में मां दुर्गा पर्वतराज हिमालय की पुत्री पार्वती के रूप में विराजमान हैं। नंदी नामक वृषभ पर सवार शैलपुत्री के दाहिने हाथ में त्रिशूल और बाएं हाथ में कमल का पुष्प है। शैलराज हिमालय की कन्या होने के कारण इन्हें शैलपुत्री कहा गया। इन्हें समस्त वन्य जीव-जंतुओं की रक्षक माना जाता है। दुर्गम स्थलों पर स्थित बस्तियों में सबसे पहले शैलपुत्री के मंदिर की स्थापना इसीलिए की जाती है कि वह स्थान सुरक्षित रह सके।

मां दुर्गा के दूसरे स्वरूप 'ब्रह्मचारिणी' को समस्त विद्याओं की ज्ञाता माना गया है। माना जाता है कि इनकी आराधना से अनंत फल की प्राप्ति और तप, त्याग, वैराग्य, सदाचार, संयम जैसे गुणों की वृद्धि होती है। 'ब्रह्मचारिणी' अर्थात् तप की चारिणी यानी तप का आचरण करने वाली। ब्रह्मचारिणी श्वेत वस्त्र पहने दाएं हाथ में अष्टदल की माला और बाएं हाथ में कमंडल लिए सुशोभित है। कहा जाता है कि देवी ब्रह्मचारिणी अपने पूर्व जन्म में पार्वती स्वरूप में थीं। वह भगवान शिव को पाने के लिए 1000 साल तक सिर्फ फल खाकर रहीं और 3000 साल तक शिव की तपस्या सिर्फ पेड़ों से गिरी पत्तियां खाकर की। इसी कड़ी तपस्या के कारण उन्हें ब्रह्मचारिणी कहा गया।

मां दुर्गा का तीसरा स्वरूप है चंद्रघंटा। शक्ति के रूप में विराजमान मां चंद्रघंटा मस्तक पर घंटे के आकार का आधा चंद्रमा है। देवी का यह तीसरा स्वरूप भक्तों का कल्याण करता है। इन्हें ज्ञान की देवी भी माना गया है।

बाघ पर सवार मां चंद्रघंटा के चारों तरफ अद्भुत तेज है। इनके शरीर का रंग स्वर्ण के समान चमकीला है। यह तीन नेत्रों और दस हाथों वाली हैं। इनके दस हाथों में कमल, धनुष-बाण, कमंडल, तलवार, त्रिशूल और गदा जैसे अस्त्र-शस्त्र हैं। कंठ में सफेद पुष्पों की माला और शीष पर रत्नजड़ित मुकुट विराजमान हैं। यह साधकों को चिरायु, आरोग्य, सुखी और सम्पन्न होने का वरदान देती हैं। कहा जाता है कि यह हर समय दुष्टों का संहार करने के लिए तत्पर रहती हैं और युद्ध से पहले उनके घंटे की आवाज ही राक्षसों को भयभीत करने के लिए काफी होती है।

चतुर्थ स्वरूप है कुष्मांडा। देवी कुष्मांडा भक्तों को रोग, शोक और विनाश से मुक्त करके आयु, यश, बल और बुद्धि प्रदान करती हैं। यह बाघ की सवारी करती हुई अष्टभुजाधारी, मस्तक पर रत्नजड़ित स्वर्ण मुकुट पहने उज्जवल स्वरूप वाली दुर्गा हैं। इन्होंने अपने हाथों में कमंडल, कलश, कमल, सुदर्शन चक्र, गदा, धनुष, बाण और अक्षमाला धारण की हैं। अपनी मंद मुस्कान से ब्रह्मांड को उत्पन्न करने के कारण इनका नाम कुष्मांडा पड़ा। कहा जाता है कि जब दुनिया नहीं थी तो चारों तरफ सिर्फ अंधकार था। ऐसे में देवी ने अपनी हल्की-सी हंसी से ब्रह्मांड की उत्पत्ति की। वह सूरज के घेरे में रहती हैं। सिर्फ उन्हीं के अंदर इतनी शक्ति है, जो सूरज की तपिश को सहन कर सकें। मान्यता है कि वही जीवन की शक्ति प्रदान करती हैं।

दुर्गा का पांचवां स्वरूप है स्कन्दमाता। भगवान स्कन्द (कार्तिकेय) की माता होने के कारण देवी के इस स्वरूप को स्कन्दमाता के नाम से जाना जाता है। यह कमल के आसन पर विराजमान हैं, इसलिए इन्हें पद्मासन देवी भी कहा जाता है। इनका वाहन भी सिंह है। इन्हें कल्याणकारी शक्ति की अधिष्ठात्री कहा जाता है। यह दोनों हाथों में कमलदल लिए हुए और एक हाथ से अपनी गोद में ब्रह्मस्वरूप सनतकुमार को थामे हुए हैं। स्कन्द माता की गोद में उन्हीं का सूक्ष्म रूप छह सिर वाली देवी का है।

दुर्गा मां का छठा स्वरूप है कात्यायनी। यह दुर्गा देवताओं और ऋषियों के कार्यों को सिद्ध करने लिए महर्षि कात्यायन के आश्रम में प्रकट हुईं। उनकी पुत्री होने के कारण ही इनका नाम कात्यायनी पड़ा। देवी कात्यायनी दानवों व पापियों का नाश करने वाली हैं। वैदिक युग में ये ऋषि-मुनियों को कष्ट देने वाले दानवों को अपने तेज से ही नष्ट कर देती थीं। यह सिंह पर सवार, चार भुजाओं वाली और सुसज्जित आभा मंडल वाली देवी हैं। इनके बाएं हाथ में कमल और तलवार व दाएं हाथ में स्वस्तिक और आशीर्वाद की मुद्रा है।

दुर्गा का सातवां स्वरूप कालरात्रि है, जो देखने में भयानक है लेकिन सदैव शुभ फल देने वाला होता है। इन्हें 'शुभंकारी' भी कहा जाता है। 'कालरात्रि' केवल शत्रु एवं दुष्टों का संहार करती हैं। यह काले रंग-रूप वाली, केशों को फैलाकर रखने वाली और चार भुजाओं वाली दुर्गा हैं। यह वर्ण और वेश में अर्द्धनारीश्वर शिव की तांडव मुद्रा में नजर आती हैं। इनकी आंखों से अग्नि की वर्षा होती है। एक हाथ से शत्रुओं की गर्दन पकड़कर दूसरे हाथ में खड़्ग-तलवार से उनका नाश करने वाली कालरात्रि विकट रूप में विराजमान हैं। इनकी सवारी गधा है, जो समस्त जीव-जंतुओं में सबसे अधिक परिश्रमी माना गया है।

नवरात्र के आठवें दिन दुर्गा के आठवें रूप महागौरी की उपासना की जाती है। देवी ने कठिन तपस्या करके गौर वर्ण प्राप्त किया था। कहा जाता है कि उत्पत्ति के समय 8 वर्ष की आयु की होने के कारण नवरात्र के आठवें दिन इनकी पूजा की जाती है। भक्तों के लिए यह अन्नपूर्णा स्वरूप हैं, इसलिए अष्टमी के दिन कन्याओं के पूजन का विधान है। यह धन, वैभव और सुख-शांति की अधिष्ठात्री देवी हैं। इनका स्वरूप उज्जवल, कोमल, श्वेतवर्णा तथा श्वेत वस्त्रधारी है। यह एक हाथ में त्रिशूल और दूसरे में डमरू लिए हुए हैं। गायन और संगीत से प्रसन्न होने वाली 'महागौरी' सफेद वृषभ यानी बैल पर सवार हैं। नवीं शक्ति 'सिद्धिदात्री' सभी सिद्धियां प्रदान करने वाली हैं, जिनकी उपासना से भक्तों की मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। कमल के आसन पर विराजमान देवी हाथों में कमल, शंख, गदा, सुदर्शन चक्र धारण किए हैं। सिद्धिदात्री देवी सरस्वती का भी स्वरूप हैं, जो श्वेत वस्त्रालंकार से युक्त महाज्ञान और मधुर स्वर से भक्तों को सम्मोहित करती हैं।

● योगेश कुमार गोयल

नवरात्रि के दौरान घर लेकर लिए पांच चीज, मां दुर्गा की होगी कृपा

नवरात्र के दौरान घर में कलश खरीदकर लाना चाहिए। कलश को समृद्धि और वैभव का प्रतीक माना जाता है। जातक श्रद्धानुसार चांदी, पीतल, तांबा या फिर मिट्टी का कलश खरीदकर ला सकते है। ऐसा करना घर की सुख शांति को बनाए रखने में मददगार होता है। इस बार शारदीय नवरात्रों की शुरुआत 15 अक्टूबर से होने वाली है। नवरात्र के दौरान माता रानी की कृपा पाने का अच्छा मौका होता है। नौ दिनों तक माता रानी के विभिन्न रूपों की पूजा अर्चना की जाती है। नवरात्र में नौ दिनों माता रानी के अलग अलग रूप पूजे जाते है। इस दौरान कुछ खास सामान की खरीददारी भी की जाती है। अगर भक्त अपने घर पर नवरात्र के दौरान कुछ खास सामान खरीदकर लाते हैं तो उनपर माता रानी की कृपा बरसती रहती है। उन भक्तों के घर में सुख, समृद्धि और धन का वास सदैव रहता है। बता दें कि नवरात्र के दौरान घर में कलश खरीदकर लाना चाहिए। कलश को समृद्धि और वैभव का प्रतीक माना जाता है। जातक श्रद्धानुसार चांदी, पीतल, तांबा या फिर मिट्टी का कलश खरीदकर ला सकते है। ऐसा करना घर की सुख शांति को बनाए रखने में मददगार होता है। नवरात्र के दिनों में माता रानी के पदचिन्हों को भी खरीदना शुभ माना जाता है। ऐसा करने से मां दुर्गा की कृपा बनी रहती है। माता रानी के पदचिन्हों को खरीदकर पूजा स्थल पर रखना चाहिए। ऐसा करने से माता रानी का वास घर में हमेशा रहता है। शत्रुओं का खतरा भी घर से टलता है।

नवरात्रि में क्यों किया जाता है कन्या पूजन, क्या है इसका महत्व

नवरात्रि के पावन महिने में मां दुर्गा की पूजा और उनके आगमन की तिथि के बाद अगर कोई अधिक महत्वपूर्ण तिथि है, तो वो है नवरात्रि का आखिरी दिन, जिसे दुर्गा अष्टमी और नवमी के रूप में मनाया जाता है। इस दिन, कन्याओं की पूजा करने की अद्भुत परंपरा है, जिसका महत्व बहुत अधिक है. आइए जानें कन्या पूजन का महत्व और प्राचीन कथाओं के साथ इसका मतलब.

कन्या पूजन का इतिहास

कन्या पूजन का महत्व प्राचीन शास्त्रों में उल्लिखित है, और यह एक प्राचीन कथा से जुड़ा हुआ है. शास्त्रों के अनुसार, इंद्रदेव ने माता दुर्गा को प्रसन्न करने के लिए उपाय पूछा था, और उन्हें ब्रह्मा देव ने सूझाव दिया कि कुमारी कन्याओं का पूजन करें और उनको भोजन कराएं. इस प्रथा के बाद से ही नवरात्रि के दौरान माता दुर्गा को प्रसन्न करने के लिए कन्या पूजन कराया जाता है, और उनको भोजन कराया जाता है.

नवरात्रि में कन्या पूजन का महत्व

नवरात्रि के आखिरी दिन को कन्या पूजन का विशेष महत्व होता है, और इसके पीछे कई कारण हैं. शास्त्रों में इसे माता दुर्गा की कृपा प्राप्त करने का एक उपाय माना गया है. कन्याओं की पूजा करने से माता रानी की कृपा उनके भक्तों पर बनी रहती है.

कन्या पूजन के महत्वपूर्ण दिन

नवरात्रि के दौरान कन्या पूजन का विशेष महत्व होता है, लेकिन दुर्गा अष्टमी और नवमी के दिन इसका महत्व और बढ़ जाता है. इन दिनों कन्याओं को पूजन कराकर उनको भोजन कराने से माता दुर्गा प्रसन्न होती है और उनके भक्तों को आशीर्वाद मिलता है.

कन्या पूजन का संदेश

कन्या पूजन का संदेश है कि हर स्त्री में देवी की भावना होती है, और हमें सभी स्त्रीओं का सम्मान करना चाहिए. यह एक सामाजिक संदेश देता है कि हमें स्त्रीओं का सम्मान करना चाहिए और उनके साथ सामंजस्य बनाना चाहिए.

अलग अलग आयु के महत्व

कन्या पूजन के आला अलग आयु के महत्व होते हैं, और इसके साथ-साथ हर आयु की कन्या के लिए एक विशेष महत्व होता हैं. ज्योतिषाचार्य द्वारा इन विभिन्न आयु की कन्याओं की महत्वपूर्ण बातें बताई जाती हैं,

हर आयु की कन्या का होता है महत्व

- साल की कन्या को कुमारी कहा जाता है. इनकी पूजा से दुख और दरिद्रता खत्म होती है.
- साल की कन्या त्रिमूर्ति मानी जाती है. त्रिमूर्ति के पूजन से धन-धान्य का आगमन और परिवार का कल्याण होता है.
- साल की कन्या कल्याणी मानी जाती है. इनकी पूजा से सुख-समृद्धि मिलती है.
- साल की कन्या रोहिणी माना गया है. इनकी पूजन से रोग-मुक्ति मिलती है.
- साल की कन्या कालिका होती है। इनकी पूजा से विद्या और राजयोग की प्राप्ति होती है.
- साल की कन्या को चंडिका माना जाता है. इनकी पूजा से ऐश्वर्य मिलता है.
- साल की कन्या शांभवी होती है. इनकी पूजा से लोकप्रियता प्राप्त होती है.
- साल की कन्या दुर्गा को दुर्गा कहा गया है. इनकी पूजा से शत्रु विजय और असाध्य कार्य सिद्ध होते हैं.
- साल की कन्या सुभद्रा होती है। सुभद्रा के पूजन से मनोरथ पूर्ण होते हैं और सुख मिलता है.

नव कुमारियां भगवती का स्वरूप हैं मां दुर्गा, सभी देवताओं को इनसे ही मिलती है शक्ति

जो देवी पुण्यात्माओं के घरों में स्वयं ही लक्ष्मी रूप से, पापियों के यहां दरिद्रता रूप से, शुद्धान्त: करण वाले पुरुषों के हृदयों में बुद्धिरूप से सत्पुरुषों में श्रद्धारूप से और कुलीन मनुष्यों में लज्जा रूप से निवास करती है, उन आप भगवती को हम सब श्रद्धापूर्वक नमन करते है हे पराम्बा! समस्त विश्व का कल्याण कीजिए। नवरात्र को आद्याशक्ति की आराधना का सर्वश्रेष्ठ काल माना गया है। संवत्सर (वर्ष) में चार नवरात्र होते है। चैत्र, आषाढ़, आश्विन और माघ मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से नवमी पर्यन्त नौ दिन नवरात्र कहलाते है। इन चार नवरात्रों में दो गुप्त और दो प्रकट, चैत्र का नवरात्र वासंतिक और, आश्विन का नवरात्र शारदीय नवरात्र कहलाता है। वासंतिक नवरात्र के अंत में रामनवमी आती है और शारदीय नवरात्र के अन्त में दुर्गा महानवमी इसलिए इन्हें क्रमश: राम नवरात्र और देवी नवरात्र भी कहते है। किंतु शाक्तों की साधना में शारदीय नवरात्र को विशेष महत्व दिया गया है। दुर्गा शप्तशती में देवी स्वयं कहती हैं:

शरत-काले महापूजा क्रियते या च वार्षिकी।
तस्यां ममैतन्माहात्मयं श्रुत्वा भक्ति समन्वित:।।
सर्वाबाधा विनिर्मुक्तो धन-धान्य सुतान्वित:।
मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशय:।।

अर्थात शरदऋतु में जो वार्षिक महापूजा की जाती है, उस अवसर पर जो मेरे महात्म्य (दुर्गा शप्तशती) को श्रद्धा-भक्ति के साथ सुनेगा, वह मनुष्य मेरी अनुकंपा से सब बाधाओं से मुक्त होकर धन, धान्य एवं पुत्रादि से सम्पन्न होगा। इसमें तनिक भी संदेह नही है। सम्भवत: इसी कारण बंगाल में दुर्गा पूजा मुख्यत: शारदीय नवरात्र में ही होती है। शारदीय नवरात्र-पूजा वैदिक काल में प्रचलित थी। संसार के सर्वाधिक प्राचीन ग्रंथ ऋग्वेद की प्रारंभिक ऋचा में इसकी चर्चा है, जो आद्या महाशक्ति का ही एक रूप है। ऋग्वेद में शारदीय शक्ति दुर्गा पूजा का उल्लेख मिलता है। बंगाल में विशाल मृण्मयी प्रतिमाओं में सप्तमी, अष्टमी और महानवमी को दुर्गापूजा होती है। दशमी को प्रतिमाएं नदी में या तालाब में विसर्जित कर दी जाती है। जगन्माता को यहां कन्या रूप से अपनाया गया है, मानो विवाहिता पुत्री पति के घर से पुत्र सहित तीन दिन के लिए माता-पिता के पास आती है। मां दस भुजाओं में सभी प्रकार के आयुध धारण कर शेर पर सवार होकर, महिषासुर के कंधे पर अपना एक चरण रखे त्रिशूल से उसका वध कर रही होती है। वस्तुत: भारत के अन्य भागों में और समग्र पृथ्वी भर में इतना प्रकांड उत्सव बंगाल के बाहर कहीं नहीं होता। शारदीय शक्ति पूजा को विशेष लोकप्रियता त्रेतायुग में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम चंद्र के अनुष्ठान से भी मिली। देवी भागवत में भगवान श्रीराम द्वारा किए गए शारदीय नवरात्र के व्रत तथा शक्ति पूजन का सुविस्तृत वर्णन मिलता है। इसके अनुसार, श्रीराम की शक्ति-पूजा संपन्न होते ही जगदंबा प्रकट हो गई थीं। शारदीय नवरात्र के व्रत का पारण करके दशमी के दिन श्रीराम ने लंका पर चढ़ाई कर दी। कालांतर में रावण का वध करके कार्तिक कृष्ण अमावस्या को श्रीरामचंद्र जी भगवती सीता को लेकर अयोध्या वापस लौट आए। आदि शंकराचार्य विरचित-विश्व साहित्य के अमूल्य एवं दिव्यतम ग्रन्थ सौन्दर्य लहरी में माता पार्वती के पूछने पर भगवान शंकर नवरात्र का परिचय इस प्रकार देते है:

नवशक्ति भि: संयुक्तम् नवरात्रंतदुच्यते।
एकैवदेव देवेशि नवधा परितिष्ठता''।।

अर्थात् नवरात्र नौ शक्तियों से संयुक्त है। नवरात्र के नौ दिनों में प्रतिदिन एक शक्ति की पूजा का विधान है। सृष्टि की संचालिका कही जाने वाली आदिशक्ति की नौ कलाएं (विभूतियां) नवदुर्गा कहलाती है। मार्कण्डेय पुराण में नवदुर्गा का शैलपुत्री, बह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कूष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धिदात्री के रूप में उल्लेख मिलता है। देवी भागवत में नवकन्याओं को नवदुर्गा का प्रत्यक्ष विग्रह बताया गया है। उसके अनुसार नव कुमारियां भगवती के नवस्वरूपों की जीवंत मूर्तियां हैं। इसके लिए दो से दस वर्ष तक की कन्याओं का चयन किया जाता है। दो वर्ष की कन्या कुमारिका कहलाती है, जिसके पूजन से धन-आयु-बल की वृद्धि होती है। तीन वर्ष की कन्या त्रिमूर्ति कही जाती है। इसके पूजन से घर में सुख-समृद्धि का आगमन होता है। चार वर्ष की कन्या कल्याणी के पूजन से विवाहादि मंगल कार्य संपन्न होते है। पांच वर्ष की कन्या रोहिणी की पूजा से स्वास्थ्य लाभ होता है। छह वर्ष की कन्या कालिका के पूजन से शत्रु का दमन होता है। आठ वर्ष की कन्या शांभवी के पूजन से दु:ख-दरिद्रता का नाश होता है। नौ वर्ष की कन्या दुर्गा पूजन से असाध्य रोगों का शमन और कठिन कार्य सिद्ध होते हैं। दस वर्ष की कन्या सुभद्रा पूजन से मोक्ष की प्राप्ति होती है।

● आचार्य कृष्णदत्त शर्मा

बंगाल में नवरात्रि की होती है अलग धूम, आखिरी के 4 दिन मां दुर्गा की होती है विशेष पूजा

हिन्दू धर्म में शारदीय नवरात्रि के महापर्व को बड़े त्योहारों में से एक माना जाता है। नवरात्रि के 9 दिनों में मां दुर्गा के 9 अलग-अलग स्वरुपों की पूजा की जाती है। शारदीय नवरात्रि का यह त्योहार पूरे 9 दिन तक मनाया जाता है, लेकिन बंगाल में नवरात्रि की अलग ही धूम देखने को मिलती है। आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको बंगाल की दुर्गा पूजा की विशेषता के बारे में बताने जा रहे हैं। हिन्दू धर्म में दुर्गा पूजा का विशेष महत्व होता है। नवरात्रि का महापर्व सभी राज्यों में अलग-अलग तरीके से मनाया जाता है। कहीं दुर्गा पूजा का आयोजन होता है तो कहीं गरबा खेलकर इस पर्व को मनाया जाता है। वहीं बंगाल में नवरात्रि के आखिरी 4 दिन काफी धूमधाम से मनाए जाते हैं। नवरात्रि के इन चार दिनों में बंगाल की महिलाएं पारंपरिक साड़ी पहनकर ढाक की धुन पर एक प्रकार का नृत्य करती हैं। इसके अलावा बंगाल जगह-जगह पर भव्य पंडाल लगाए जाते हैं। मां दुर्गा को तमाम तरह को पकवान अर्पित किए जाते हैं। साथ ही कई कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं।

विशेष होती है बंगाल की दुर्गा पूजा- दुर्गा पूजा का महापर्व पश्चिम बंगाल में बहुत ही हर्षोल्लास से मनाया जाता है। इस दौरान यहां पर बड़े-बड़े पंडाल सजाए जाते हैं। साथ ही मां दुर्गा की पूजा-आरती बड़े विधि विधान से की जाती है। लोग दूर दूर से बंगाल की दुर्गा पूजा देखने के लिए यहां पहुंचते हैं। बंगाल में नवरात्रि के छठें दिन से दुर्गा पूजा शुरू होती है और दस दिन तक चलती है। बंगाल के हिन्दुओं के लिए मां दुर्गा और काली की आराधना सबसे बड़ा पर्व है। बंगाल में दशहरे का पर्व भी सबसे ज्यादा अलग होता है।

बंगाल की दुर्गा पूजा की विशेषता - पंचमी तिथि से दशमी तक बंगाल में विशेष तरीके से दुर्गा पूजा का आयोजन किया जाता है। इन पांच दिनों में बंगाल में कई तरह के अनुष्ठान जैसे, महालया, चाला, पुष्पांजलि, सिंदूर खेला, धुनुची नृत्य और पारा और बारिर का आयोजन किया जाता है।

राष्ट्रीय/अंतरराष्ट्रीय
प्रमुख समाचार

अडानी मामले में समय पर जांच पूरी करने कांग्रेस का सेबी से आग्रह

नईदिल्ली। कांग्रेस ने गुरुवार को सेबी से दृढ़ रहने और अडानी मामले में अपनी जांच समय पर पूरी करने का आग्रह किया। यहां तक कि उसने दोहराया कि केवल जेपीसी जांच ही मुद्दे के पूर्ण दायरे की जांच कर सकती है। अडानी समूह के खिलाफ स्टॉक हेरफेर और लेखांकन धोखाधड़ी पर एक पोस्ट में कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने कहा कि हाल ही में संगठित अपराध और भ्रष्टाचार रिपोर्टिंग प्रोजेक्ट (ओसीसीआरपी) को इस बात के पुख्ता सबूत मिले कि अडानी के सहयोगी विदेशी टैक्स हेवन में अपारदर्शी शेल कंपनियों को नियंत्रित कर रहे थे, जिन्होंने अदानी समूह की कंपनियों में बड़ी हिस्सेदारी जमा कर ली थी। यह सब सेबी नियमों के घोर उल्लंघन में किया गया था। उन्होंने बताया कि फाइनेंशियल टाइम्स और गार्जियन जैसे प्रमुख वैश्विक पत्रों ने इस कहानी को विस्तार से कवर किया है। रमेश ने कहा कि अडानी समूह और भाजपा में उसके गुर्गों ने ओसीसीआरपी को सोरोस-वित्त पोषित हितों के रूप में बदनाम करने का प्रयास किया।

शरद पवार के फिलिस्तीन वाले बयान पर सीएम हिमंत का तंज

नई दिल्ली। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी प्रमुख शरद पवार इस समय आतंकवादी संगठन हमास के खिलाफ युद्ध में इजरायल के साथ खड़े होने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की आलोचना करने वाली अपनी टिप्पणी को लेकर राजनीतिक हंगामे के बीच में हैं। पवार की टिप्पणी पर असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि ऐसा लगता है कि पवार अपनी बेटी सुप्रिया सुले को हमास के लिए लड़ने के लिए गाजा भेजेंगे। इजराइल-फिलिस्तीन मुद्दे पर भारत की स्थिति के संबंध में राकांपा नेता शरद पवार की कथित टिप्पणियों के बारे में पूछे जाने पर सरमा ने जवाब दिया, मुझे लगता है कि शरद पवार सुप्रिया (सुले) को हमास के लिए लड़ने के लिए गाजा भेजेंगे। इससे पहले हमास द्वारा किए गए रॉकेट हमलों पर इजरायल के साथ एकजुटता व्यक्त करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 7 अक्टूबर को कहा था कि भारत के विचार और प्रार्थनाएं निर्दोष पीड़ितों और उनके परिवारों के साथ हैं।

हिमंत बिस्वा सरमा के बयान पर सुप्रिया ने दी प्रतिक्रिया

मुंबई। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी प्रमुख (शरद पवार गुट) सांसद सुप्रिया सुले ने गुरुवार को असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा के उस बयान पर प्रतिक्रिया दी, जिसमें उन्होंने कहा था कि ऐसा लगता है कि शरद पवार अपनी बेटी सुप्रिया सुले को हमास के लिए लड़ने के लिए गाजा भेजेंगे। मीडिया से मुखातिब होते हुए सुले ने कहा, मैं आश्चर्यचकित हूं क्योंकि हिमंत बिस्वा सरमा का डीएनए मेरे जैसा ही है, वह मूल रूप से कांग्रेस से हैं। उनका और मेरा कांग्रेसी डीएनए एक ही है, आप जानते हैं कि भाजपा महिलाओं के प्रति किस तरह अपमानजनक है। अपनी बात को जारी रखते हुए उन्होंने आगे कहा, लेकिन मुझे हिमंत बिस्वा सरमा से उम्मीदें थीं। मैं आश्चर्यचकित हूं कि महिलाओं के प्रति यह बदलाव और दृष्टिकोण कैसे आया है, शायद भाजपा में जाना उन्हें थोड़ा नागवार गुजर रहा है, भाजपा आईटी सेल को शरद पवार ने जो कहा है उसे ध्यान से समझने और सुनने की जरूरत है।

मुख्यमंत्री हिमंत जिस पार्टी से हैं वह हमास से कम नहीं है : राउत

मुंबई। शिवसेना (उद्धव गुट) के नेता संजय राउत ने बेहद विवादित बयान देते हुए केंद्र और कई राज्यों में शासन करने वाली भारतीय जनता पार्टी की तुलना फिलिस्तीन समर्थक हमास से करके नया सियासी विवाद खड़ा कर दिया है। सूत्रों के अनुसार संजय राउत ने इजराइल-हमास युद्ध पर एनसीपी प्रमुख शरद पवार के बयान पर असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा की टिप्पणी पर प्रतिक्रिया देते हुए गुरुवार को कहा कि असम के मुख्यमंत्री सरमा जिस पार्टी में हैं, वह हमास से कम नहीं है। उन्होंने कहा, वह (हिमंत बिस्वा सरमा) जिस पार्टी में हैं क्या वह हमास से कम है। वे लोग विपक्ष को खत्म करने के लिए केंद्रीय एजेंसियों का दुरुपयोग कर रहे हैं। पहले तो उन्हें इतिहास पढ़ना और समझना चाहिए। वह भाजपा का हिस्सा हैं और उन्हें पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के बारे में जानना चाहिए कि वो फ़िलिस्तीन-इज़राइल पर कहां खड़े थे।

देवेगौड़ा ने कर्नाटक अध्यक्ष को जेडीएस से किया बाहर

बेंगलुरु। जनता दल (सेक्युलर) के अध्यक्ष एचडी देवेगौड़ा ने गुरुवार को घोषणा की कि पार्टी ने कर्नाटक जेडीएस अध्यक्ष सीएम इब्राहिम को निष्कासित कर दिया है। सर्वसम्मत निर्णय में एचडी कुमारस्वामी को कर्नाटक में जनता दल (सेक्युलर) का नया प्रदेश अध्यक्ष चुना गया है। यह निर्णय जेडीएस नेतृत्व के भीतर आंतरिक विचार-विमर्श और परामर्श की एक श्रृंखला के बाद लिया गया। बैठक के बाद एचडी देवेगौड़ा ने स्थिति स्पष्ट करते हुए कहा, हमने जेडीएस कोर कमेटी के सदस्यों की बैठक बुलाई, चर्चा की, सभी की राय ली और उसके बाद सीएम इब्राहिम को प्रदेश अध्यक्ष पद से हटा दिया। सीएम इब्राहिम ने फैसले पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए जोरदार ढंग से कहा था, मैं पार्टी का प्रदेश अध्यक्ष हूं, तो मुझे पार्टी क्यों छोड़नी चाहिए? उनके इस रुख से देवेगौड़ा और एचडी कुमारस्वामी समेत जेडीएस के अन्य नेता हैरान रह गए।

मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव में एक भी सीट नहीं मिलने से सपा मुखिया नाराज

नईदिल्ली। मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव में 'इंडियन नेशनल इंक्लूसिव डेवलपमेंटल एलाइंस' (इंडिया) गठबंधन के तहत कांग्रेस द्वारा सीट नहीं दिए जाने से व्यथित समाजवादी पार्टी (सपा) के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने बृहस्पतिवार को कहा कि अगर उन्हें पता होता कि विपक्ष का गठबंधन विधानसभा स्तर के चुनाव के लिए नहीं है तो उनकी पार्टी मध्य प्रदेश में गठबंधन के लिए बातचीत ही नहीं करती। उन्होंने यह कहा कि अगर सिर्फ लोकसभा चुनाव के लिए तालमेल की बात होगी तो उस पर ही विचार किया जाएगा। यादव ने शाहजहांपुर में पार्टी के कार्यक्रम में शिरकत करने के लिए लिए जाते वक्त रास्ते में सीतापुर में संवाददाताओं से बातचीत में विपक्षी 'इंडिया' गठबंधन में शामिल होने के बावजूद मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव के लिए पार्टी द्वारा बुधवार को 22 और सीट पर प्रत्याशी घोषित किए जाने के बारे में पूछे जाने पर कहा कि हाल में मध्य प्रदेश के एक पूर्व मुख्यमंत्री ने बैठक बुलाई थी और सपा के लोगों से बातचीत की थी।उन्होंने कहा, '' उस बैठक में सपा नेताओं ने मध्य प्रदेश में अपनी पार्टी के

पिछले प्रदर्शन के बारे में बताया था। उस वक्त उन्हें आश्वासन दिया गया था कि गठबंधन के तहत सपा को छह सीट देने पर विचार किया जाएगा लेकिन जब प्रत्याशियों के नाम घोषित किए गए तो समाजवादी पार्टी को एक भी सीट नहीं दी गई। '' उन्होंने कहा, अगर यह मुझे पहले दिन पता होता कि विधानसभा स्तर पर 'इंडिया' का कोई गठबंधन नहीं है तो हमारी पार्टी के लोग उस बैठक में नहीं जाते, न हम सूची देते और न ही कांग्रेस के लोगों का फोन उठाते। उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री यादव ने कहा, अगर उन्होंने (कांग्रेस वालों ने) यही बात कही है कि गठबंधन नहीं है तो हम स्वीकार करते हैं। जैसा व्यवहार समाजवादी पार्टी के साथ होगा, वैसा ही व्यवहार उन्हें यहां (उत्तर प्रदेश) पर देखने को मिलेगा।

उन्होंने कहा, प्रदेश स्तर पर कोई गठबंधन नहीं है, तो नहीं है। हमने इसे स्वीकार कर लिया, इसीलिए हमने पार्टी के टिकट घोषित कर दिए। इसमें हमने क्या गलत किया है? सपा अध्यक्ष ने एक सवाल पर किसी का नाम लिए बगैर कहा, मैं कांग्रेस के बड़े नेताओं से अपील करूंगा कि अपने छोटे नेताओं से इस तरह के बयान न दिलवाएं। समाजवादी पार्टी ने बुधवार को मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव के लिए अपने 22 और उम्मीदवारों के नाम घोषित कर दिए। पार्टी अब तक कुल 31 सीटों पर अपने प्रत्याशी खड़े कर चुकी है। आगामी लोकसभा चुनाव में भाजपा के खिलाफ मजबूत लामबंदी जाहिर करने की कोशिश के तहत इंडिया गठबंधन बनाया गया है, जिसमें कांग्रेस के साथ-साथ सपा भी शामिल है लेकिन मध्य प्रदेश में कांग्रेस द्वारा सपा को एक भी सीट नहीं दिए जाने के बाद दोनों पार्टियों बीच तल्खी जाहिर हो गई है।

तेलंगाना का नियंत्रण एक परिवार के पास: राहुल

बीआरएस पर बरसे राहुल तो कविता बोलीं- उन्हें गुमराह किया गया

हैदराबाद। राहुल गांधी तेलंगाना दौरे पर हैं। गुरुवार को उन्होंने तेलंगाना के भुपालपल्ली इलाके में विजयभेरी यात्रा निकाली। इस दौरान जनसभा को संबोधित करते हुए राहुल गांधी ने बीआरएस सरकार पर तीखा हमला बोला। राहुल गांधी ने इस दौरान जातीय सर्वे की मांग भी दोहराई और आरोप लगाया कि भाजपा और बीआरएस सरकार इस पर चुप्पी साधे हुए हैं। उन्होंने कहा कि ऐसा लग रहा है कि केसीआर (तेलंगाना विधानसभा) चुनाव हार जाएंगे। केसीआर चुनाव में हारने वाले हैं। यह लड़ाई राजा और प्रजा के बीच की लड़ाई है। उन्होंने कहा, आपने (लोगों ने) सोचा था कि तेलंगाना में जनता का शासन होगा। हालांकि, केवल एक ही परिवार तेलंगाना पर शासन कर रहा है और राज्य पर उसका पूरा नियंत्रण है।

राहुल गांधी ने कहा कि जातीय सर्वे देश के लिए एक एक्स-रे की तरह काम करेगा। जब मैं जातीय सर्वे की बात करता हूं तो ना तो पीएम और ना ही तेलंगाना सीएम इस पर कुछ बोल रहे हैं। तेलंगाना राज्य का पूरा कंट्रोल एक परिवार के हाथ में है और देश में सबसे ज्यादा भ्रष्टाचार इसी राज्य में है। भाजपा-बीआरएस और एआईएमआईएम जैसी पार्टियां कांग्रेस पर हमला कर रही हैं।

राहुल गांधी ने कहा कि तेलंगाना के लोगों से मेरा और मेरे परिवार का जो रिश्ता है, वो राजनैतिक रिश्ता नहीं है। यह मोहब्बत का रिश्ता है। उन्होंने कहा कि जब नरेंद्र मोदी यहां आएंगे और केसीआर भाषण देगें तो आप उनसे एक सवाल पूछना- आप तेलंगाना का एक्स-रे कब कराएंगे? तेलंगाना के लोगों को उनके धन के बारे में सच्चाई कब बताएंगे? उन्होंने कहा कि कर्नाटक में महिलाएं फ्री बस यात्रा करती है। हर महीने महिलाओं और किसानों के खातों में पैसे आते हैं। छत्तीसगढ़ में हम किसानों को धान के लिए देश में सबसे ज्यादा पैसे देते हैं। राजस्थान में हमने चिरंजीवी योजना के तहत 25

लाख तक इलाज मुफ्त दिया है। इसी तरह तेलंगाना की महिलाओं को महालक्ष्मी योजना के तहत 2,500 रुपए मिलेगा, 500 में गैस सिलेंडर मिलेगा और बस में फ्री यात्रा मिलेगी।

वहीं राहुल गांधी के आरोपों पर बीआरएस की तरफ से उनकी पार्टी की एमएलसी के कविता ने राहुल गांधी पर पलटवार किया। राहुल गांधी के भ्रष्टाचार के आरोपों पर बीआरएस नेता और सीएम के चंद्रशेखर राव की बेटी के कविता ने कहा कि कांग्रेस नेता राहुल गांधी तेलंगाना में हैं और वह तेलंगाना सरकार पर एक लाख करोड़ रुपये के भ्रष्टाचार के आरोप लगा रहे हैं लेकिन उनकी स्क्रिप्ट लिखने वाले ने ही उन्हें गुमराह किया है। राहुल गांधी को राज्य के बारे में चिंता करने की जरूरत नहीं है। हमें पता है कि राज्य कैसे चलाना है। हम प्रति व्यक्ति आय, धान उत्पादन और सिंचाई प्रोजेक्ट्स के मामले में देश में नंबर एक राज्य हैं।

के कविता ने कांग्रेस की वंशवादी राजनीति पर हमला बोलते हुए कहा कि प्रियंका गांधी जो कि मोतीलाल नेहरू की परपोती हैं। जवाहर लाल नेहरू की परपोती हैं। इंदिरा गांधी की पोती हैं और राजीव और सोनिया गांधी की बेटी हैं, वह वंशवादी राजनीति के बारे में बात कर रहे हैं। चुनाव प्रचार के दौरान मैंने ये सबसे मजेदार बात सुनी। उन्हें शीशे के घरों में बैठकर दूसरों पर पत्थर नहीं फेंकने चाहिए।

युवाओं को साधने में जुटी मध्य प्रदेश की बीजेपी सरकार

मध्यप्रदेश में जैसे-जैसे विधानसभा चुनाव का समय पास आता जा रहा है। वैसे-वैसे राजनीतिक दल जनता को रिझाने के प्रयास में जुट गए हैं। इसी क्रम में बीजेपी सरकार युवाओं को अपने पक्ष में करने में जुट गई है। बता दें कि मध्यप्रदेश के सीएम शिवराज सिंह चौहान ने %सीखो कमाओ योजना% की है। इसके लिए वह राजधानी भोपाल पहुंचे थे। बता दें कि सीएम द्वारा शुरू की गई इस योजना में अभी तक 8 लाख से ज्यादा युवाओं ने पंजीकरण करवाया है।इस योजना के तहत सीएम शिवराज सिंह चौहान ने युवाओं को अनुबंध पत्र वितरित किया। बता दें कि %सीखो कमाओ योजना% के तहत 12वीं, आईटीआई या उच्च शैक्षणिक योग्यता वाले युवाओं को उद्योग उन्मुख प्रशिक्षण दिलाए जाने का काम किया जा रहा है। प्रदेश के युवा सरकार की मदद से औद्योगिक प्रतिष्ठान से ट्रेनिंग लेंगे। इस योजना के तहत युवाओं को काम सिखाने के बदले 8 से 10 हज़ार रुपए स्टाइपेंड के तौर पर भी दिये जाएंगे। काम सीखने के बाद प्रदेश के युवा खुद का स्वरोज़गार शुरू कर सकते हैं। साथ ही उद्योगों में परमानेंट जॉब भी मिल सकेगी।

मुख्यमंत्री द्वारा शुरू की गई इस योजना के तहत 18 से 29 साल तक के राज्य के युवाओं को मौका दिया जाएगा। इस स्कीम के तहत चयनित युवाओं को %लर्न एंड अर्न% की तर्ज पर %ऑन जॉब ट्रेनिंग% की सुविधा उपलब्ध करवाई जाएगी। इस प्रशिक्षण यानी की ट्रेनिंग के दौरान युवाओं को 8-10 हजार रुपए का स्टायपेंड सरकार की तरफ से दिया जाएगा। इस योजना में अभी तक 8 लाख से ज्यादा युवाओं का पंजीयन हो चुका है।

बता दें कि इस योजना के तहत पंजीकृत युवाओं के लिए 16 हजार 450 प्रतिष्ठानों ने करीब 68 हजार 984 पदों पर वैकेंसी निकाली है। मध्यप्रदेश में चुनाव का समय नजदीक आता जा रहा है। ऐसे में प्रदेश की बीजेपी सरकार युवाओं को साधने के लिए एक के बाद एक योजनाएं ला रही है। क्योंकि इस बार के चुनाव में रोजगार एक अहम मुद्दा बनकर उभरा है। ऐसे में सीएम शिवराज चुनाव से पहले ही युवाओं को साधने में जुट गए हैं। बताया जा रहा है कि सीएम शिवराज की यह योजना राज्य के युवाओं के रोजगार के लिए नए अवसर लेकर आएगी।

खेल
प्रमुख समाचार

बेंगलुरु में ऑस्ट्रेलिया और पाकिस्तान का टक्कर आज

बेंगलुरु। आईसीसी 2023 विश्व कप के मुकाबले में शुक्रवार को दो पूर्व विश्व टीम में टक्कर है। ऑस्ट्रेलिया और पाकिस्तान 20 अक्टूबर को एकदिवसीय विश्व कप 2023 में आमने-सामने होंगे। एकदिवसीय विश्व कप में उनके रिकॉर्ड में कड़ी प्रतिस्पर्धा है।

पांच बार के विजेता ऑस्ट्रेलिया का मुकाबला बेंगलुरु केएम चिन्नास्वामी स्टेडियम में चल रहे आईसीसी विश्व कप 2023 के 18वें मैच में 1992 के विजेता पाकिस्तान से होगा। पेंट कमिंस की अगुवाई वाला ऑस्ट्रेलिया श्रीलंका के खिलाफ प्रभावशाली परिणाम के बाद लगातार दूसरी जीत हासिल करना चाहेगा, जबकि पाकिस्तान भारत के खिलाफ हार से वापसी करना चाहेगा।

वनडे क्रिकेट में दोनों टीमों के बीच आमने-सामने की भिड़ंत का नेतृत्व ऑस्ट्रेलिया कर रहा है। दोनों पक्षों ने अपनी 48 साल की एकदिवसीय क्रिकेट प्रतिद्वंद्विता में कुल 107 मैच खेले हैं। इन मैचों में ऑस्ट्रेलिया का पाकिस्तान पर जीत-हार का रिकॉर्ड 69-34 है, जिसमें एक मैच टाई रहा और तीन मैचों का कोई नतीजा नहीं निकला। वनडे वर्ल्ड कप के इतिहास में दोनों टीमें 10 बार आमने-सामने हुई हैं। मेगा इवेंट में ऑस्ट्रेलिया पाकिस्तान से 6-4 से आगे है।

पाकिस्तान- बाबर आजम (कप्तान), शादाब खान, फखर जमां, इमाम उल -हक, अब्दुल्ला शफीक, मोहम्मद रिजवान, सऊद शकील, इफ्तिखार अहमद, सलमान अली आगा, मोहम्मद नवाज, उसामा मीर, हारिस राऊफ, हसन अली, शाहीन अफरीदी, मोहम्मद वसीम।

ऑस्ट्रेलिया- पैट कमिंस (कप्तान), स्टीव स्मिथ, एलेक्स कारी, जोश इंगलिस, सीन एबोट, एश्टोन एगर, कैमरन ग्रीन, जोश हेजलवुड, ट्रेविस हेड, मिचेल मार्श, ग्लेन मैक्सवेल, मार्कस स्टोइनिस, डेविड वॉर्नर, एडम जाम्पा, मिचेल स्टार्क।

आर्थिक/वाणिज्य/विज्ञान/
प्रमुख समाचार

बाजार में दूसरे दिन भी गिरावट सेंसेक्स 248 अंक टूटा

नईदिल्ली। भारतीय शेयर बाजार में आज यानी गुरुवार को गिरावट देखने को मिल रही है। बीएसई का 30 शेयरों वाला मानक सूचकांक सेंसेक्स 247.78 अंक यानी 0.38 फीसदी की गिरावट के साथ 65,629.24 अंक पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान सेंसेक्स 65,869.65 की ऊंचाई तक गया और नीचे में 65,343.50 तक आया। वहीं, दूसरी तरफ नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी में भी 46.40 अंक यानी 0.24 फीसदी की गिरावट दर्ज की गई। निफ्टी दिन के अंत में 19,624.70 अंक पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान निफ्टी 19,681.80 की ऊंचाई तक गया और नीचे में 19,512.35 तक आया। 18 अक्टूबर को शेयर बाजार में भारी गिरावट देखने को मिली थी। दोनों फ्रंटलाइन इंडेक्स सेंसेक्स और निफ्टी में लाल निशान में बंद हुए थे। बीएसई सेंसेक्स 551 अंक कमजोर हुआ था। वहीं, निफ्टी में भी 144 अंक लुढ़क गया था।

ब्लू जेट हेल्थकेयर ने तय किया आईपीओ का प्राइस बैंड

नईदिल्ली। दवाओं का कच्चा माल बनाने वाली कंपनी ब्लू जेट हेल्थकेयर ने आरंभिक सार्वजनिक निर्गम के लिए 329-346 रुपये प्रति शेयर कर मूल्य दायरा तय किया है। कंपनी का आईपीओ 25 अक्टूबर को खुलेगा और 27 अक्टूबर को बंद होगा। एंकर निवेशकों के लिए इसे 23 अक्टूबर को खोला जाएगा। ब्लू जेट हेल्थकेयर के अनुसार, यह निर्गम प्रवर्तकों अक्षय बंसारीलाल अरोड़ा तथा शिवेन अक्षय अरोड़ा की तरफ से 2.42 करोड़ शेयरों की बिक्री पेशकश पर आधारित होगा। आईपीओ के पूरी तरह ओएफएस पर आधारित होने के कारण निर्गम से होने वाली सारी आय शेयर बेचने वाले शेयरधारकों के पास जाएगी। मुंबई स्थित ब्लू जेट हेल्थकेयर नवोन्मेषी दवा कंपनियों और बहुराष्ट्रीय जेनेरिक दवा कंपनियों के लिए विशिष्ट उत्पाद पेश करती है। पिछले पांच दशकों में कंपनी ने 100 से अधिक उत्पाद विकसित किए हैं।

अदाणी एनर्जी ने वरोरा-कुर्नूल ट्रांसमिशन लाइन की शुरू

नईदिल्ली। अदाणी एनर्जी सॉल्यूशंस ने सबसे बड़ी अंतर-क्षेत्रीय 765 केवी वरोरा-कुर्नूल बिजली ट्रांसमिशन लाइन शुरू कर दी है। कंपनी ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी। अदाणी एनर्जी सॉल्यूशंस की ओर से जारी एक बयान के अनुसार, महाराष्ट्र, तेलंगाना तथा आंध्र प्रदेश में 1,756 सर्किट किलोमीटर (सीकेएम) तक फैली यह परियोजना पश्चिमी और दक्षिणी क्षेत्रों के बीच 4,500 मेगावाट का निर्बाध बिजली प्रवाह सुनिश्चित करने के लिए राष्ट्रीय ग्रिड को मजबूत करेगी। वरोरा कुरनूल ट्रांसमिशन लिमिटेड (डब्ल्यूटीएल) को पूरी तरह से अदाणी एनर्जी सॉल्यूशंस लिमिटेड (एईएसएल) संचालित करती है।

लैपटॉप, टैबलेट आयात नियमों में सरकार ने दी ढील

नईदिल्ली। भारत में लैपटॉप, टैबलेट और पीसी के आयात नियमों में सरकार ढील देने जा रही है। गुरुवार को सरकारी अधिकारियों ने बताया कि केंद्र इन डिवाइसेज के आयात के लिए अथराइजेशन का नया सिस्टम शुरू कर रहा है यानी इसके लिए एक ऑनलाइन मंजूरी सिस्टम तैयार किया गया है जिसके तहत सभी कंपनियां विदेशों से इन सामानों का आयात तो कर सकेंगी लेकिन उसके पहले उन्हें सरकार से अनुमति लेनी पड़ेगी। सरकार के इस फैसले का लक्ष्य मार्केट सप्लाई को नुकसान पहुंचाए बिना ऐसे हार्डवेयर्स के शिपमेंट की निगरानी करना है।नया इम्पोर्ट मैनेजमेंट सिस्टम 1 नवंबर से लागू होगा और कंपनियों को आयात की मात्रा और उसकी वैल्यू यानी मूल्य को रजिस्टर करने की जरूरत होगी। कंपनियों को कोई परेशानी न आए इसके लिए आयातकों के लिए 'एंड-टू-एंड' ऑनलाइन प्रणाली शुरू की गई है।

भारतीय बॉन्ड्स को वैश्विक दर्जा, भारत में बढ़ेगा विदेशी निवेशकों का प्रवाह

पी. एस वोहरा

भारत के लिए खुशखबरी है कि प्रख्यात जेपी मॉर्गन समूह ने केंद्र सरकार के बॉन्ड्स को अपने 'ग्लोबल बॉन्ड इंडेक्स' में शामिल करने की घोषणा कर दी है। हालांकि इस घोषणा का असर जून, 2024 के बाद से देखने को मिलेगा। उल्लेखनीय है कि सरकारें अर्थव्यवस्था में वित्तीय घाटों को पूरा करने के लिए स्वयं बाजार से ऋण लिया करती हैं और इन ऋणों को उगाहने का जरिया सरकारी बॉन्ड होते हैं। किसी भी अर्थव्यवस्था में वित्तीय घाटों की स्थिति तब पैदा होती है जब वित्तीय आय की तुलना में खर्चों की तादाद अधिक रहती है। सरकारी बॉन्ड अल्पकालीन तथा दीर्घकालीन, दोनों अवधि के हो सकते हैं, हालांकि सामान्यत: सरकारों के द्वारा इन्हें दीर्घकालिक अवधि के लिए ही प्रस्तावित किया जाता है। अब मोदी सरकार ने इसकी अधिकतम समय अवधि 50 वर्ष निर्धारित की है।

जेपी मॉर्गन समूह के इंडेक्स में मात्र सरकारी बॉन्ड्स की ही लिस्टिंग होती है। यह इंडेक्स विश्व की कुछ तेजी से उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं को ही प्राथमिकता देता है। इसलिए यह वैश्विक स्तर पर भारत के लिए एक बहुत महत्वपूर्ण विकल्प है, क्योंकि इसके माध्यम से भारत को आने वाले समय में विभिन्न विदेशी निवेशकों के जरिये पूंजी प्राप्त करने का मौका मिलेगा। वर्तमान समय में सरकारी बॉन्ड के अंतर्गत विदेशी निवेशकों का हिस्सा दो फीसदी से भी कम है, जो कि वैश्विक स्तर पर भारत की वित्तीय साख को बहुत अच्छे ढंग से प्रस्तुत नहीं करता है।

आजादी के बाद से सरकारों के वित्तीय ऋण हेतु बॉन्ड के अंतर्गत निवेश की जिम्मेदारी भारतीय बैंकों तथा बीमा क्षेत्र ने ही

उठा रखा है। इसके चलते बैंकों द्वारा भारतीय समाज में अन्य क्षेत्रों को, जिनमें एमएसएमई प्रमुख है, वित्तीय सुविधा तुलनात्मक रूप से बहुत कम दी जाती है।

भारतीय बैंकों पर यह प्रतिबद्धता केंद्रीय बैंक की एसएलआर रेट के कारण रहती है। 80 के दौर में एसएलआर 40 फीसदी हुआ करती थी। इसके फलस्वरुप भारतीय अर्थव्यवस्था तब बहुत अधिक विस्तार नहीं कर पाई। भारतीय बीमा क्षेत्र पर विभिन्न 'ट्रिपल ए रेटेड' सरकारी बॉन्ड्स में निवेश करने की प्रतिबद्धता के चलते देश में जीवन बीमा के अलावा अन्य क्षेत्रों में बीमा कंपनियों का विस्तार बहुत कम है, क्योंकि कंपनियां ग्राहक केंद्रित नहीं हैं और उनकी लाभदायकता भी एक चुनौती बनी रहती है।

अब चर्चा इस बात की है कि मोदी सरकार की इस उपलब्धि का आने वाले समय में आखिर फायदा क्या होगा? इससे आने वाले समय में भारतीय बैंकों को कुछ छूट मिलेगी। केंद्रीय बैंक भविष्य में एसएलआर को घटाएगा, क्योंकि जेपी मॉर्गन के इंडेक्स में सूचीबद्ध होने से विदेशी निवेशकों का सरकारी बॉन्ड में प्रवाह बढ़ेगा। आगामी वर्षों में भारतीय बैंक अपनी वित्तीय तरलता के कारण समाज के अन्य क्षेत्रों को उनकी जरूरतों के लिए आसानी से कर्ज उपलब्ध करवा सकेगा।

दूसरा, इस समय बॉन्ड्स पर ब्याज की दरें काफी ऊंची हैं, जिससे सरकार को अधिक लागत वहन करनी पड़ती है। अब जेपी मॉर्गन में लिस्टिंग होने के बाद जब विदेशी निवेशकों का प्रवाह बढ़ेगा, तो यकीनन यह लागत कम होगी और सरकार अपने वित्तीय फंड्स का उपयोग बुनियादी विकास व सामाजिक कल्याण की योजनाओं पर कर सकेगी। हालांकि सरकारी बॉन्ड में निवेश हेतु वैश्विक स्तर पर सभी बड़े समूह की भारत के साथ दो मुख्य समस्याएं रही हैं, जिनमें एक करों में छूट तथा दूसरी, देश के बाहर विदेशी मुद्रा में भुगतान। जेपी मॉर्गन में सूचीबद्ध होने के बावजूद सरकारी बॉन्ड्स रुपये में ही निर्गमित होंगे और विदेशी निवेशक निश्चित रूप से अधिकतम ब्याज की दर पर निवेश करने के लिए आकर्षित होंगे, क्योंकि उनके लिए सबसे बड़ी समस्या रुपये का डॉलर की तुलना में विनिमय दर से होने वाला घाटा या मुनाफा होगा। जब विदेशी निवेशकों का प्रवाह बढ़ेगा, तो यकीनन रुपये की मांग बहुत बढ़ जाएगी, जिसके चलते डॉलर की तुलना में रुपया मजबूत होगा।

भाजपा से आधे नए चेहरे भी नहीं उतार पाई कांग्रेस: अरुण साव

रायपुर। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष सांसद अरुण साव ने कांग्रेस की दो सूचियों में 83 उम्मीदवार घोषित हो जाने पर तथ्यात्मक विश्लेषण करते हुए कहा है कि भाजपा ने अब तक 44 नए चेहरे जनता के सामने पेश किए हैं। यह आंकड़ा कांग्रेस से दोगुना है। भाजपा नए चेहरों के साथ छत्तीसगढ़ विकास की नई गाथा लिखने तैयार है। उनका कहना है कि कांग्रेस का टिकट वितरण उसके आंतरिक डर को दर्शा रहा है। हम विपक्ष में हैं। हमने अनुभवी पुराने चेहरों के साथ -साथ उतनी ही संख्या में नए और संभावनाओं से भरे चेहरे सामने रखे हैं जबकि कांग्रेस ने अपने मुट्ठी भर विधायकों को असफल मानकर उन्हें मैदान में उतारने का जोखिम नहीं उठाया। जबकि कांग्रेस के सभी विधायक नकारा साबित हुए हैं। हमने नई संभावनाएं तलाशी हैं लेकिन कांग्रेस ने मजबूरी में जो बदलाव किया है, वहां सिर फुटौव्वल मची है, वहां के नजारे देख कर कांग्रेस समझ गई है कि अब उसे सड़क पर आने से कोई नहीं बचा सकता।

प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री साव ने कहा कि कांग्रेस में बगावत हो गई है। रुझान आना शुरू हो गया है। जिन एजाज ढेबर ने प्रियंका गांधी के कदमों में फूल बिछाए, उनको टिकट न मिलने पर एक समर्थक ने खुद पर केरोसिन डाल लिया। हजार लोग नारेबाजी करके कांग्रेस नेतृत्व को गरिया रहे हैं। लोग कह रहे हैं कि प्रियंका के लिए इतने फूल बिछाने का क्या फायदा? अपने नेतृत्व को अपशब्द कह रहे है ?कांग्रेस के पाली तानाखार विधायक मोहित राम केरकेट्टा ने ऐलान कर दिया है कि वे कांग्रेस के खिलाफ चुनाव लड़ेंगे। वे विधानसभा अध्यक्ष महंत को कोस रहे हैं। अंतागढ़ विधायक अनूप नाग, नवागढ़ विधायक गुरुदयाल बंजारे, रामानुजगंज विधायक बृहस्पत सिंह, मनेन्द्रगढ़ विधायक विनय जायसवाल बगावत पर आमादा हैं। बृहस्पत सिंह कह रहे हैं कि ये न जय हैं न वीरू हैं। ये रंगे सियार हैं। साफ है कि अभी तो ये अंगड़ाई है। कांग्रेस के भीतर आगे बहुत लड़ाई होने वाली है।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री साव ने सवाल किया है कि कांग्रेस ने झीरम के दो शहीदों के साथ अन्याय क्यों किया? झीरम के शहीद योगेंद्र शर्मा की विधवा विधायक अनीता शर्मा और झीरम के शहीद मुदलियार के पुत्र उदय मुदलियार की टिकट काटी गई। जबकि प्रियंका गांधी कहती रही हैं कि झीरम के शहीदों के साथ न्याय होगा। क्या यही न्याय है? प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री साव का मानना है कि बड़ी संख्या में विधायकों का टिकट काटना यह बताता है कि स्थानीय स्तर पर कांग्रेस के खिलाफ भयंकर आक्रोश है। हालांकि भारी विद्रोह के डर से कांग्रेस 18 विधायकों का टिकट ही काट पायी है जबकि 50 से अधिक की टिकट खतरे में थी। सबसे अलोकतांत्रिक बात यह है कि मंत्रियों ने मुख्यमंत्री के नेतृत्व में जमकर प्रदेश को लूटा है, वे सभी कायम रहे किंतु विधायकों को बलि का बकरा बना दिया। भाजपा प्रदेशाध्यक्ष श्री साव का स्पष्ट मत है कि कांग्रेस के टिकट वितरण से यह साफ हुआ है कि कांग्रेस अब मुख्यमंत्री भूपेश बघेल को बोझ समझती है। पहले 'भूपेश भरोसा' को %कांग्रेस भरोसा% कहना, फिर टीएस सिंहदेव को कांग्रेस संसदीय बोर्ड में शामिल करना, उप मुख्यमंत्री बनाना, इन कदमों से ऐसा लगता है कि कांग्रेस का केंद्रीय नेतृत्व भूपेश बघेल के कारनामों के कारण कांग्रेस के खिलाफ आक्रोश को समझ कर मुद्दे को डायवर्ट करना चाहता है, जिसमें वह सफल नहीं होगा। जनता अब हाथ साफ करने का मूड बना चुकी है।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष सांसद अरुण साव का मानना है कि कांग्रेस की भूपेश बघेल सरकार अपनी अनीतियों के कारण राज्य की जनता का भरोसा अपने कार्यकाल के आरंभिक महीनों में ही खो चुकी थी।

राजेश मूणत का सघन प्रचार अभियान जारी, नागरिकों और ट्रांसपोर्टरों से की मुलाकात

रायपुर पश्चिम विधानसभा के प्रत्याशी और पूर्व कैबिनेट मंत्री राजेश मूणत का सघन प्रचार अभियान जारी है। गुरुवार को मूणत ने टाटीबंध क्षेत्र के नागरिकों और ट्रांसपोर्टरों से मुलाकात करके भारतीय जनता पार्टी के पक्ष में मतदान करने समर्थन मांगा। इस दौरान उन्होंने छत्तीसगढ़ में भाजपा की सरकार आने के बाद जन आकांक्षाओं के अनुरूप आरटीओ बैरियरों में बंद करने का वादा किया। ज्ञात हो कि छत्तीसगढ़ में अवैध उगाही की बढ़ती शिकायतों के बाद भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने एक झटके में प्रदेश भर की 16 सीमा चौकियों (बैरियर) के साथ फ्लाइंग स्क्वाड को खत्म कर दिया था,लेकिन कांग्रेस सरकार की सरकार ने इन बैरियरों को फिर से चालू कर दिया।

मूणत ने कहा भारतीय जनता पार्टी ने जनहित को देखते हुए बेरियर बंद करवाए थे। लेकिन भ्रष्टाचार की पर्याय बन चुकी भूपेश बघेल सरकार ने राज्य में फिर आरटीओ बैरियरों को शुरू करवा दिया ताकी बैरियर में अवैध उगाही का खेल शुरू सके। ज्ञात हो कि वर्ष 2017 में छत्तीसगढ़ विधानसभा के बजट सत्र में

अनुदान मांगों पर चर्चा करने के दौरान तत्कालीन परिवहन मंत्री राजेश मूणत को यह एलान किया था कि छत्तीसगढ़ में कहीं भी बैरियर और फ्लाइंग स्क्वाड नहीं रहेगा, सिर्फ जिला कलेक्टरों से अटैच जांच टीम ही काम करेगी, जो ओवरलोड गाड़ियों पर कार्रवाई करेगी। *सुबह की चाय जनता के साथ,शाम को देवी माता की आरती* राजेश मूणत प्रतिदिन अपने प्रचार अभियान की शुरुआत मॉर्निंग वाक् के साथ शुरू कर रहे लोगों से मुलाकात करके कर रहे हैं। इस दौरान वह आम जनता के बीच चाय दुकान में जाकर चाय पीते हैं और चाय पर चर्चा करते हुए उनके विचार जानते है। मूणत का कहना है कि आम जनता से मिलाकर उनकी राय का संग्रहण कर रहे हैं। रायपर पश्चिम विधानसभा क्षेत्र से पुनः निर्वाचित होने और भारतीय जनता पार्टी की सरकार स्थापित होने के बाद जनता की उम्मीदों को पूरा करने की दिशा में अपनी पूरी ताक़त लगा देंगे। मूणत से शाम तक अलग-अलग इलाकों में छोटी-छोटी पब्लिक मीटिंग भी ले रहे हैं,जिसमे भाजपा कार्यकर्ताओं के साथ आम जनता भी शामिल हो रही है। इन सभाओं में भाजपा के विचारों से प्रभावित होने वाले लोग पार्टी से में प्रवेश भी कर रहे हैं। दिनभर प्रचार अभियान में व्यस्त रहने के बाद राजेश मूणत नवरात्री के दौरान सजे दुर्गा पंडालों में भी संध्या आरती में शामिल होकर माता आदिशक्ति का आशीर्वाद भी ले रहे हैं। *मूणत ने करवाया दर्जनों को भाजपा प्रवेश, कांग्रेस छोड़कर भाजपा से जुड़े गुरदीप सिंह गरचा* कांग्रेस नेता / कांग्रेस ट्रांसपोर्ट यूनियन के सेक्रेट्री / छत्तीसगढ़ तेंदूपत्ता यूनियन के अध्यक्ष गुरदीप सिंह गरचा समेत दर्जनों कांग्रेस कार्यकर्तों को नागरिकों ने सरकार की नीतियों से निराश होकर भाजपा में प्रवेश किया।

पहले चरण के लिए चौथे दिन दाखिल किए गए 64 नामांकन पत्र

रायपुर. छत्तीसगढ़ में विधानसभा चुनाव 2023 के पहले चरण के 20 विधानसभा क्षेत्रों के लिए चौथे दिन 64 नामांकन पत्र दाखिल किए गए. इस प्रकार पहले चरण के लिए अब तक कुल 60 अभ्यर्थियों ने 87 नामांकन पत्र दाखिल किए हैं. पंडरिया और भानुप्रतापपुर विधानसभा क्षेत्र में सबसे अधिक 6-6, कांकेर और दंतेवाड़ा में 5-5, कवर्धा, डोंगरगांव और अंतागढ़ में 4-4, खैरागढ़, मोहला-मानपुर ,केशकाल, बस्तर, बीजापुर और कोंटा में 3-3, जबकि डोंगरगढ़ , राजनांदगांव, खुज्जी, कोंडागांव, नारायणपुर और चित्रकोट में दो-दो नामांकन पत्र दाखिल किया गया है. जगदलपुर विधानसभा क्षेत्र के लिए बुधवार को कोई भी नामांकन पत्र दाखिल नहीं किया गया. प्रथम चरण में बस्तर संभाग की 12 निर्वाचन क्षेत्रों सहित राजनांदगांव, मोहला-मानपुर -अंबागढ़ चौकी , खैरागढ़- छुईखदान- गंडई और कबीरधाम जिलों के 8 विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों में नामांकन की प्रक्रिया जारी है.बता दें कि, प्रदेश में दो चरणों में हो रहे निर्वाचन के पहले चरण की 20 सीटों के लिए 20 अक्टूबर तक नामांकन पत्र भरे जा सकते हैं. 21 अक्टूबर को नामांकन पत्रों की जांच की जाएगी और प्रत्याशी 23 अक्टूबर तक अपना नाम वापस ले सकेंगे. प्रथम चरण के लिए 7 नवंबर को मतदान होगा, जबकि दोनों ही चरणों के लिए मतगणना 3 दिसंबर को होगी.

पहले चरण में यहां होगा चुनाव

प्रथम चरण में कोंटा, बीजापुर, दंतेवाड़ा, चित्रकोट, जगदलपुर, बस्तर , नारायणपुर , कोंडागांव ,केशकाल ,कांकेर , भानुप्रतापुर, अंतागढ़, मोहला- मानपुर, खुज्जी, डोंगरगांव, राजनांदगांव, डोंगरगढ़, खैरागढ़, कवर्धा और पंडरिया विधानसभा क्षेत्रों के लिए मतदान होगा.

सलामत रहे दोस्ताना हमारा.. टिकट क्या चीज है

रायपुर। छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव के लिए रायपुर उत्तर की सीट अभी भी निरूत्तर बना हुआ है इसलिए कि कांग्रेस प्रत्याशी तय नहीं कर पा रही है और चर्चा इसी बात की है कि आखिर क्यों.? ये तो बताया जा रहा है कि वर्तमान विधायक कुलदीप जुनेजा की टिकट कट चुकी है,अब उनकी जगह किसको के क्रम में सर्वमान्य और पहला नाम डा.राकेश गुप्ता का चल रहा है। उनकी सक्रियता भी बता रही है टिकट पक्की है। वे जीत योग्य चेहरा भी माने जा रहे हैं। लेकिन एकाएक नाम जुड़ जाता है एमआईसी मेंबर्स अजीत कुकरेजा का,जिसे जातीय समीकरण के लिहाज से बताया जा रहा है। कांग्रेस में हमेशा कहा जाता है कि टिकट का भरोसा नहीं इसे भांपते हुए अब डा.राकेश गुप्ता और जुनेजा ने अपनी बात भूपेश बघेल से लेकर अन्य जिम्मेदार नेताओं के पास रख दी है,उन दोनों में से किसी को भी टिकट दी जाए वे खुलकर काम करने तैयार हैं और पार्टी की जीत भी पक्की है पर तीसरे की गुंजाइश नहीं रखें। कितनी अच्छी बात है कि संबंधो की मधुरता इतनी है कि दोनों अपनी दोस्ती के लिए टिकट तक कुर्बान करने तैयार हैं..केवल इतना ही कि सलामत रहे दोस्ताना हमारा। जो आज कल की राजनीति में देखने-सुनने कहां मिलती है? लेकिन एक धर्मसंकट ये भी है कि आज एक और प्रत्याशी का नाम लेकर कुछ लोगों ने राजीव भवन में प्रदर्शन किया कि जब दक्षिण में नहीं दिया तो उत्तर अभी बाकी है विचार करें। अब कांग्रेसियों के माथे पर बल पड़ रहा है कि कहीं जगदलपुर जैसा हाल न हो जाए कि तीन की खींचतान में जितिन जायसवाल को टिकट मिल गई,वैसे यहां भी न हो जाय? खैर चुनाव है और फिर कांग्रेस की टिकट बी फार्म मिलने तक गुंजाइश बने रहती है।

निगरानी दलों ने किया 6 करोड़ 57 लाख रूपए कैश जब्त

रायपुर। छत्तीसगढ़ विधानसभा आम निर्वाचन-2023 की तिथि की घोषणा के साथ ही प्रदेश में आदर्श आचार संहिता 9 अक्टूबर से लागू हो गई है। प्रदेश में विभिन्न इन्फोर्समेंट एजेंसियों द्वारा निष्पक्ष और पारदर्शी निवार्चन हेतु मतदाता को प्रभावित करने के उद्देश्य से परिवहन की जा रही अवैध धन राशि या वस्तुओं पर कड़ी निगरानी रखी जा रही है। 19 विभिन्न प्रवर्तन एजेंसियों के माध्यम से धन और वस्तुओं के अवैध परिवहन तथा संग्रहण पर कड़ी नजर रखी जा रही है। आदर्श आचार संहिता लागू होने से अब तक अवैध धनराशि तथा वस्तुओं की बरामदगी का आँकड़ा 6 करोड़ 57 लाख 3 हजार 62 रूपए हो गया है। इसमें एक करोड़ 46 लाख रूपए नकद राशि बरामद की गई है। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी कार्यालय से प्राप्त जानकारी के अनुसार प्रवर्तन एजेंसियों (इन्फोर्समेंट एजेंसी) द्वारा निगरानी के दौरान अब तक 13 हजार 574 लीटर अवैध शराब जब्त की गई है, जिसकी कीमत 41 लाख 68 हजार रूपए है। साथ ही 1945 किलोग्राम अन्य नशीली वस्तुएं, जिसकी कीमत लगभग 70 लाख रुपए है भी बरामद किया गया है। सघन जाँच अभियान के तहत अधिकारियों ने अवैध रूप से अन्य सामग्रियों जिनकी कीमत 2 करोड़ 17 लाख रूपए जब्त की हैं। इसके अतिरिक्त एक करोड़ 82 लाख रूपए कीमत के लगभग 83 किलोग्राम कीमती आभूषण तथा रत्न भी तलाशी के दौरान जब्त किया गया है। गौरतलब है कि 5 प्रमुख जिले जहां सबसे अधिक जब्ती की गई है, जिसमें क्रमशः बिलासपुर, रायगढ़, कोरबा, बस्तर तथा रायपुर शामिल है। विधानसभा निर्वाचन-2023 हेतु जब्तियों के संबंध में भारत निर्वाचन आयोग द्वारा प्रवर्तन एजेंसियों के लिए इलेक्शन सीजर मैनेजमेंट सिस्टम (ईएसएमएस) के रूप में वेब एवं मोबाइल एप लांच किया है। इस एप्प में लगभग 1600 से भी ज्यादा स्नस्स्ञ / स्स्ञ को रजिस्टर कर एप्प डाउनलोड करवाया गया है एवं इस एप्प के माध्यम से तत्काल जब्तियों की रिपोर्टिंग भी की जा रही है ।

छत्तीसगढ़/राजधानी
प्रमुख समाचार

रमन के भ्रष्टाचार पर शाह की बोलती फिर बंद थी: बैज

रायपुर। भाजपा के नेता अमित शाह द्वारा बस्तर में दिये गये चुनावी भाषण पर प्रहार करते हुये प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष एवं सांसद दीपक बैज ने कहा कि 3 दिसंबर को भाजपा छत्तीसगढ़ में बीते दिनों की पार्टी हो जायेगी। अमित शाह को भी पता है बस्तर में भाजपा का खाता भी नहीं खुलेगा। अमित शाह कितना भी प्रलाप कर ले बस्तर के लोग भाजपा के बहकावे में नहीं आने वाले। भाजपा ने 15 सालों तक बस्तर के लोगों का शोषण किया था। बस्तर के आदिवासियों के संवैधानिक अधिकारों को बंधक बनाकर रखा था। अमित शाह भाजपा राज में 15 सालों तक बस्तर की बदहाली के लिये माफी मांगे। तत्कालीन भाजपा सरकार की अकर्मण्यता के कारण बस्तर अशांत था। छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की सरकार बनने के बाद बस्तर में शांति की स्थापना हुई है। आज अमित शाह बस्तर के शांति की स्थापना के लिये केन्द्र और अपनी पीठ थपथपा रहे जबकि भूपेश सरकार के द्वारा विश्वास, विकास, सुरक्षा की नीति के कारण बस्तर के लोगो में भरोसा बढ़ा और शांति की स्थापना हुई। रमन राज में बस्तर का आदिवासी आर्थिक सामाजिक शैक्षणिक विकास की दौड़ में पिछड़ गया था। रमन सरकार ने आदिवासियों को जबरिया जेल की सलाखों के पीछे धकेला था। अमित शाह कितना भी झूठ बोले अब बस्तर भाजपा के धोखे में नहीं आयेगा।

भाजपा रबी के धान का समर्थन मूल्य क्यों नहीं बढ़ाया: शुक्ला

रायपुर। केंद्र सरकार ने रबी फसल के लिये गेंहू, जौ, चना, मसूर के लिये समर्थन मूल्य घोषित किया है लेकिन धान के समर्थन मूल्य में बढ़ोतरी की कोई घोषणा नहीं की गई है। प्रदेश कांग्रेस संचार विभाग के अध्यक्ष सुशील आनंद शुक्ला ने कहा कि धान का समर्थन मूल्य नहीं घोषित कर छत्तीसगढ़ के किसानों के साथ अन्याय है। छत्तीसगढ़ का किसान खरीफ के साथ रबी में भी धान की खेती करता है। ऐसे में धान के समर्थन मूल्य की भी बढ़ोतरी की जानी चाहिये लेकिन मोदी सरकार की प्राथमिकता में छत्तीसगढ़ के किसान है ही नहीं। भाजपा केवल वोट हासिल करने के लिये किसानों के बारे में बात करते है, हकीकत में भाजपा छत्तीसगढ़ के किसानों के लिये दुर्भावना रखती है। भाजपा छत्तीसगढ़ के किसानों के खिलाफ खड़ी है। इसीलिये रबी की फसल की कीमतों में धान के समर्थन मूल्य की बढ़ोतरी नहीं किया गया। प्रदेश कांग्रेस संचार विभाग के अध्यक्ष सुशील आनंद शुक्ला ने कहा कि भाजपा छत्तीसगढ़ के धान खरीदी बंद करने का षड़यंत्र कर रही है। वह नहीं चाहती धान की 2640 में या उससे अधिक दाम में खरीदी हो। इसीलिये छत्तीसगढ़ सरकार के द्वारा की जाने वाली धान खरीदी में भाजपा अड़ंगा पैदा करती है। छत्तीसगढ़ से लेने वाले चावल के कोटे को केंद्र ने 80 लाख मीट्रिक टन से घटाकर 61 लाख मीट्रिक टन इसलिये किया गया, धान की कीमत समर्थन मूल्य से 1 रू. भी ज्यादा देने पर भाजपा अड़ंगा लगाती है, राज्य सरकार को धमकी देती है राज्य के द्वारा पूरा पैसा देने के बावजूद बारदाना की कोटे में मोदी सरकार कटौती करवाती है।

भाजपा नेताओं के यहां ईडी कब छापा मारेगी: वैष्णव

रायपुर। प्रदेश कांग्रेस प्रवक्ता मणी वैष्णव ने कहा कि ईडी की कार्यवाही और कार्यप्रणाली दोनों लगातार सवालों के घेरे में रहती है। ईडी बतायें कि पिछले 9 साल में कितने भाजपा और भाजपा के सहयोगी दलों के लोगों के यहां छापे की कार्यवाही की गयी? देश में सारी अनियमितता विरोधी दल के लोग ही कर रहे है, भाजपा और उसके सहयोगी दल के नेता दूध के धुले हुए है? ईडी, आईटी और भाजपा का जो नापाक गठबंधन देशभर में दिख रहा, लोग जानना चाहते है ये रिश्ता क्या कहलाता है? 8 सालो में 6000 छापे मारने वाली ईडी सिर्फ 23 मामलों में ही सबूत दे पाई है मतलब ईडी सिर्फ भाजपा के विरोधियों की छवि खराब करने का काम कर रही। कांग्रेस प्रवर्तन निदेशालय के अधिकारियों से पूछा है कि छत्तीसगढ़ के भाजपा नेताओं के यहां छापेमारी की कार्यवाही कब से की जायेगी। छत्तीसगढ़ में 15 साल के सरकार में भाजपा के अनेक नेता फर्श से अर्श पर पहुंच गये। कुछ भाजपा के ऐसे नेता है जो भाजपा की सरकार बनने के पहले खटारा यामहा मोटर सायकल पर चला करते थे। 15 साल मंत्री रहे उनकी संपत्ति हजारो करोड़ो रूपयो में पहुंच गयी। कारोबारी पारिवारिक पृष्ठ भूमि के मंत्री रहे भाजपा नेता जिनके परिवार की कारोबारी हालत भाजपा की सरकार के पहले दिवालिया होने की थी वे और उनके भाई 15 साल में अकूत धन सपंदा के मालिक बन गये।

कांग्रेस जनता की समृद्धि के लिए : सुरेंद्र वर्मा

रायपुर। छत्तीसगढ़ प्रदेश कांग्रेस कमेटी के वरिष्ठ प्रवक्ता सुरेंद्र वर्मा ने कहा है कि छत्तीसगढत्र में समृद्धि, संस्कृति और संसाधन को बेचने और बचाने की लड़ाई है। कांग्रेस जनता की सृमद्धि के लिये और भाजपा अडानी के मुनाफे के लिये छत्तीसगढ़ में सरकार बनाना चाहती है। भूपेश सरकार की पहली प्राथमिकता सामाजिक न्याय के साथ आम जनता की आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक समृद्धि है। भारतीय जनता पार्टी के लिए छत्तीसगढ़ केवल संसाधनों के दोहन के लिए आवश्यक है। भाजपाई अडानी के व्यावसायिक लाभ के लिए छत्तीसगढ़ में सत्ता हथियाने बेचैन हैं। 15 साल जब छत्तीसगढ़ में रमन सिंह की सरकार थी , खासतौर पर 2014 से 2018 जब केंद्र और राज्य दोनों जगह भाजपा की सरकारें थी, उस दौरान छत्तीसगढ़ और छत्तीसगढ़िया जनता पर सबसे ज्यादा अत्याचार हुए। जल-जंगल- जमीन छीनी गई। छत्तीसगढ़ के खनिज संपदा अडानी को सौंप दिया गया। इसी दौरान 2016-17 में बैलाडीला के नंदराज पर्वत की लोह अयस्क माइंस अडानी को दे दिए जिसके लिए रमन सरकार ने फर्जी ग्राम सभा के प्रस्ताव तैयार करवाए और बस्तर के धार्मिक महत्व के स्थल को भी खनन के लिए अडानी को दे दिया। भूपेश सरकार ने आते हैं उस ओएमयू को रद्द कर दिया, लेकिन अंतिम आदेश आज तक मोदी सरकार में लंबित है। छत्तीसगढ़ में भारतीय जनता पार्टी इसलिए सत्ता हथियाना चाहती है ताकि नदराज पर्वत फिर से अडानी को सौंपा जा सके।

सिर्फ और सिर्फ रमन के रिश्तेदार हो रहे उपकृत : अजय

रायपुर। छत्तीसगढ़ प्रदेश कांग्रेस प्रवक्ता अजय गंगवानी ने कहा कि छत्तीसगढ़ में विधानसभा चुनाव भारतीय जनता पार्टी नहीं लड़ रही है बल्कि चुनाव रमन सिंह, उनका परिवार, उनके रिश्तेदार और उनकी पूरी गैंग लड़ रही है, राजनांदगांव से रमन सिंह स्वयं चुनाव लड़ रहे हैं, खैरागढ़ से उनका भांजे विक्रांत सिंह चुनाव लड़ रहे हैं और कल ही रमन सिंह की भांजी 'भावना बोहरा' को भारतीय जनता पार्टी ने पंडरिया से अपना विधानसभा उम्मीदवार बनाया है। परिवारवाद का इससे बड़ा उदाहरण पूरे देश में नहीं हो सकता है रमन सिंह के एक ही परिवार से छत्तीसगढ़ के 2023 के विधानसभा चुनाव में 3-3 लोग चुनाव लड़ने वाले हैं, उसके बाद रमन सिंह और भारतीय जनता पार्टी द्वारा कांग्रेस पार्टी पर परिवारवाद का आरोप लगाना राजनैतिक पाखंड की पराकाष्ठा है। इस पूरे प्रकरण से स्पष्ट है कि भारतीय जनता पार्टी का कैडरबेस पार्टी और कार्यकर्ताओं की पार्टी होने का दावा सिर्फ और सिर्फ एक जुमला है और उनकी असलियत छत्तीसगढ़ की जनता के सामने खुल कर आ चुकी है. रमन सिंह का यह परिवारवाद पूर्व में भी जब रमन सिंह 15 साल तक छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री थे तब भी जारी था, उनके पुत्र अभिषेक सिंह सांसद रहे, उनकी पुत्री राज्य सरकार के कोटे से डेंटल काउंसिल आफ इंडिया की सदस्य रही, उनके दामाद डॉक्टर पुनीत गुप्ता डीकेएस अस्पताल में नोडल अधिकारी रहे।

मोदी और शाह मणीपुर क्यों नहीं जा रहे?:भक्त चरणदास

रायपुर। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता एवं पूर्व केन्द्रीय मंत्री भक्त चरणदास पत्रकारवार्ता लेकर जातिगत जनगणना, आरक्षण, धान के मामले में भारतीय जनता पार्टी को कटघेरे में खड़ा करते हुये कहा कि भाजपा वंचित वर्ग के लोगो को उनका अधिकार नहीं देने चाहती वह जातिगत जनगणना छत्तीसगढ़ में आरक्षण विधेयक तथा धान खरीदी के विरोध में है। प्रधानमंत्री छत्तीसगढ़ में सत्ता हासिल करने 4 बार छत्तीसगढ़ आ सकते है। गृहमंत्री हर हफ्ते छत्तीसगढ़ आ रहे है लेकिन देश का एक राज्य मणीपुर जल रहा है अंशात है प्रधानमंत्री और गृहमंत्री को मणीपुर जाने की फुर्सत नहीं है। मणीपुर में डबल इंजन की सरकार है वहां पर भुखमरी है महिलाओं की इज्जत सुरक्षित नहीं है, लेकिन केन्द्र सरकार नक्कारा बनी हुई है। छत्तीसगढ़ में इनके पास मुद्दे नहीं है। भाजपा के महत्वपूर्ण पद पर बैठे नेता यहां अंशाति फैलाकर सांप्रदायिकता फैलाकर चुनाव में ध्रुवीकरण करने लगे है।

उन्होंने कहा कि मोदी सरकार देश की जनगणना नहीं करवाना चाहती है। चुनाव आते ही प्रधानमंत्री मोदी स्वयं ओबीसी बन जाते हैं लेकिन जब-जब पिछड़ा वर्ग को उनका अधिकार देने की बारी आती है तब तब भाजपा ने सदैव ही निराश किया है। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने प्रधानमंत्री मोदी से लगातार अनुरोध किया है कि जनगणना रजिस्टर में जाति का कॉलम जोड़ा जाए लेकिन मोदी सरकार आरएसएस पर भाजपाई नहीं जाती की ओबीसी को उनकी संख्या के अनुपात में न्याय मिले सरकारी योजनाओं का लाभ मिले भाजपा और केंद्र की मोदी सरकार नहीं चाहती कि पिछड़ा वर्ग की हार्दिक सामाजिक स्थिति का सही आकलन हो सके।

उन्होंने कहा कि कांग्रेस सरकार ने सर्वसमाज के हित में राज्य के अनुसूचित जनजाति, अनुसूचित जाति, ओबीसी, अनारक्षित वर्ग के गरीबों के हित में छत्तीसगढ़ नवीन आरक्षण विधेयक विधानसभा में पारित करवा कर राजभवन भेजा है। दुर्भाग्यजनक है आरक्षण विधेयक कानून का रूप नहीं ले पा रहा।

विद्युत दुर्घटनाओं से बचें, आवश्यक सावधानियाँ बरतें

■ पॉवर कंपनी ने लोगों को सतर्क और जागरूक रहने दिये सुझाव

CSPDCL
छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी लिमिटेड

रायपुर । शहर एवं ग्रामीण इलाकों में बाहरी व्यक्तियों की विद्युत दुर्घटनाओं में जनहानि और गंभीर रूप से घायल होने की ख़बरें आती रहती हैं जो कि अत्यंत पीड़ादायक तथा संबंधित परिवार एवं समाज के लिए अपूरणीय क्षति के रूप में घटित होती हैं। छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी के एमडी मनोज खरे ने जनता को बिजली से बर्ताव करते वक्त सावधान रहने तथा छेड़छाड़ न करने की सलाह दी है। लोगों को सतर्क एवं जागरूक किया है। पॉवर कंपनी ने कहा है कि उपभोक्ताओं को बिजली कनेक्शन उनकी आवश्यकताओं के लिए प्रदान किया जाता है, इसका उपयोग जंगली जानवरों का शिकार करने अथवा खेतों में फसल सुरक्षा के लिए तार फेंसिंग में करंट लगाना अवैध और खतरनाक है। इससे आमजन को जानमाल का नुकसान उठाना पड़ता है। बिजली के स्विच या प्लग का उपयोग हमेशा रबर की चप्पल पहन कर ही करना चाहिए। ट्रांसफ़ॉर्मर और बिजली की लाइनों से सुरक्षित दूरी बरतना चाहिए। हमेशा वैध बिजली कनेक्शन से बिजली का उपयोग करें।विद्युत दुर्घटनाओं से बचाव के लिए मैदानी स्तर पर उपभोक्ताओं जागरूक किया जा रहा है। साथ जनता से अपील की गई है कि जानकारी के अभाव एवं असावधानी के कारण विद्युत दुर्घटनाएं हो जाती हैं, जिनमें जानमाल का नुकसान हो जाता है, जिसकी भरपाई आजीवन संभव नहीं होती है। अतः विद्युत संबंधी कार्य एवं उसके उपयोग के प्रति सतर्क रहें। खासकर कृषि पंपों को सिंचाई के दौरान ज़मीन गीली होने से करंट लगने का ख़तरा बढ़ जाता है। उपभोक्ताओं के लिए सुरक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण जानकारियां साझा करते हुए बताया गया कि बिजली की लाईनों के नीचे निर्माण कार्य न करें। विद्युत लाईनों, उपकरणों/ट्रांसफार्मर आदि में खराबी आने पर अनधिकृत रूप से सुधार कार्य का प्रयास न करें।

आर.एन.आई.रजि. क्र. CHHHIN/2021/80529, स्वत्वाधिकारी, मुद्रक एवं प्रकाशक- शशांक शर्मा द्वारा मिशन मीडिया प्रा. लि., प्रेस कॉम्प्लेक्स, रजबंधा मैदान, रायपुर (छ.ग.) 492001 से मुद्रित एवं 29/1110, सेवती स्मृति, आजाद चौक, रायपुर (छ.ग.) 492001 से प्रकाशित। संपादक-शशांक शर्मा, मो. 94255-20531.